लाट साब

गांव से सरहद तक

मनीष कुमार 'निनाद'

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Manish Kumar "Ninaad" 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-165-8

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: August 2026

“तुम्हें समर्पित....निनाद”

अनुक्रमणिका

स्वीकरण vii

लेखक की ओर से ix

प्रस्तावना xiii

अध्याय-1: कौन कहता है कि आकाश में सुराख नहीं हो सकता एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो 1

अध्याय-2: अपने सपनों को कभी मारो नहीं, उनको जीने की कोशिश करो 5

अध्याय-3: अपने को सिद्ध करना ही सही जवाब 9

अध्याय-4: अर्जित किया हुआ किसी भी तरह का ज्ञान कभी व्यर्थ नहीं जाता..13

अध्याय-5: काबिल होने के बावजूद सफलता छीननी पड़ती है 17

अध्याय-6: वक्त पर मिला छोटा मौका बड़े लक्ष्य की सीढ़ी बनता है 21

अध्याय-7: जो मिला काफी है, ज्यादा के लिए मेहनत करें 24

अध्याय-8: दुनिया की असली तस्वीर मां-बाप के आंचल से बाहर आकर दिखती है 27

अध्याय-9: मन पक्का कर लो, तो शरीर कुछ भी करने में सक्षम है 30

अध्याय-10: काबिलियत के साथ पहचान होने पर मौका आसानी से मिलता है 33

अध्याय-11: देशसेवा सर्वोपरि है, इसके सामने निजी तरक्की मायने नहीं रखती 36

अध्याय-12: सफलता के लिए सच्चा व्यक्तित्व जरूरी, बनावटी नहीं 39

अध्याय-13: चाहें गलतियाँ हों पर कुछ न कुछ जरूर करें 42

अध्याय-14: जिंदगी में कभी किसी को कम ना आंकें 45

अध्याय-15: काम वह करें, जिस पर सबको नाज़ हो 48

अध्याय-16: आप सपने को नहीं, सपना आपको चुनता है 51

अध्याय-17: असहमति पर प्रश्न करने का साहस जुटाएँ 54

अध्याय-18: कॅरियर में सफलता के लिए प्लानिंग जरूरी 57
अध्याय-19: ऊँचा पद नहीं, सच्ची खुशी है असली सफलता 60
अध्याय-20: मुसीबतों से डरकर उम्मीद न छोड़ें 63
अध्याय-21: बेटा-बेटी दोनों को बराबर समझें, बेटा-बेटी दोनों को बराबर मौका दें 66
अध्याय-22: बच्चों के सामने उचित व्यवहार करें 69
अध्याय-23: अपने अन्दर की काबिलियत को पहचानें युवा 72
अध्याय-24: अपने सपने बच्चों पर ना लादें 75
अध्याय-25: बच्चों को रुचि अनुसार करियर चुनने को प्रोत्साहित करें 78
अध्याय-26: लोगों की नहीं, अपने मन की सुनें 81
अध्याय-27: बुजुर्ग माँ-बाप की अनकही बातों को समझें 84
अध्याय-28: बच्चों की प्रतिभा को पहचानकर निखारें 87
अध्याय-29: बच्चों से उनका बचपन न छीनें 90
अध्याय-30: बच्चों की कमियों को स्वीकार करें मां-बाप 93

स्वीकरण

मैं स्वीकार करता हूँ

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि इस पुस्तक में संकलित सभी कहानियाँ, प्रसंग, विचार और अनुभव मेरे जीवन-यात्रा के दौरान प्राप्त अनुभूतियों, अवलोकनों तथा प्रेरणाओं पर आधारित हैं। जब इन्हें लिखा गया था, तब मेरा उद्देश्य केवल अपने अनुभवों और जीवन से प्राप्त सीखों को शब्दों में अभिव्यक्त करना था; उस समय यह कल्पना भी नहीं की थी कि एक दिन ये लेखन पुस्तक का रूप धारण करेंगे।

पुस्तक में वर्णित कुछ घटनाएँ वास्तविक जीवन से प्रेरित हैं, किन्तु संबंधित व्यक्तियों की निजता एवं सम्मान को ध्यान में रखते हुए अनेक नाम, स्थान तथा पहचान संबंधी विवरण परिवर्तित अथवा काल्पनिक रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। यदि किसी पात्र, घटना या परिस्थिति की समानता किसी वास्तविक व्यक्ति से प्रतीत होती है, तो उसे मात्र संयोग माना जाए।

भारतीय सेना में प्रशिक्षण तथा सेवा से संबंधित प्रसंगों को लिखते समय विशेष सावधानी बरती गई है कि कोई भी गोपनीय, संवेदनशील अथवा ऐसी जानकारी सम्मिलित न हो जो सार्वजनिक रूप से उपलब्ध न हो। केवल उतनी ही जानकारी का उल्लेख किया गया है जितनी किसी प्रसंग की रोचकता, संदर्भ और संदेश को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक थी।

इस पुस्तक में अनेक स्थानों पर विभिन्न कवियों, लेखकों, चिंतकों एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्वों के विचारों, दोहों, पंक्तियों अथवा उद्धरणों से प्रेरणा ली गई है। चूँकि इन सभी स्रोतों से औपचारिक अनुमति प्राप्त करना संभव नहीं था, इसलिए अधिकांश संदर्भों को मूल स्वरूप में प्रस्तुत करने के स्थान पर उनके भाव एवं सार को अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है। जहाँ तक संभव हुआ है, प्रेरणा स्रोत व्यक्तियों के नामों का उल्लेख किया गया है, क्योंकि एक विद्यार्थी और जिज्ञासु पाठक के रूप में उनके विचारों ने मेरे व्यक्तित्व और सोच को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

इसी प्रकार, पुस्तक में प्रयुक्त कुछ चित्र एवं रेखाचित्र विभिन्न उपलब्ध स्रोतों से प्रेरित हैं, जिन्हें पुस्तक की विषयवस्तु और प्रसंगानुसार संशोधित, रूपांतरित अथवा अनुकूलित करने का प्रयास किया गया है। इनका उद्देश्य केवल विषय को अधिक प्रभावी एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत करना है, न कि किसी के बौद्धिक अधिकारों का अतिक्रमण करना।

फिर भी, यदि इस पुस्तक के किसी शब्द, विचार, प्रसंग, चित्र या प्रस्तुति से किसी व्यक्ति, संस्था अथवा अधिकारधारक को कोई आपत्ति हो, तो मैं उसके लिए विनम्रतापूर्वक क्षमाप्रार्थी हूँ तथा आवश्यक सुधार या संशोधन हेतु सदैव तत्पर रहूँगा।

इस पुस्तक का एकमात्र उद्देश्य जीवन के अनुभवों, संघर्षों, मूल्यों और सीखों को साझा करना है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकें और जीवन को अधिक सकारात्मक, सार्थक एवं संवेदनशील दृष्टिकोण से देख सकें।

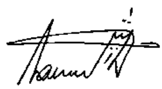

मनीष

लेखक की ओर से

लेखक की ओर से कुछ किताबें लिखी नहीं जातीं, वे जी जाती हैं।

"लाट साहब" ऐसी ही एक पुस्तक है। यह मेरे जीवन के उन अनुभवों, संघर्षों, सीखों और भावनाओं का संग्रह है, जिन्हें मैंने वर्षों तक अपने भीतर संजोकर रखा। इस पुस्तक का प्रत्येक शब्द मेरे दिल के बहुत करीब है, क्योंकि इसकी प्रत्येक कहानी कहीं न कहीं मेरे अपने जीवन की सच्चाइयों से जन्मी है।

इन कहानियों की जड़ें मेरे जीवन के विभिन्न पड़ावों में छिपी हैं—एक उत्सुक कॉलेज छात्र के रूप में, जीवन को समझने की कोशिश करते हुए; एक सैनिक और सेना अधिकारी के रूप में, देश के अलग-अलग क्षेत्रों में सेवा करते हुए; और एक सामान्य इंसान के रूप में, लोगों, परिस्थितियों और समय से लगातार सीखते हुए। भारत के विविध भूभागों, संस्कृतियों और परिस्थितियों में कार्य करते हुए मुझे अनेक ऐसे अनुभव मिले जिन्होंने मुझे भीतर तक प्रभावित किया। कुछ घटनाओं ने जीवन का अर्थ सिखाया, कुछ ने धैर्य का महत्व बताया, और कुछ ने यह समझाया कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आशा का दीपक जलाए रखना कितना आवश्यक है।

इस पुस्तक में संकलित कहानियाँ उन्हीं अनुभवों की प्रतिध्वनि हैं। यद्यपि उन्हें अधिक रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ प्रसंगों को साहित्यिक शैली में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन उनकी आत्मा पूरी तरह वास्तविक है। इन कहानियों में आपको जीवन की सच्चाई, संघर्ष की तपिश, रिश्तों की गर्माहट और सकारात्मक सोच की शक्ति का अनुभव होगा।

इन कहानियों का सफर मेरे घर से शुरू हुआ। अक्सर मैं इन्हें अपने परिवार को सुनाया करता था—कभी डाइनिंग टेबल पर बैठकर, तो कभी किसी यात्रा के दौरान। मेरी पत्नी, श्रीमती वंदना जी, जो एक शिक्षिका हैं, इन अनुभवों को केवल कहानियाँ नहीं मानती थीं। उनका विश्वास था कि इनमें ऐसे जीवन-मूल्य और प्रेरणाएँ छिपी हैं जो अभिभावकों, बच्चों और युवाओं के लिए उपयोगी हो सकती हैं। उन्हीं के विश्वास और प्रोत्साहन ने मुझे इन अनुभवों को शब्दों में ढालने का साहस दिया।

पहली बार इन कहानियों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मुझे स्थानीय समाचार पत्र 'दिव्य हिमाचल' के माध्यम से मिला। आदरणीय संपादक श्री अनिल सोनी जी ने इन लेखों और कहानियों को प्रमुखता से प्रकाशित किया। पाठकों का स्नेह और उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएँ मेरे लिए अप्रत्याशित थीं। अनेक अभिभावकों और पाठकों के फोन आए, जिन्होंने बताया कि इन कहानियों ने उन्हें सोचने, समझने और अपने जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा दी। यही वह क्षण था जब मुझे महसूस हुआ कि ये अनुभव केवल मेरे नहीं रहे, बल्कि समाज की साझा पूँजी बन सकते हैं।

इसके बाद मेरी पत्नी ने सुझाव दिया कि इन कहानियों को पुस्तक का रूप दिया जाए, ताकि इनका संदेश अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके। इस सपने को साकार करने में मेरे दोनों पुत्र—अकुल और रुद्र—ने हर कदम पर मेरा साथ दिया। कभी तकनीकी सहायता देकर, कभी सुझाव देकर और कभी केवल अपना उत्साह देकर उन्होंने इस पुस्तक को आकार देने में अमूल्य योगदान दिया। यह पुस्तक जितनी मेरी है, उतनी ही मेरे परिवार के प्रेम, विश्वास और सहयोग की भी है।

मेरे लिए “लाट साहब” केवल कहानियों का संग्रह नहीं है। यह उन अनगिनत लोगों को नमन है, जिनसे मुझे जीवन में कुछ न कुछ सीखने को मिला। यह उन अनुभवों की विरासत है जिन्होंने मुझे गढ़ा, संवारा और जीवन को देखने का नजरिया दिया। यदि इस पुस्तक की कोई एक कहानी भी किसी युवा को अपने सपनों के प्रति दृढ़ रहने की प्रेरणा दे, किसी अभिभावक को अपने बच्चों को बेहतर समझने में सहायता करे, या किसी पाठक के जीवन में आशा और सकारात्मकता की एक नई किरण जगा दे, तो मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझूँगा।

अंततः, यह पुस्तक मैं अपने परिवार, अपने गुरुओं, अपने साथियों और उन सभी लोगों को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेरे जीवन की इस यात्रा को अर्थपूर्ण बनाया।

आशा है कि आप इन कहानियों में केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन की धड़कन महसूस करेंगे।

सप्रेम,

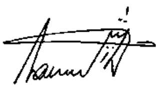

मनीष

प्रस्तावना

यह पुस्तक एक साधारण ग्रामीण बालक की असाधारण जीवन-यात्रा का संवेदनशील, प्रेरणादायक और आत्मानुभूतियों से परिपूर्ण आख्यान है। यह केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि संघर्ष, संकल्प, मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और आत्मविश्वास की उस यात्रा का वर्णन है, जो जीवन के अनेक गहरे सत्य उद्‌घाटित करती है।

गाँव की सादगी भरी पगडंडियों, खेतों की हरियाली, बचपन की निश्छल शरारतों, माँ की ममता और मित्रों की संगत के बीच एक शब्द उसके कानों में बार-बार पड़ता है—'लाट साब'। कभी यह शब्द व्यंग्य में कहा जाता, कभी स्नेह में और कभी किसी प्रभावशाली व्यक्ति की तुलना के रूप में। बालमन पर इस शब्द की ऐसी छाप पड़ती है कि धीरे-धीरे यह एक स्वप्न, एक लक्ष्य और एक प्रेरणा का रूप धारण कर लेता है। उसके मन में 'लाट साब' एक ऐसी शख्सियत बन जाती है, जो सबसे अधिक सम्मानित, प्रभावशाली और आदरणीय है।

समय के साथ शिक्षा और अनुभव का दायरा बढ़ता है। उच्च शिक्षा के दौरान उसे ज्ञात होता है कि अंग्रेजी शासनकाल में 'लाट साहब' वह अधिकारी होता था, जिसके पास अत्यंत व्यापक अधिकार और प्रभाव होता था। यही जानकारी उसके भीतर सेना में अधिकारी बनने का दृढ़ संकल्प उत्पन्न करती है। वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करता है और जीवन की कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ता है।

किन्तु जीवन की वास्तविक शिक्षा केवल पुस्तकों, पदों या उपलब्धियों से नहीं मिलती। एक कॉलेज छात्र, एक सैनिक और बाद में एक सेना अधिकारी के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों तथा विविध परिस्थितियों में सेवा करते हुए उसे जीवन को निकट से देखने और समझने का अवसर मिलता है। लोगों के संघर्ष, उनकी पीड़ाएँ, उनकी आशाएँ और मानवीय संबंधों की गरिमा उसे यह अनुभव कराती है कि सच्ची महानता अधिकारों में नहीं, बल्कि कर्तव्यों के निर्वहन में निहित है।

धीरे-धीरे उसके विचारों में परिवर्तन आता है और वह समझता है कि वास्तविक 'लाट साब' वह नहीं, जो केवल आदेश देने का अधिकार रखता हो, बल्कि वह है जो अपने आचरण से दूसरों को प्रेरित करे, जरूरतमंदों का संबल बने, कठिन समय में मार्गदर्शन प्रदान करे और समाज के लिए सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बने। सच्चा सम्मान पद, शक्ति या प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि व्यक्तित्व, चरित्र, सेवा-भाव और मानवीय मूल्यों से अर्जित होता है।

इस पुस्तक में वर्णित अधिकांश घटनाएँ लेखक के जीवन के वास्तविक अनुभवों पर आधारित हैं, जो एक कॉलेज छात्र, एक सैनिक तथा एक सेना अधिकारी के रूप में देश के विभिन्न स्थानों और परिस्थितियों में सेवा के दौरान प्राप्त हुए। इन अनुभवों ने न केवल लेखक के व्यक्तित्व को आकार दिया, बल्कि जीवन के प्रति उसकी सोच और दृष्टिकोण को भी गहराई प्रदान की। पुस्तक में वर्णित प्रत्येक प्रसंग पाठकों को कहीं न कहीं अपने जीवन से जुड़ा हुआ प्रतीत होगा।

यह कथा अनेक रोचक प्रसंगों, जीवन्त अनुभवों, प्रेरक घटनाओं और भावनात्मक क्षणों से समृद्ध है। प्रत्येक अध्याय पाठक को न केवल मनोरंजन प्रदान करता है, बल्कि जीवन के किसी न किसी महत्वपूर्ण पक्ष पर विचार करने के लिए भी प्रेरित करता है। यह पुस्तक इस विश्वास को दृढ़ करती है कि स्पष्ट लक्ष्य, अटूट आत्मविश्वास, निरंतर परिश्रम और सकारात्मक दृष्टिकोण के बल पर कोई भी व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठकर सफलता की नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकता है।

'लाट साब' केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं है; यह उन असंख्य सपनों, संघर्षों और संभावनाओं की कहानी है जो भारत के गाँवों, कस्बों और साधारण परिवारों में जन्म लेते हैं। यह पुस्तक पाठकों को यह संदेश देती है कि जीवन में वास्तविक ऊँचाई पद, शक्ति या अधिकार से नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व, चरित्र, कर्म और समाज के प्रति योगदान से प्राप्त होती है।

यदि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद कोई पाठक अपने सपनों पर विश्वास करना सीखे, कठिनाइयों से संघर्ष करने का साहस प्राप्त करे और जीवन को अधिक सकारात्मक दृष्टि से देखने लगे, तो लेखक का प्रयास सार्थक होगा।

अध्याय-1

कौन कहता है कि आकाश में सुराख नहीं हो सकता एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो

ये शब्द मेरी जिंदगी में एक परिवर्तन लेकर आए, दोस्तों के साथ हुल्लड़ मस्ती, पापा की गालियां, मां की पुचकार और बहनों के प्यार के साथ जब मैं 12वीं पास की तो गांव का हर आदमी मेरा कैरियर काउंसलर बन चुका था। घर में आने वाला हर इंसान अपने ज्ञान मुताबिक "तो क्या स्कूल से अकेला ही पास हुआ है, अच्छा तो वह भी साइंस के साथ, इसका मतलब पढ़ने में तो

अच्छा है। इसको शहर के किसी अच्छे कॉलेज में पढ़ाओ। पर मेरे दोस्त किसी वजह से पास नहीं हो पाए थे,चाहते थे कि मैं वहीं किसी प्राइवेट कॉलेज से बीए करना शुरू कर दूं या फिर सारे दोस्त कहीं दसवीं के आधार पर कोई आईटीआई या पॉलिटेक्निक का डिप्लोमा या जेबीटी में दाखिला लेने की कोशिश करें और आगे की पढ़ाई इकट्ठे करें। पर पापा को लगा कि अगर सारे गांव वाले और रिश्तेदार कह रहे हैं और लड़के ने साइंस के साथ 12वीं पास कर ली है तो क्यों ना उसे शहर के किसी अच्छे कॉलेज से बीएससी करवा दी जाए। अच्छे लड़कों के साथ रहेगा,अच्छे कॉलेज में पढ़ेगा तो अच्छा सीखेगा और जिंदगी में कुछ अच्छा कर पाएगा। शहर के कॉलेज जाने से मैं ज्यादा खुश नहीं था क्योंकि मेरा कोई भी दोस्त मेरे साथ नहीं था पर गांव का एक चचेरा भाई, जो उसी कॉलेज में एम.ए. की पढ़ाई कर रहा था, उसके साथ उसके कमरे में रहना शुरू किया। वह बड़े भाई से ज्यादा दोस्त बनकर मेरे साथ रहने लगे। दिन तो कॉलेज में नए दोस्तों और नई किताबों में निकल जाता था पर रात को मां की याद, बहनों से लड़ाई, दोस्तों का साथ, गांव के कुएं पर हुल्लड़-मस्ती करना, यह सब अंदर से सताता था और ना जाने कब आंखें नम होते-होते गहरी नींद में बंद हो जाती थी। इसी तरह एक रात गांव की बातें करते-करते मेरे भाई ने मेरे को दुष्यंत जी की कविता संग्रह "साये में धूप" मेरे हाथ में दी और उसको पढ़ने को कहा। जैसे ही मैंने उसका पहला पन्ना खोला तो पहले पन्ने पर जो शब्द मिले मैंने देखा कि भाई ने एक कागज पर लिखकर दीवार से भी चिपका रखे हैं। ना जाने सुबह-शाम, आते-जाते, जब भी हम कहीं किसी मुश्किल में अटक जाते तो हमारा ये ही तकिया-कलाम बन गया, कि-

कौन कहता है कि आकाश में सुराख नहीं हो सकता।

एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो।

माननीय दुष्यंत जी के यह शब्द इतनी बड़ी हकीकत को बयान करते हैं जिससे बहुत सारे लोग अपरिचित हैं। यह शब्द सार्थक होते हैं जब हम देखते हैं कि एक कारपेंटर का लड़का, जिस का बचपन अपने परिवार के साथ एक झुग्गी में दूसरों के बाग-बगीचों की निगरानी और पहरेदारी करते गुजरा हो, जिसने उधार की किताबों से पढ़ाई की हो, वह अब्राहम लिंकन अपनी मेहनत और दृढ़ निश्चय के चलते बाद में दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका का राष्ट्रपति बना।

इन शब्दों का अर्थ समझ आता है जब हम देखते हैं कि एक गरीब परिवार में जन्म लेने वाले शख्स, जिसको भरपेट खाना खिलाने के लिए उसकी मां भूखी रहती थी, जो बचपन में सुबह उठकर अखबार बेचते थे, सरकारी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर, बिना किसी की सहायता के और मार्गदर्शन के सिर्फ बड़े सपने और पक्के इरादों के दम पर वह हमारे देश की सबसे बड़े वैज्ञानिक बने और मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध हुए, डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम जी भारत के उच्चतम पद राष्ट्रपति तक पहुंचे।

दुष्यंत जी के इन शब्दों पर विश्वास करने को तब दिल करता है जब हम पाते हैं एक शख्स, जिसको उसकी आवाज भारी होने के कारण एक रेडियो अनाउंसर की नौकरी से मना कर दिया गया था या रिजेक्ट कर दिया गया था, वो इंसान अपने पक्के इरादों और अथक प्रयासों से उसी आवाज के दम पर दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में अपना नाम शुमार करवाने में सफल हुए श्री अमिताभ बच्चन जी।

वह बच्चा जो अपनी आरंभिक शिक्षा के लिए अपनी धोती सिर पर लपेट कर नदी तैरकर विद्यालय पहुंचता था, वह अपने बड़े सपनों और उनको प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत कर एक दिन हमारे देश के प्रधानमंत्री बने श्री लाल बहादुर शास्त्री जी। दुबले पतले और छोटी कद काठी वाले बड़ा हौसला रखने वाले एक ऐसी शख्सियत जिसने 1965 में पाकिस्तान की सेना को अपने नेतृत्व में और बुलंद इरादों के चलते दांतो चने चबा दिए।

उदाहरण कम नहीं हैं मार्टिन लूथर किंग, नेलसन मंडेला, महात्मा गांधी, बाबासाहेब आंबेडकर ऐसी शख्सियत हैं, अगर आप इतिहास में देखो तो इन्होंने बड़े सपने देखें और एक समृद्ध समाज में चल रही गलत सोच के विरुद्ध खड़े हुए, संघर्ष किया और अपने पक्के इरादों और अडिग हौसलों से सफलता हासिल की।

श्रीमती इंदिरा गांधी, इंदिरा नूई, किरण बेदी, प्रियंका चोपड़ा, कल्पना चावला, मैरी कॉम, यह सब वह शख्सियत हैं जिन्होंने एक वर्ग की सोच को टक्कर देकर अपने पक्के इरादों से और कड़ी मेहनत से यह प्रमाणित किया कि जब जो ठान लिया जाता है और उसको प्राप्त करने में पूरी मेहनत की जाती है तो दुनिया में वर्षों से चली आ रही मान्यताएं और प्रथाएं भी बदल जाते हैं।

मस्जिद के कमरे में बचपन बीता कर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में नाम कमाने वाले पठान भाई हों या पंप ऑपरेटर के बेटे एमएस धोनी, पुरुष प्रधान मान्यता रखने वाले क्षेत्र की फोगाट बहनों को लीजिए या हिमा दास, दुती चंद, सुशील कुमार, विजेंद्र सिंह, यह सब लोग आज के दिन में अंतरराष्ट्रीय चेहरे हैं और किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। वर्तमान पीढ़ी के वह नायक हैं जिन्होंने प्रमाणित किया है कि बड़ा मुकाम हासिल करने के लिए जो चीज जरूरी है वह है अपने आप में विश्वास रखना, बड़े सपने देखना और उनको पाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से मेहनत करना।

इन सब के बारे में सुनकर या पढ़ कर ऐसा लगता है, अगर इरादा आकाश में सुराख करने का बना लो या इरादा जिंदगी में कुछ पाने का बना लो और उसके लिए सही दिशा में मेहनत करो तो गरीबी-अमीरी, जात-पात, रंग, धर्म, लिंग, क्षेत्र, खानदान, सुविधाएं महत्वपूर्ण नहीं हैं, अगर कुछ महत्वपूर्ण है तो वह है पक्का इरादा होना, अगर कुछ महत्वपूर्ण है तो वह है बड़े सपने देखना, महत्वपूर्ण है सपने को पूरा करने के लिए मेहनत करना और सही दिशा में, सोच विचार कर, योजनाबद्ध तरीके से लक्ष्य तक पहुंचने का अथक और अडिग परिश्रम करना।

अध्याय-2

अपने सपनों को कभी मारो नहीं, उनको जीने की कोशिश करो

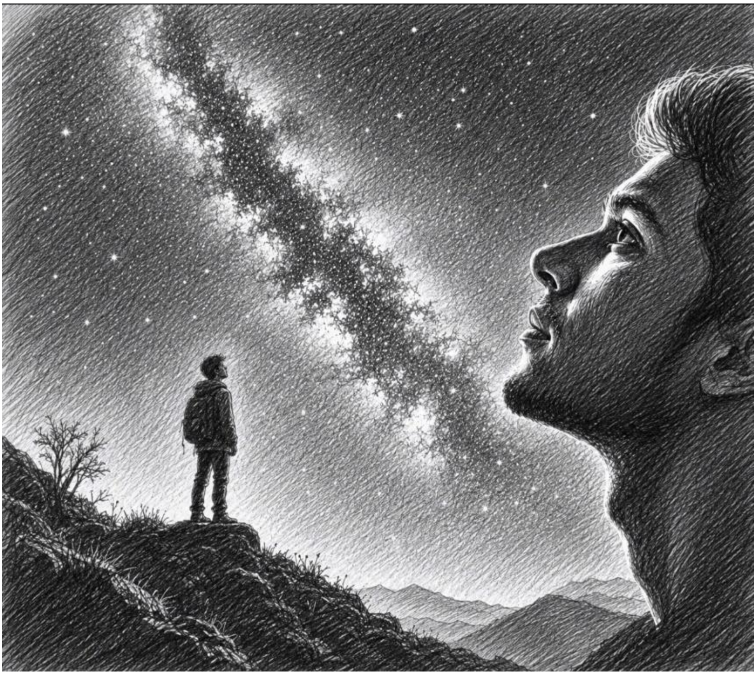

गांव के स्कूल में जब भी हम खेलने की बात करते थे, वहां पर हॉकी, कबड्डी, खो-खो,बैडमिंटन आदि खेल खेले जाते थे और उन्हीं की ही जिला और राज्य स्तर की प्रतिस्प्रदाएं होती थी। जब हम शहर के कॉलेज में पहुंचे तो कॉलेज के गेट के पास एक बास्केटबॉल कोर्ट बना था। हालांकि इस खेल को कभी-कभी दूरदर्शन पर खेलकूद वाले प्रोग्राम में हमने देखा था पर सच में जानो तो हकीकत में पहली बार ही इसको देखा। मैंने देखा कॉलेज के कुछ लड़के और लड़कियां सुबह और शाम पूरे बास्केटबॉल कोर्ट में गेंद को लेकर ड्रिबल

करते रहते और शूटिंग की प्रैक्टिस करते रहते, जब कभी भी बास्केटबॉल मैच होता, जो कि दोस्ताना तौर पर खेला जाता था, तो पूरा कॉलेज उसको देखने के लिए इकट्ठा हो जाता और बड़े जोर शोर के साथ अपने-अपने खिलाड़ियों की हौसलाअफजाई तालियां और गाने गाकर करते। मैंने एक और चीज महसूस की कि मेरे जैसा गांव से आया लड़का किसी तरह अपने घर, गांव, दोस्तों की याद को भूलकर रात-दिन केमिस्ट्री के रिएक्शन याद करता, गणित की अलग-अलग तरह के फॉर्मूले याद करता और भौतिक विज्ञान में अपनी रातें तक खपाता रहता। प्रोफेसर के द्वारा दिए गए होमवर्क को पूरी तरह करता और कक्षा में हर सवाल का जवाब सबसे पहले देता पर फिर भी सारे स्टूडेंट्स उसको पढ़ाकू, दब्बू, पेन्डू, किताबी कीड़ा कहकर ही पुकारते और सारा दिन बास्केटबॉल ग्राउंड में मस्ती करने वाले लड़के, जब भी कोई क्लास लगवाने आते तो हर प्रोफेसर उनसे सहानुभूति दिखाते, सारे स्टूडेंट्स उनको इज्जत की नजरों से देखते और बहुत सारी लड़कियां अपने अच्छे बनाए हुए नोट्स भी उनको देने को तैयार हो जाती। इन सब चीजों से मेरे मन में आया कि मैं क्यों ना बास्केटबॉल खेलना शुरू करूँ और अगले दिन सुबह ही हम भी पूरे जोश-खरोश में बास्केटबॉल कोर्ट में पहुंच गए। वहां पर आलम कुछ और ही निकला, हमें ना बॉल पकड़ने आती थी ना ड्रिबल करने आती, ना ही शूटिंग करने आती। कुछ देर तो बाकी प्लेयर्स ने हमें देखा पर देखते ही देखते कुछ ही क्षणों में हम हँसी का पात्र बन गए और अपना सा मुँह बनाकर वापस हो लिए। मैं दुखी होकर अपने कमरे में पहुंचा और रात को अपने चचेरे भाई को बताया कि सपनों को जीना ठीक है पर अगर आपको उसके बारे में कुछ भी पता नहीं है तो आप किसी का कैसे मुकाबला करोगे और किसी को कैसे हराओगे और मैं दुखी मन के साथ सो गया। जब मैं सुबह उठा तो मेरे बिस्तर के सामने दीवार पर कुछ ऐसे लिखा था

"तुम कभी भी जीत नहीं पाओगे, अगर शुरुआत नहीं करोगे।"

अगली सुबह कॉलेज में जाते ही मैंने खेल परिसर से बास्केटबॉल अपने नाम पर लिया और सुबह शाम दो-दो घंटे बास्केटबॉल कोर्ट में प्रैक्टिस करना शुरू किया। प्रथम वर्ष के अंत तक मैं बास्केटबॉल का खिलाड़ी बन चुका था और मेरी दिलचस्पी देखकर टीम के दूसरे खिलाड़ी भी मुझे पसंद करने लगे थे और तृतीय वर्ष मैं कॉलेज टीम का कैप्टन बना तथा हमने यूनिवर्सिटी

लेवल की ट्रॉफी भी जीती। इससे मेरे मन में एक विश्वास आया कि अगर हम चाहें तो कुछ भी कर सकते हैं, हमारे मन का विश्वास पक्का होना चाहिए। मेरी इस सफलता को हम अंग्रेजी भाषा की 5D के साथ समझ सकते हैं- पहली डी का मतलब "डिजायर" यानी सपना। हम सब सपने देखते हैं कि हम ये करेंगे या वो करेंगे जिससे कि हमें दुनिया में एक नाम मिले और लोग पसंद करें। वह आप एक जिलाधीश, एक पुलिस अफसर, एक फौजी अफसर, नेता, अभिनेता कुछ भी बनने के लिए सपना देख सकते हैं। उसके बाद उन सारे सपनों में से आपको दूसरी डी, जिसका मतलब है "डिसाइड" यानी फैसला, आपको यह फैसला करना है कि आप जिंदगी में क्या हासिल करना चाहते हैं। आप अपनी डिजायर में से किसी एक पर अपना पक्का मन बनाओगे और उस पर फैसला लोगे। उसके बाद तीसरा डी, जिसका मतलब है "डिटेल नॉलेज" यानी पूरा ज्ञान, जो आपने फैसला लिया है, वो आपका सपना, आपका लक्ष्य कैसे प्राप्त होगा, आपको उसके बारे में पूरा ज्ञान होना चाहिए। कौन सी किताबें पढ़नी है, किस तरह से मेहनत करनी है, कहां पर कोचिंग लेनी है, कैसे एग्जाम होगा, उसको कैसे फेस करना है, कब उसके फॉर्म भरे जाएंगे आदि-इत्यादि। यह सब पता होने के बाद आपको चौथी डी पर काम करना है। इसका मतलब है "डेडीकेशन" यानी तन, मन, धन से मेहनत। जब आपने अपने सपनों में से किसी एक पर फैसला लिया, उसके बारे में पूरा ज्ञान लिया, अब 24 घंटे, 7 दिन आपको उसको हासिल करने के लिए मेहनत करनी पड़ेगी। उसके बाद आता है पांचवा डी, इसका मतलब है "डिटरमिनेशन" यानी यह जरूरी नहीं कि आपको सफलता पहली बार ही मिल जाए, ये एक लंबा प्रोसेस है और इसके लिए आपको बार-बार पूरी तरह समर्पित होकर मेहनत करनी पड़ेगी और वह दिन दूर नहीं होगा जब आपको अपना लक्ष्य और फैसला प्राप्त होगा। मैं देखता था कि कॉलेज में प्रोफेसर, स्टूडेंट्स और सारे लोग किस को पसंद करते हैं, क्या वह पढ़ने वाले को पसंद करते हैं, गाने वाले को पसंद करते हैं या फिर अच्छे खिलाड़ी को पसंद करते हैं। उस वक्त मैंने डिसाइड किया कि मेरे को लोगों की पसंद बनने के लिए अच्छा बास्केटबॉल खिलाड़ी बनना है। वह खिलाड़ी बनने के लिए मेरे को बास्केटबॉल चाहिए था, प्रैक्टिस करने के लिए कोर्ट चाहिए था, समय चाहिए था, मैंने उस सबका ज्ञान प्राप्त किया, उसके बाद मैंने चौथी डी जो कि डेडीकेशन था, पूरी तरह से उसको सीखने के लिए मेहनत की और अपने 3 साल के डटरमीनेशन और सच्ची लगन के बाद मैं कॉलेज की टीम

का कैप्टन बना और ट्रॉफी भी जीती। उसी तरह अगर जिंदगी में आपको कुछ हासिल करना है तो आपको कुछ चीजें याद रखनी पड़ेगी।

सबसे पहले कि अपने सपनों को मरने मत दो, इनको जीना सीखो

दूसरी बात कि आप तब जीतोगे जब आप शुरुआत करोगे।

उसके बाद काम आता है 5D का। बहुत सारे सपनों में से एक सपने को हासिल करने का फैसला करो, उसके बारे में कैसे हासिल होगा, संपूर्ण ज्ञान हासिल करो उसके बाद पूरी शिद्दत के साथ उसको प्राप्त करने के लिए मेहनत करो और अगर आप पहली बारी, दूसरी बारी में सफल नहीं पाते हो तो याद रखो ये शब्द "कि करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान"

तो आप अगर मेहनत करते रहोगे और अपने सपनों को प्राप्त करने के लिए डिटरमिन्ड रहोगे तो एक दिन आपको सफलता जरूर मिलेगी।

अध्याय-3

अपने को सिद्ध करना ही सही जवाब

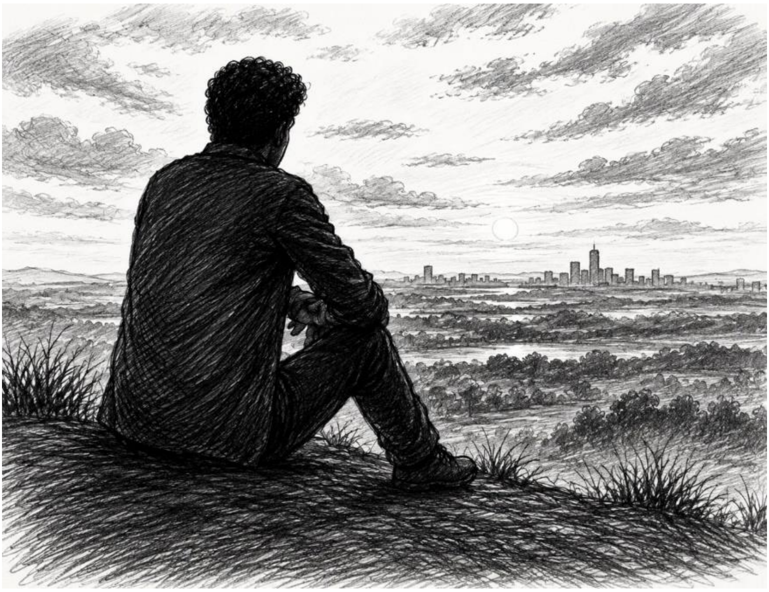

पतवारों के सहारे, तो दुनिया पाती है किनारे। बाजु-ए-दम से फक्त "सिकंदर" दरिया पार करते हैं!

शहर के कॉलेज में दाखिला होने पर गाँव के सबसे मशहूर दर्जी द्वारा सिले हुए 2 जोड़ी पैंट और शर्ट, दिल्ली वाली बुआ, जो खास करके मेरे कॉलेज जाने के लिए करोल बाग से बिना कॉलर वाली दो टीशर्ट लाई थी तथा गांव की ही दुकान से सेमी प्लास्टिक और रबर के नए जूतों का जोड़ा खरीदकर मैं तैयारी कर चुका था। जब मैं बन-ठन के पहले दिन कॉलेज पहुंचा तो मेरा आत्मविश्वास सातवें आसमान पर था। आखिर अपने स्कूल का मैं अकेला ऐसा छात्र था जो साइंस के साथ पास हुआ था। पर जैसे-जैसे कॉलेज में समय बीतता गया, साथ वाले स्टूडेंट्स का रहन-सहन, वेशभूषा, बातचीत का

तरीका और खासकर अंग्रेजी और हिंदी भाषा पर पकड़ मेरे आत्मविश्वास को कमजोर करती गई। मैं जिस स्कूल में पढ़ा था, उसमें ज्यादातर डोगरी भाषा में बात की जाती थी, हिंदी सिर्फ किताब पढ़ने के लिए या फिर किसी प्रश्न के उत्तर के लिए ही प्रयुक्त की जाती थी। अंग्रेजी भाषा में बातचीत करना छात्रों के लिए ही नहीं अपितु अध्यापकों के लिए भी दूर की कौड़ी हुआ करती थी, पर इन सब चीजों में ध्यान ना देते हुए मैं बार-बार अपने आत्मविश्वास को मजबूत करता था और पूरी शिद्दत के साथ दिए हुए हर काम को पूरा करने की कोशिश करता था। शहर के अच्छे स्कूलों, कॉन्वेंट और अंग्रेजी माध्यम से पढ़कर आए कुछ लड़के और लड़कियां मेरे जैसे गांव से आए पेन्डू छात्रों का अक्सर मजाक उड़ाया करते थे। हमारे साथ मेडिकल की पढ़ाई करने वाली एक छात्रा, जो देखने में किसी परी से कम नहीं थी हमेशा अच्छे और महंगे परिधानों के साथ सज-धज कर कार में कॉलेज आया करती थीं। क्लास का हर लड़का उसका दीवाना था और उससे बात करना चाहता था। मैं भी शायद उस बाल्य काल से यौवन की तरफ रखे जाने वाले कदमों में उस लड़की की तरफ मन ही मन आकर्षित था। एक दिन मैं उस लड़की के पीछे उसकी क्लास में रसायन विज्ञान, जो हमारा कॉमन सब्जेक्ट था का पीरियड लगवाने के लिए पहुंच गया और उसी के ही पिछले वाले डेस्क पर बैठ कर उसको इंप्रेस करने के लिए उल्टे-सीधे शब्द और मुहावरे बोलने लगा। जैसे क्लास शुरू हुई तो प्रोफेसर ने जो पढ़ाने से ज्यादा लड़कों और लड़कियों की बेइज्जती करने को अपना पहला कर्तव्य समझता था, उसने मेरे को बुलाया और पिछली क्लास में पढ़ाए हुए कुछ प्रश्न पूछे। मैंने उसको बताया कि "मैं नॉन मेडिकल की क्लास से हूं और यह हमारा कॉमन सब्जेक्ट है। हमारे प्रोफेसर के आज ना आने की वजह से मैं पढ़ाई करने के लिए आपकी क्लास लगवाने आया हूं"। उस प्रोफेसर ने मेरे से बहुत सारे प्रश्न करना शुरू कर दिये जैसे कि मैंने उसकी क्लास में जाकर कोई बहुत बड़ा जुर्म कर दिया हो। उसने मेरी बहुत बेइज्जती की और सारी क्लास के सामने कहा कि मैं जानता हूं तुम लड़के गांव से जब शहर आते हो तो यहां पर पढ़ने के बजाय लड़कियों से शरारत करते हो। तुम यहां पढ़ने नहीं बल्कि गुंडागर्दी और मस्ती करने आते हो। यहीं पर आग में घी डालते हुए उस लड़की ने भी कहा "सर ये लड़का पीछे बैठकर मेरे से शरारत कर रहा था। बस फिर क्या था, प्रोफेसर ने मेरे को खूब खरी-खोटी सुनाई, बोर्ड साफ करवाया और फिर क्लास से बाहर निकाल दिया। इतनी सारी बेइज्जती के बाद मैं शाम

को कमरे में पहुंचा और यह सब भाई को बताया। मैंने बताया कि किस तरह से गांव के होने के कारण और अंग्रेजी स्कूल में ना पढ़े होने के कारण आज मेरे को प्रोफेसर और स्टूडेंट्स के सामने बेइज्जती सहन करनी पड़ी। मेरे को रसायन विज्ञान के सभी प्रश्नों के जवाब आते थे पर अच्छी तरह से अंग्रेजी ना बोल पाने के कारण मैं आज हँसी का पात्र बन गया। दुखी मन से मैं अपने आप को कुचोटते हुए सो गया। जब मैं सुबह उठा तो दीवार पर एक कागज चिपका था और उस पर लिखा था

"आप जैसे हो उस हकीकत को कबूल करो बजाय इसके कि काश मैं ऐसा होता"!

मैंने भाई को कहा यह सब तो मैं कर लूंगा पर मैं उस लड़की को और प्रोफेसर को सारी क्लास के सामने बताना चाहता हूं कि मैं उनसे कम नहीं हूं। इस पर भाई ने कहा कि जब कोई आपके स्वाभिमान और योग्यता पर संदेह या प्रश्न करे तो उसका जवाब शब्दों से नहीं बल्कि अपने आप को सिद्ध करके दिया जाता है। जब मैंने कहा कि मैं अपनी कमियों को दूर करने के लिए किसकी मदद लूं, तो भाई ने कहा- किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए आपको खुद मेहनत करनी पड़ती है, आपका अपने से बड़ा मददगार इस दुनिया में और कोई नहीं है। याद रखना "पतवारों के सहारे, तो हर कोई किनारे पाता है पर अपने बाजुओं के दम से दरिया पार करने वालों को दुनिया मानती है"!

मैंने भी यह बात गांठ बांध ली और अपना सारा वक्त पढ़ाई की तरफ लगाना शुरू कर दिया। सुबह-शाम, उठते-बैठते, हर बात अंग्रेजी भाषा में करनी शुरू कर दी, कमरे के पोस्टर, किताब, पेड़, पत्थर मैं हर वस्तु से अंग्रेजी में बात करने लगा, और अपने सारे सब्जेक्ट को रात-दिन मेहनत कर समझने लगा। उसका परिणाम यह निकला कि मैं प्रथम वर्ष में अपने कॉलेज में मेडिकल और नॉन मेडिकल दोनों में प्रथम आया। उस दिन मेरा आत्मविश्वास फिर से सातवें आसमान पर था। मेरे को बधाई देने वालों में वो प्रोफेसर और लड़की भी थे, जिन्होंने कुछ दिन पहले मेरे आत्मसम्मान पर चोट पहुंचाने की कोशिश की थी। आज जब मैं उनकी आंखों में आंखें डाल कर उनकी बधाई का धन्यवाद कर रहा था तो मेरे को महसूस हो रहा था कि शायद मैंने उनको उस बेइज्जती का जवाब दे दिया है और उनकी आंखें भी मानो अपने उस कृत्य पर शर्मिंदा थीं और माफी चाहती थीं। इससे

पता चलता है कि आप क्या हो, कहां से आए हो, किस बैकग्राउंड से हो, इसको कबूल करो। हर व्यक्ति में एक गुण और काबिलियत होती है। हमें अपनी सच्ची लगन और मेहनत से उसको प्रमाणित करना होता है। कभी भी अच्छे कपड़े और अच्छी भाषा में बात करने वालों को देखकर अपने आप को नीचा नहीं समझना चाहिए। भाषा विचारों को आदान प्रदान करने का सिर्फ एक माध्यम है न कि किसी की काबिलियत या ज्ञान पैमाना। हमेशा याद रखो कि आप जैसे हो, उस हकीकत को कुबूल करो बजाय इसके कि काश मैं ऐसा होता। दूसरा अगर कोई आपके स्वाभिमान और योग्यता पर संदेह या प्रश्न करता है तो उसका जवाब शब्दों से नहीं बल्कि अपने आप को सिद्ध करके दो। सबसे महत्वपूर्ण आपका, खुद से बड़ा मददगार इस दुनिया में और कोई नहीं है।

अध्याय-4

अर्जित किया हुआ किसी भी तरह का ज्ञान कभी व्यर्थ नहीं जाता

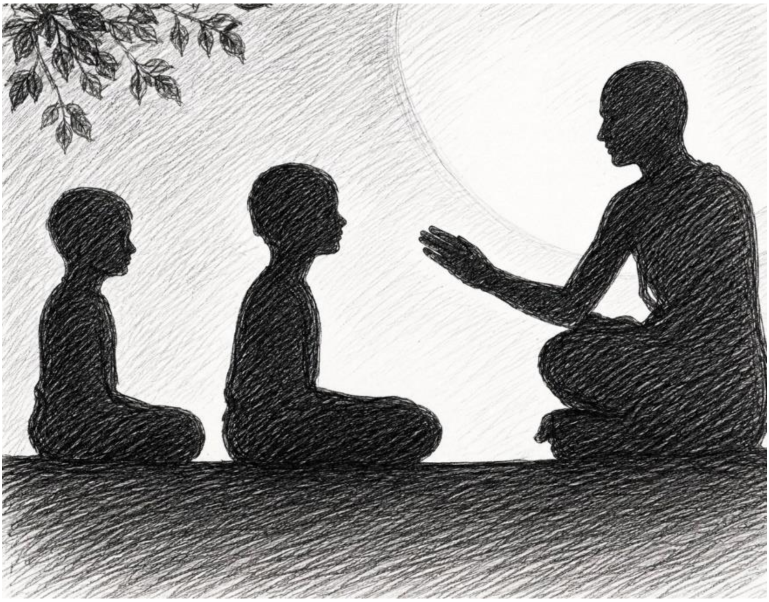

"ज्ञान वो सच्चा दोस्त है, जो जरुरत में हमेशा आपका साथ देगा।"

मेरे को शहर के कॉलेज में जाते हुए 7-8 महीने हो गए थे, कॉलेज में पढ़ाई-लिखाई, खेलकूद, नए दोस्तों और नई किताबों के साथ अभी मन लग गया था। घर, गांव और दोस्त अभी कम याद आने लगे थे। कॉलेज में समय समय पर अलग-अलग तरह की प्रतिस्पर्धायें हुआ करती थीं, कभी खेलकूद, कभी चित्रकारी और कभी संगीत आदि। मैं जबकि थोड़ा बहुत सब में रुचि रखता था पर कॉलेज के दूसरे स्टूडेंट्स के बात-व्यवहार का तरीका और विभिन्न क्षेत्रों में उनकी पकड़ देखकर मैं अपनी रुचि को अपने तक ही सीमित रखता

था, पर जैसे ही कोई प्रतियोगिता खत्म होती थी विजेता प्रतियोगी लड़के या लड़कियां को नायक की तरह सम्मान दिया जाता था। उस वक्त दिल करता था कि क्यों ना मैं भी उनमें से एक बनूं। एक दिन कॉलेज के नोटिस बोर्ड पर लिखा गया कि अगली प्रतियोगिता चित्रकारी की होगी। इच्छुक स्टूडेंट्स अपना नाम कॉलेज के ऑफिस में लिखवा सकते हैं । खैर मेरी चित्रकारी में कोई विशेष रूचि नहीं थी पर मैंने सोचा कि क्यों ना एक बार कोशिश की जाए और मैंने भी ऑफिस में अपना नाम दर्ज करवा दिया। वहां बैठे प्रोफेसर ने मुझसे चित्रकारी के बारे में कुछ सवाल पूछे और मेरी जानकारी देख, मेरे को प्रतियोगिता में हिस्सा न लेने की सलाह दी। मेरे को उसकी ये बात बुरी लगी और मैंने भी पेंटिंग सीखने की ज़िद पकड़ ली। मैं अगली सुबह पेंटिंग का सामान लाकर, सुबह शाम पेंटिंग बनाने की कोशिश करने लगा। मैंने पेंसिल स्कैच भी ट्राई किया। हालांकि मैंने कुछ आड़ी-टेढ़ी लाइनें मारना शुरू कर दी थीं, पर पूरा समय चित्रकारी में लगाने से मेरी बास्केटबॉल की प्रैक्टिस और कॉलेज की पढ़ाई प्रभावित होने लगी। मैंने ये सब भाई से बताया तो उन्होंने कहा कि "सफलता पाने के लिए एक जिद, एक जुनून जरूरी है पर इससे भी ज्यादा जरूरी है उसमें आपकी रुचि होना, आप अपनी जिद और जुनून से कुछ हद तक एक लक्ष्य को हासिल कर सकते हो पर अगर उसमें आपकी रुचि नहीं है तो आप इसका आनंद नहीं उठा सकते"। मेरी राय में तुम अगली आने वाली प्रतियोगिता का पता कर उसकी तैयारी करो। भाई की बातों पर गौर करने से मेरे को भी धीरे-धीरे यह अंदाजा होने लगा कि किसी भी काम करने के लिए उसमें आपकी रुचि होना बहुत जरूरी है। यह समझ आने पर मैंने पेंटिंग छोड़ पढ़ाई शुरू कर दी। मैं अपने रूटीन पढ़ाई के अलावा कभी-कभी भाई की हिंदी साहित्य की किताबों को भी पढ़ता रहता था। करीब 4 महीने के बाद अगली प्रतियोगिता वाद-विवाद (डिबेट) के लिए नाम मांगे गए। इसमें तीन सदस्य के दल के रूप में हिस्सा लेना था। इस बार मैंने प्रतियोगिता में हिस्सा लेने का पूरा मन बना रखा था। मैंने अपना नाम दर्ज करवा अपने दल के अन्य दोनों सदस्यों के साथ मिलकर प्रतियोगिता की तैयारी करनी शुरू कर दी। प्रतियोगिता को चार चरणों में आयोजित किया गया। हम तीनों हर चरण में अच्छा प्रदर्शन करते हुए फाइनल में पहुंच गये। सारे कॉलेज में हमारे नाम की चर्चा शुरू हो गई, सारे लोग हमारे ज्ञान को मानने लगे थे। आखरी चरण की प्रतियोगिता का विषय था "प्रेम"! देश के प्रति प्रेम, परिवार के प्रति प्रेम और युवावस्था का प्रेम।

हमने अपना विषय अच्छी तरह से खोज-पढ़ कर इस तरह से तैयार किया कि "देश प्रेम वह एहसास है जो एक सैनिक जब सरहद की रक्षा करते हुए दुश्मन के साथ लोहा लेता है और अपनी जान की परवाह किए बिना देश की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करता है, देश पर कुर्बान हो जाता है वह शहीद का जज्बा सबसे बड़ा देश के प्रति प्रेम है। परिवार के प्रति प्रेम श्रवण कुमार, जिसने अपने माता-पिता को चाहे कैसी भी परिस्थिति हो उनको तीर्थ करवाया और उनका ध्यान रखा। युवावस्था के प्रति प्रेम लैला-मजनू,हीर-रांझा जैसा होना चाहिए। यह हमारे फाइनल के लिए एक लाइन में निष्कर्ष (समिंग अप) कमेंट थे। जैसे ही प्रतियोगिता शुरू हुई अपने-अपने विचार देने के बाद, जैसे ही एक लाइन में देश प्रेम, परिवार प्रेम और युवावस्था का प्रेम को बोलने के लिए कहा गया तो हम अचंभित हुए कि हमारे प्रतिद्वंद्वी दल ने वही शब्द कहें जो हमने लिखे हुए थे, हम बहुत ही नर्वस और परेशान हो चुके थे। मुझे लग रहा था कि अभी सारे लोग हमारी हँसी उड़ाएंगे। इतने में जब जवाब देने की हमारी बारी आई तो मेरे दोनों साथी मेरी तरफ देखने लगे। मैं भी यही सोच रहा था, कि अगर वे दोनों जवाब दे दें, तो अच्छा होगा पर जब उन्होंने जवाब नहीं दिया तो मैंने देश प्रेम के लिए बोलना शुरू किया। मैंने कहा कि इसमें कोई शक नहीं है कि देश के लिए कुर्बान होने वाले शहीद का देश प्रेम सर्वोच्च है पर मेरा मानना है कि हर सैनिक देश के लिए अपनी जान देने की बजाय अगर दुश्मन को उसके देश के लिए कुर्बान करे, और खुद जिंदा रह कर आने वाले समय में भी उसी जज्बे के साथ देश की रक्षा करे। परिवार के प्रेम के प्रति मैंने कहा कि मैं मानता हूं कि माता-पिता को तीर्थ करवाना और उनका ध्यान रखना माता-पिता के प्रति प्रेम है पर मेरे को लगता है कि एक-दूसरे के प्रति दिल में प्यार और हमदर्दी होना भी जरूरी है। जैसे श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की मां अपने बेटे को पेट भर खाना खिलाने के लिए खुद भूखी रहती थी और जैसे मुंशी प्रेमचंद जी की कहानी "ईद" का नायक हामिद "ईदी " के पैसों से अपनी दादी के लिए अपने खिलौनों और मिठाई खाने के बजाय एक चिमटा खरीद के लाता है ताकि उसकी दादी मां के हाथ ना जलें। वह सबसे बड़ा परिवार के प्यार को दिखाने वाला उदाहरण है। युवावस्था का प्रेम पर मैंने कहा कि मैं मानता हूं लैला मजनू, हीर रांझा का प्रेम आज तक के इतिहास का सबसे अच्छा उदाहरण है पर अगर आप श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी "उसने कहा था" पढ़ो तो लहना सिंह जिसने अमृतसर की गली में

किसी लड़की को देखकर सिर्फ इतना पूछा था कि क्या तेरी कुड़माई हो गई और बाद में उसके पति और बेटे की रक्षा के लिए अपनी जान तक दे दी, वह है युवावस्था के प्रति सच्चा प्रेम। मेरे तर्कों से सारा हॉल तालियों से गूंज उठा। परिणाम में हमारा दल विजेता हुआ। इससे यह प्रमाणित होता है कि आपने किसी भी तरह का ज्ञान कभी भी अर्जित किया है, वह कभी व्यर्थ नहीं जाता, वह आपको कहीं ना कहीं काम आता है। दूसरा सफलता पाने के लिए एक जिद, एक जुनून होना जरूरी है पर इससे भी ज्यादा जरूरी है आपकी रुचि होना ।आप अपनी जिद और जुनून से कुछ हद तक एक लक्ष्य को हासिल कर सकते हो पर अगर उसमें आपकी रुचि नहीं है तो आप इसका आनंद नहीं उठा सकते।

अध्याय-5

काबिल होने के बावजूद सफलता छीननी पड़ती है

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

शहर के कॉलेज में पढ़ना, लिखना, खेलना, दोस्तों के साथ समय बिताना, नई चीजों के साथ नए तजुर्बे हासिल करना, कभी उम्र के साथ उठने वाले अनगिनत शक एवं सवाल और उनके जवाब ढूंढना, तो कभी बाजार में मटरगश्ती करना। सिनेमा हॉल में गाना आने पर स्क्रीन स्टेज पर नाचना, तो कभी डायलॉग पर सीटी बजाना। कक्षा में पिछली सीट पर बैठकर तरह-तरह की आवाज निकालना। जीने के नए-नए आयाम स्थापित कर नई ऊंचाइयां और मुश्किल लक्ष्य को पाने के लिए मेहनत कर रहे थे। मस्ती एवं बेपरवाही और गंभीरता एवं सिरियसनैस की पैरलल पटरियों पर अजीब सा बैलेंस बनाकर जिंदगी आगे बढ़ रही थी। कॉलेज में हर साल इलेक्शन हुआ

करते थे, जिसमें मुख्यतः तीन दलों के प्रत्याशी चुनाव लड़ा करते थे। मैंने भी प्रथम वर्ष में ऐसे ही एक दल की सदस्यता ली थी, जब प्रथम वर्ष में चुनाव हुआ तो सचिव पद के प्रत्याशी हमारी कक्षा यानी प्रथम वर्ष से चुने गए, तब मैंने भी हमारे दल की सिलेक्शन कमिटी से चुनाव में प्रत्याशी बनने की इच्छा जताई। सिलेक्शन कमेटी ने मेरी बात पर हैरानी जताते हुए कहा कि अभी कॉलेज में बहुत कम लोग तुम्हें जानते हैं, आप दल के साथ काम करो, थोड़ी पहचान बनने पर अगली बार महासचिव के चुनाव के लिए आपके बारे में सोचा जायेगा। उनकी बातों से सहमत होकर मैंने दल के लिए काम करना शुरू कर दिया। द्वितीय वर्ष के चुनाव के दौरान भी हमारी प्रत्याशी सिलेक्शन कमिटी ने फिर मेरे नाम पर सहमति नहीं बनाई पर मेरे को आश्वस्त किया कि अगले वर्ष अध्यक्ष या फिर उपाध्यक्ष के पद के लिए आपको पक्का चुनाव लड़ाया जाएगा। मैंने यह बात भाई को बताई तो उन्होंने कहा कि "इस दुनिया में काबिलियत एवं हुनर होने पर जरुरी नहीं कि आपको मौका मिल जाए। काबिल होने पर भी आपको मौका झपटना या सफलता छीननी पड़ सकती है"! उन्होंने मुझे स्टूडेंटस के साथ दोस्ती और मिलजुल कर रहने के साथ भाषण देना सीखने को कहा। भाई की बात पर मैं भी हर स्टूडेंट से खेल के मैदान, क्लासरूम, लाइब्रेरी, कैंटीन, हर जगह दोस्ताना व्यवहार और उनकी मदद करने लगा। मेरे व्यवहार और प्रसिद्धि से यह तो जाहिर हो गया था कि मैं तृतीय वर्ष में अवश्य ही अध्यक्ष या उपाध्यक्ष पद के लिए प्रत्याशी रहूंगा। जैसे ही तृतीय वर्ष में चुनाव की घोषणा हुई, हमारे दल ने सचिव और महासचिव के प्रत्याशी का नाम चुनने के बाद अध्यक्ष पद के लिए द्वितीय वर्ष में महासचिव रही शहर के पूर्व विधायक की बेटी और उपाध्यक्ष पद के लिए मुझे प्रत्याशी बनाने की सहमति बनी। अगली सुबह प्रतिद्वंदी दल ने भी प्रत्याशियों के नाम की घोषणा कर दी। उन्होंने अध्यक्ष पद के लिए शहर के वर्तमान विधायक के पौत्र के नाम की घोषणा की। जैसे ही यह घोषणा हुई हमारी प्रत्याशी सिलैक्शन कमेटी को राज्य इकाई से निर्देश आए और पूर्व विधायक की बेटी और पूर्व में महासचिव रही, हमारे दल की अध्यक्ष पद की प्रमुख दावेदार का नाम उपाध्यक्ष पद तथा मेरा नाम अध्यक्ष पद के प्रत्याशी के लिए घोषित हो गया। चुनाव के लिए पोस्टर, कन्वेंसिग सॉन्ग और नारे तैयार हो गए। मैंने भी साम, दाम, दंड, भेद सब अपनाकर रात-दिन, दौड़-धूप कर, अच्छे-अच्छे भाषण देकर चुनाव की तैयारी शुरू कर दी। मैंने अपने सभी दोस्तों को भी अपने लिए वोट मांगने के लिए लगा दिया। इसी दौरान

मुझे हमारी पार्टी के कुछ दोस्तों ने बताया कि शायद हम अध्यक्ष का पद हार रहे हैं। राज्य कमेटी और शहर के वर्तमान और पूर्व विधायक के बीच बात हो गई और पूर्व विधायक ने यह बात मान ली है कि अगर उनकी बेटी को उपाध्यक्ष पद में प्रतिद्वंदी दल मदद करता है तो उनका दल भी वर्तमान विधायक के पौत्र को सपोर्ट करेगा। मेरी जब अपने दल की राज्य इकाई के सदस्यों से बात हुई तो उन्होंने कहा कि यह राजनीति है और यहां हर चुनाव जीतने के लिए नहीं लड़ा जाता। अगर हम एक पद हार कर बाकी तीन पद जीत लेते हैं तो विजय तो हमारी ही हुई, जैसे चल रहा है वैसे ही चलते रहो, ज्यादा हंगामा मत करो। ना जाने यह बात कॉलेज के छात्र-छात्राओं को पता कैसे चली कि मेरे को देख कर हर कोई "ज्यादा हंगामा मत कर" कहने लग गया। हर साल की तरह इस वर्ष भी चुनाव से 1 दिन पहले सारे छात्र और छात्राएं खेल के मैदान में सुबह से ही इकट्ठे होने लगे। यह चुनाव उत्सव करके हमारे कॉलेज का एक प्रोग्राम था जिसमें छात्र-छात्राओं को मतदान देने के लिए प्रेरित किया जाता था। प्रोग्राम के दौरान प्रत्याशी, स्टूडेंट्स को बताते थे कि वह किस तरह से कॉलेज की और स्टूडेंट्स की बेहतरी के लिए काम करेंगे। मनोरंजन के लिए बीच-बीच में संगीत की प्रस्तुतियां का भी आयोजन होता था। हर प्रत्याशी ने अपनी बात हर छात्र तक पहुंचाई। मैं अध्यक्ष पद का उम्मीदवार होने की वजह से आखिरी वक्ता था। लोग थक एवं ऊब चुके थे पर मेरे को सुनना चाहते थे। मेरे उठते ही चारों तरफ से हूटिंग होने लगी 'हंगामा मत कर'। मैंने कहा कि अगर हम सोने का चम्मच लेकर पैदा हुए लोगों को ही अपना नायक या लीडर बनाते रहेंगे तो हमारी समस्याओं का समाधान कभी नहीं हो सकता, अगर छात्रों को आने वाली मुश्किलों से छुटकारा पाना है तो ऐसे छात्र को चुनना होगा जो उस प्रॉब्लम को समझ सके और उसका हल निकाल सके। मैं एक विचार, एक आइडिया की आग अपने सीने से तुम्हारे सीने तक पहुंचाना चाहता हूं, और मुझे कहते हैं हंगामा मत कर। मैंने पूरी आवाज से कहा, याद रखना बकौल दुष्यंत जी, "मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही, हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए! सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए"। सारा मैदान तालियों से गूंज उठा था। अगले दिन चुनाव के दौरान सारा कॉलेज एक ही तकिया कलाम कह रहा था "सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी तो कोशिश है यह तस्वीर बदलनी चाहिए"! परिणाम मेरे पक्ष में आया। मेरे को कॉलेज के अध्यक्ष पद के लिए

चुन लिया गया था। सबका यह मानना था कि यह मेरी मधुर वाणी, हेल्पफुल नेचर अच्छा खिलाड़ी,अच्छा वक्ता होने के साथ चुनाव को ना सिर्फ हल्ला करने के लिए पर कॉलेज को डेवलपमैंट की ओर ले जाने के अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचाने का परिणाम है। इससे यह प्रमाणित हो गया जिंदगी जीने का मजा नई ऊंचाइयों छूने में है। बिना लक्ष्य की जिंदगी में कोई आनंद नहीं है। दूसरा इस दुनिया में काबिलियत और हुनर होने पर जरूरी नहीं कि आपको मौका मिल जाए, आपको काबिल होने पर भी मौका झपटना और सफलता छीननी पड़ सकती है।

अध्याय-6

वक्त पर मिला छोटा मौका बड़े लक्ष्य की सीढ़ी बनता है

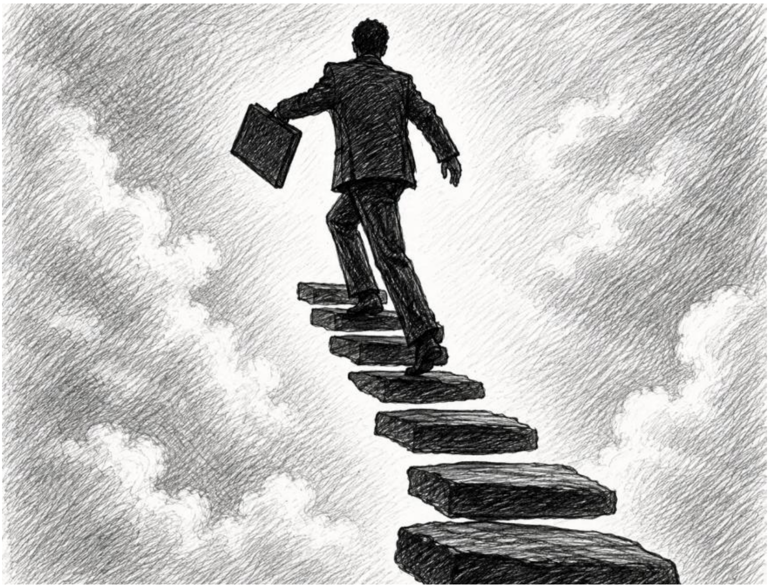

वक्त की बेइन्साफी पर अक्सर रोते हैं लोग! मैंने क़िस्मत को हौसलों के पीछे चलते देखा है।

कॉलेज के तृतीय वर्ष में भविष्य की बातें शुरू हो गई थी। हर किसी ने मन में लक्ष्य निर्धारित कर लिया था, कोई प्रशासनिक अधिकारी, कोई शिक्षक, तो कोई पुलिस में सेवा करना चाहता था। भाई से जब भी भविष्य के बारे में बात होती थी तो वह कहते थे कि देख वो दूर झाड़ो के पीछे धुंधली सी घूमती हुई कुर्सी है, वह तेरा इंतज़ार कर रही है। जिस दिन अज्ञान के झाड़ हट जाएंगे, तुम उस तक पहुंच जाओगे। मैं हमेशा उस धुंधली घूमती कुर्सी को बचपन से जोड़ता था। जब मेरी मां घर में कभी चक्की पीसती, तो कभी गेंहूं

बीनती, मेरी बहनों को कोई काम बताती तो वो चिढ़कर कहती, कि ये बगल में बैठा है, इसे तुम कभी कोई काम नहीं बताती। मेरी मां बड़े प्यार से कहती थीं "यह मेरा पुत्र लाट साहब है काम थोड़ा करेगा यह तो हुक्म देगा"! मैं मां से हमेशा पूछता कि ये लाट साहब क्या है, उनके ज़बाब से यह जाहिर था कि लाट साहब एक बड़ा अफसर है पर क्या है, यह मैं जान नहीं पाया। एक दिन भाई से बात करते पता चला कि अंग्रेजी शासन में लोकल राजा अपने राज्य में कानून- व्यवस्था बनाए रखने के लिए अंग्रेजी सेना के अफसर से हुक्म लेते थे, इन्हीं अफसर को "लाट साहब" कहा जाता था। तब से मुझे धुंधली, घूमती कुर्सी पर बैठा "लाट साब" फौजी अफसर दिखने लगा और उसे पाने की जानकारी से पता चला कि बाहरवीं के बाद एनडीए और स्नातक डिग्री के बाद सीडीएस (कंबाइंड डिफेंस सर्विसेज) के जरिए सेना में सीधा अधिकारी बना जाता है। मैं रात-दिन अपने शारीरिक अभ्यास और शैक्षणिक योग्यता की तैयारी में लग गया। फाइनल एग्जाम से पहले सेना में सिपाही भर्ती के लिए अखबार में इश्तहार निकला। हम कॉलेज के कुछ लड़के अपनी शारीरिक योग्यता परीक्षण हेतु भर्ती के लिए चले गए, वहां लम्बे इंतजार के बाद जब हमारा दौड़ने का नंबर आया, तो बॉस्केटबॉल प्रैक्टिस और शारीरिक व्यायाम करते रहने से मैं अपने ग्रुप की दौड़ में अव्वल आया। अगले कुछ दिनों में अन्य शारीरिक योग्यता, मेडिकल टेस्ट और लिखित परीक्षा में मैंने पूरी मेहनत से हिस्सा लिया। परिणामस्वरूप करीब एक महीने के बाद तृत्तीय वर्ष की परीक्षा से पहले, मेरा फौज में भर्ती का जॉइनिंग लेटर आया है। उसके अनुसार 15 दिन में रिपोर्ट करना था, मैं बहुत खुश था कि मैं फौज में दाखिला लेने के काबिल हूं पर मैं चाहता था कि मैं सिपाही नहीं अधिकारी बन फौज में जाऊं। मैंने उस पत्र को अपनी किताबों में डाला और पढ़ाई में लग गया पर किस्मत को कुछ और मंजूर था। ठीक रसायन विज्ञान प्रैक्टिकल की सुबह मेरे दोस्त का एक्सीडेंट हो गया, उसकी गंभीर हालत व घर में सिर्फ बुढ़ी मां को देखते हुए मैं उसके साथ एक हफ्ते तक अस्पताल में रहा और एक यूनिट ब्लड भी दिया। तब तक मेरा एक पेपर और प्रैक्टिकल मिस हो चुका था। दोस्त की हालत सुधरने पर मैंने कॉलेज पहुंच प्रिंसिपल से मिस एग्जाम देने की निवेदन की, पर उन्होंने मेरी मदद करने में असमर्थता जताई। साल बर्बाद होने की मायूसी के साथ कमरे में बैठे मैं सोच रहा था कि इतना अच्छा करने पर भी पूरे साल की मेहनत, नम आंखों के साथ स्टडी टेबल के चार्ट पर लिखा 'लाट साहब' ढांढस बंधाता। तभी

किताबों में मुझे सिपाही भर्ती का जॉइनिंग लेटर मिला। मेरे पास और कोई चारा नहीं था। मैंने पढ़ा था कि सेना में होनहार सिपाही को अधिकारी बनने का मौका दिया जाता है। मैंने छोटे मौके को बड़े लक्ष्य की सीढ़ी मान, घर आकर सिपाही भर्ती के ट्रेनिंग सेंटर में रिपोर्ट करने की बात बताई। अगले दिन मैं रेलवे स्टेशन से नए सफर की शुरुआत के लिए निकल पड़ा। मेरा मानना है कि वक्त पर मिला छोटा मौका बड़े लक्ष्य की सीढ़ी होता है।

अध्याय-7

जो मिला काफी है, ज्यादा के लिए मेहनत करें

कॉलेज छूटने को भगवान का अन्याय व बदकिस्मती मान, दुखी मन से मैं, पठानकोट रेलवे स्टेशन पर भीड़, शोर, गर्मी और मच्छरों के बीच सेना ट्रेनिंग सेंटर जाने वाली रेल का इंतजार कर रहा था। प्लेटफार्म पर भीड़ देख लग रहा था मानो पूरा मुल्क ही सफर पे निकल पड़ा हो। ट्रेन आने पर जनरल कंपार्टमेंट में भीड़ और धक्कों के बीच जैसे-तैसे अन्दर घुसा। इतनी भीड़ थी कि बैठना तो दूर पर खड़ा होना और हिलना-डुलना भी मुश्किल था, थोड़ी देर में ज्यादातर यात्री खड़े -खड़े ही सोने लगे। अम्बाला में कुछ यात्रियों के

उतरने से मेरे को लकड़ी के फट्टे से बनी सीट पर बैठने का मौका मिला। अपने बैग को सीट से ताला लगा मैं खिड़की वाली सीट पर बैठते ही नींद में खो गया। सूरज की किरणों के साथ मैंने आंखें खोली तो रेलवे ट्रैक के नज़दीक लम्बी झुग्गी बस्ती के आस-पास मुर्गे, बकरियां, सुअर, गन्दे पानी के साथ बच्चे, पुरुष और महिलायों को हाथ में लोटा लिए सुबह के नित्य कर्म के लिए खड़ा पाया। इतने में ट्रेन दिल्ली पहुंच गई। यहां ट्रेन को थोड़ी देर रूकना था, यात्रियों ने चढ़ना-उतरना शुरू कर दिया, मैंने भी नीचे उतर, सबसे पहले रेलवे शीतल जल पियाऊ से हाथ-मुंह धोकर थोड़ा पानी पिया। फिर उत्सुकता से रेल के डिब्बों का मुआयना करने लगा। मैंने पाया कि जनरल कम्पार्टमैंट के अलावा कुछ डिब्बे स्लीपर कोच थे, जिनमें गद्देदार सीट थी। उसके यात्री अपने आप को जनरल क्लास के यात्रियों से अच्छा समझ रहे थे, थोड़ा आगे दोनों तरफ से शीशे लगे एसी (वातानुकुलित) कोच थे। उसके यात्री अपने को सबसे सुपीरियर समझ रहे थे। एक ही रेल में तीन तरह के कम्पार्टमेन्ट, क्यों? सोचते हुए मैं पूरी-छोले की प्लेट ले नाश्ता करने लगा। इतने में मैंने सामने पटरियों में करीब 7- 8 साल के बच्चे को शौच व गंदगी से कचरा बीनते हुए देखा, फटे-मैले कपड़े, लंबे गन्दे नाखून, जिस्म पर काली पपड़ी, जटाएं बने बालों में ऐसा लग रहा था, मानो ये बरसों पहले नहाया हो। उस बच्चे को कचरे में एक पालथीन से कुछ खाने का सामान मिला और वह उसे निकाल वहीं शौच व गंदगी के पास बैठकर खाने लग गया। यह देख, मैं दौड़कर उसके पास पहुंचा और उसके हाथ से खाने का टुकड़ा नीचे गिरा दिया। बच्चा सहमी और डरी आंखों से मेरी तरफ देखने लगा, मानो पूछ रहा हो, कि तूने ऐसा क्यों किया? प्लेटफॉर्म पर खड़े हजारों यात्री मेरी तरफ देख रहे थे, मैं उस लड़के को पकड़ कर रेड़ी तक लाया व पूरी-छोले की प्लेट उसके हाथ में दे, रेड़ी वाले को पैसे दे, मन में एक और सवाल लिए अपनी सीट पे बैठ पिछले 24 घंटों की घटनाओं के बारे में सोचने लगा। कहां छोटी-छोटी बातों पर किस्मत को कोसना, तीन साल तक कॉलेज की ख़ुशी और मस्ती के बाद एक साल बर्बाद होने को मैं दुनिया का सबसे बड़ा अन्याय मान रहा था पर जनरल कम्पार्टमैंट में बच्चे को गोदी में लिए खड़ी-खड़ी सो रही औरत, झुग्गी-बस्तियों के बाहर गंदे पानी के किनारे खड़े लोग और गंदगी से कचरा बीनते लड़के को देख, मुझे मेरी मुश्किलें और दुख बहुत बौने लग रहे थे। इस सफर ने मेरी सोच को एक नयी दिशा दी। बहुत सारे लोग जिंदगी में मुश्किल आने पर खुद को या किस्मत को कोसते

हैं, कोई टेस्ट पास व नौकरी ना लगने या प्यार में धोखा होने से डिप्रेशन में चले जाते हैं और खुदखुशी करने की कोशिश करते हैं। उन्हें यह जानना चाहिए कि दुनिया में बहुत सारे लोग हैं जिनके पास रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं पर वो सब मुश्किलों से लड़ते हुए जी रहे हैं। इस अनुभव से मैंने जिंदगी का एक उसूल बनाया कि गर जिंदगी में कभी, किसी अन्याय पूर्ण घटना से मैं व्यथित होता हूं और लगता है कि जिंदगी में कुछ नहीं बचा तो मुझे उस कचरा बीनने वाले लड़के के बारे में सोचना है और गर किसी क्षण लगता है कि सब ठीक है, अब सब पा लिया, उस वक्त वातानुकूलित कोच में सफर करने वालों के आनंद की अनुभूति के बारे में सोचकर बड़ा लक्ष्य रखकर अथक मेहनत करना है। मेरा मानना है, जिंदगी में मुश्किलों और असफलताओं पर दुखी ना होकर सकारात्मक सोच से आगे बढ़ना चाहिए।

अध्याय-8

दुनिया की असली तस्वीर मां-बाप के आंचल से बाहर आकर दिखती है

दुनिया की असली तस्वीर मां-बाप के आंचल से बाहर आकर दिखती है।

कॉलेज के टशन एवं साजन के संजय दत्त की तरह लंबे बाल, राम लखन के अनिल कपूर की तरह आगे से शर्ट अंदर और पीछे से बाहर किए, स्टाइल के साथ मैंने सिपाही प्रशिक्षण केंद्र में रिपोर्ट किया। नाम दर्ज करवाते ही मुझे एक नंबर दिया गया जो उस समय से मेरी पहचान बन गया, बार्बर शॉप से बाल कटवा, जूते, कंबल, मच्छरदानी, दरी, एक कप एवं मेस्टिन (सिल्वर का डिब्बा जो खाना खाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है) लेकर बैरक में पहुंचा। होस्टल की तरह दिखने वाली बैरक, हम उम्र सहपाठी लगा कि मज़ा आएगा। पर ये तो अलग ही दुनिया थी, अलग-अलग वेश-भूषा, भाषा के लोगों से मिल, हमारे मुल्क की विविधताओं की अनुभूति हुई। यहां पर

अहसास हुआ कि बिना भाषा जाने वार्तालाप कितना मुश्किल होता है, एक ही कप एवं मेस्टिन के साथ सुबह से शाम तक खाने, धोने एवं सुखाने जैसे सारे काम करना, क्लास लगती थी पर वहां पर कोई मीठी कर्ण प्रिय वाणी में रोमांटिक पोइटरी नहीं पर कठोर आवाज़ में गालियां व मारने-काटने की बातें होती थीं। कॉलेज के दिनों में आधी रात तक दोस्तों के साथ मस्ती करना, सुबह नींद ना खुलने पर कक्षा बंक करना, यहां पर 9:30 बजे लाइट्स ऑफ की सीटी बजती, मतलब बिजली बंद, सभी जवान मच्छरदानी में सोए हुए, अगर कोई भी सोने में देरी कर दे तो 3:00 बजे तक पनिशमेंट, सुबह 4:00 बजे फिर सिटी बजती,और सब चेहरे पर उगे इक्के-दुक्के बालों को शेव कर, तैयार हो, पीटी परेड और उसके बाद कठोर शारीरिक अभ्यास, वेपन एवं जंगल ट्रेनिंग, पनिशमेंट, गालियों व थप्पड़, डंडों की मार से दिन गुजरता था, हर अंग ऐसे दुखता था कि उसको सहलाना तक मुश्किल लगता था। आलम ये था कि खाना खाते, चाय ब्रेक या दो कक्षाओं के बीच में 5 मिनट के गैप में रिक्रूट को सोया पाना अक्सर देखा जा सकता था। एक शाम को हुकुम आया कि सुबह फायरिंग के लिए हथियार,अमुनिशन, टारगेट्स और फायरिंग के सारे सामान सहित सभी जवान 4:00 बजे तैयार रहेंगे। लाइट्स ऑफ पर मच्छरदानी लगा सोने ही वाले थे, कि उस्ताद ने सबको बाहर पक्की सड़क पर इकट्ठा कर सजा देना शुरू कर दिया। कसूर इतना था कि सीटी बजने के 2 मिनट बाद सारे जवान मच्छरदानी के अंदर नहीं थे। सुबह 3:00 बजे तक सज़ा के बाद 4:00 बजे तक तैयार होने को कहा गया। फायरिंग का सामान कलेक्ट करने में 5:00 बज गए, उस्ताद नाराज हो गया और फायरिंग रेंज, जो करीब 12 किलोमीटर दूर थी, जंगल के रास्ते, क्रॉस कंट्री से करीब 10 किलो के बैटल लोड पिट्ठू और हथियार के साथ रेंज तक दौड़ा के ले गया। जो थककर रुक जाता, उसे डंडा व गाली पड़ती। फायरिंग शुरू हुई। यहां मुस्तैदी से एक्शन करना जरूरी था। सारी रात की पनिशमेंट, सुबह 12 किलोमीटर दौड़ना, शरीर जवाब दे चुका था। फायरिंग खत्म होने पर पता चला कि एक खाली खोखा गुम गया है, रात को 9:00 बजे तक खोखा ढूंढा गया। खाने के लिए बीच में छोड़ा गया पर जो खाना खाने लगते, उन्हें गंदी गालियां और डंडे पड़ते। रेंज से वापिसी पैदल मार्च से हुई, हथियार जमा करने के बाद हुई गिनती में दो सैनिक कम मिले। खोजने से पता चला कि वे भगौड़े हो गए हैं। फिर क्या था, पनिशमेंट शुरू। थके, हारे, अधमरे हम एक जिन्दा लाश की तरह बस चले जा रहे थे। ऐसा लग

रहा था हमने सेना ज्वाइन कर कोई गुनाह कर दिया है और हम उस जुर्म की सजा काट रहे हैं। पीछे से उस्ताद कह रहा था "यहां आपके मां-बाप नहीं बैठे हैं जो गलती करने पर भी छोड़ देंगे। उसकी बात सुन मुझे मां-पापा का प्यार, पुचकार, गुस्सा, डांट सब याद आ रहा था और एहसास हुआ कि "दुनिया की असली तस्वीर, मां-बाप के आंचल से बाहर आकर दिखती है।"

अध्याय-9

मन पक्का कर लो, तो शरीर कुछ भी करने में सक्षम है

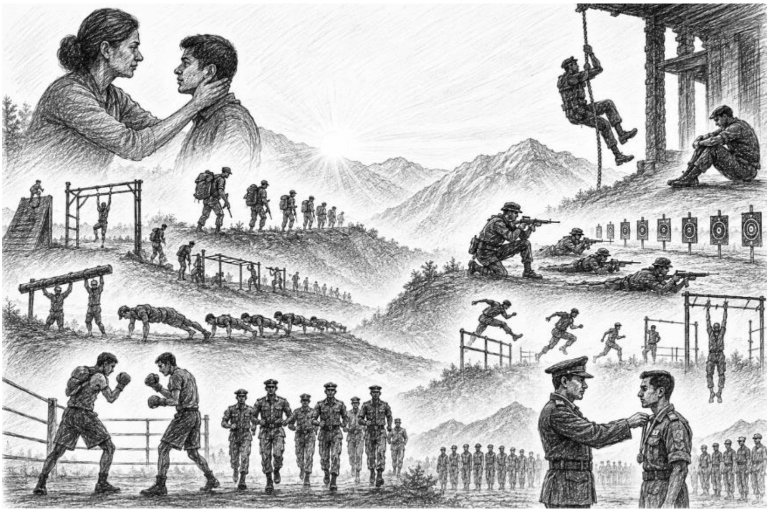

मन पक्का कर लो, तो शरीर कुछ भी करने में सक्षम है।

सैनिक प्रशिक्षण केंद्र में कठोर ट्रेनिंग, बात-बात पर सजा, खाने व सोने को भी वक्त ना मिलना, शरीर का हर अंग ऐसे दुखता था कि उठना-बैठना भी मुश्किल था। तब हमें टायलेट की छत से लटकती रस्सी का औचित्य समझ आया जब नित्य कर्म के लिए उसकी मदद लेनी पड़ती थी और उसी के सहारे बैठे हुए नींद पूरी करते थे। एक दिन एस टी डी पहुंच मां से बात की। मां ने पूछा कि आवाज बड़ी उदास लग रही है क्या बात है ट्रेनिंग में ज़्यादा तंगी है क्या? मैंने रुँआसे स्वर में सब छोड़ घर आने की बात कही। तब मां ने कहा कि बेटा तुम्हारे नाना ने सेना में तीन लड़ाईयां लड़ी थीं, 62 की लड़ाई में पलटन से अलग लापता दो महीने अकेले जंगलों में रहने के बाद वापिस

आने पर 65 की लड़ाई में फिर हिस्सा लिया, वह कहते थे कि उनकी बेसिक ट्रेनिंग इतनी सख्त थी कि उसकी बदौलत वह मुश्किल वक्त में भी सर्वाईव कर पाए। आप बाबू नहीं सैनिक हो, मन पक्का करो, शरीर कुछ भी करने में सक्षम है। डर के छोड़ दोगे तो ताउम्र आत्मग्लानि एवं जगहँसाई के साथ जीना पड़ेगा। मैं दुःखी तो था पर मां की बात से मोटीवेट हो, हर चीज को सकारात्मक लेने लगा।

केंद्र की दीवारों पर लिखे शब्द "ट्रेनिंग में बहाया पसीना लड़ाई में खून बचाता है। पक्का इरादा, मज़बूत लक्ष्य, एक गोली, एक दुश्मन तथा उस्तादों द्वारा बात-बात पर कहना कि बूट और रंगरूट को जितना रगड़ोगे उतना चमकेगा। थोड़े दिन में शरीर को आदत हो गई और शायद हम 'ट्रिक्स ऑफ द ट्रेड' भी सीख गए थे। खेल प्रतियोगिता के दौरान मुझे बास्केट बॉल टीम में चुन लिया गया पर बाक्सिंग एवं क्रासकंटरी में हिस्सा लेना हर सैनिक के लिए अनिवार्य था जिसका अभ्यास रोजाना शाम को होता था। जिस शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना को सहन करना नेक्स्ट टू इंपॉसिबल लगता था, इस दौरान पता चला कि गर मन में पक्का इरादा कर लो तो कुछ भी संभव है। रात भर शारीरिक सजा पाना और सुबह बैटल लोड के साथ 12 किलोमीटर दौड़ना, फिर फायरिंग करना, यह सब हम उम्र साथियों के साथ रोज का काम हो गया था और इसे अब हम सब हँसते-खेलते करने लगे थे। सेना में हिमाचल, जम्मू यानी डोगरा, पंजाब मतलब सरदार, हरियाणा, राजस्थान वाले जाट, यूपी, बिहार एवं एमपी वाले बिहारी, उड़ीसा, बंगाल यानी बंगाली, उत्तर-पूर्व से आने वाले 7 राज्यों के लोगों को थापा या कांचा और साउथ के चारों राज्यों के लोगों को तंबी या अन्ना के नाम से पुकारा जाना ट्रेनिंग सेंटर में रोज की बात थी। जैसे हमारा क्षेत्र और उनकी भाषा के बारे में ज्ञान बड़ा तो हमें हर राज्य और हर क्षेत्र के लोगों का उनकी भाषा के अनुसार पता चलने लगा। नॉन हिंदी भाषीय सैनिकों के लिए दोपहर को हिंदी क्लास चलती थी। कैटल कैचिंग अभ्यास के दौरान नान हिंदी सैनिकों का उस्ताद को रिपोर्ट करना कि आज दो काला गाय (भैंस) व चार मेल गाय (बैल) गेंहू का पेड़ खाने आया था। उत्तरी भारतीय के लिए अक्सर सजा के दौरान हँसी का बहाना होता था। बैटल लोड के साथ 5 कि.मी. दौड़ व 20 कि.मी. पैदल, अलग-अलग हथियारों से विभिन्न दूरी पर लगे टारगेट्स हिट कर, बाक्सिंग एवं क्रासकंटरी आदि में हिस्सा ले सब को कुशलता से पूरा करने के अलावा अलग-अलग भाषाओं, क्षेत्रों के बारे में जानकारी, खेल प्रतियोगिता,

शारीरिक परीक्षण, जंगल ट्रेनिंग, हथियारों की जानकारी के साथ हमारा प्रशिक्षण खत्म हुआ। ट्रेनिंग में हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ रहने वाले रिक्रूट को बेस्ट रंगरूट का अवार्ड दिया जाता है। पासिंग आउट परेड के दौरान उसे परेड कमांडर बनने का मौका तथा मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित किया जाता है। बेस्ट सैनिक का मैडल लेते वक्त मुझे मां की बात याद आ रही थी कि मन पक्का कर लो, तो शरीर कुछ भी करने में सक्षम है।

अध्याय-10

काबिलियत के साथ पहचान होने पर मौका आसानी से मिलता है

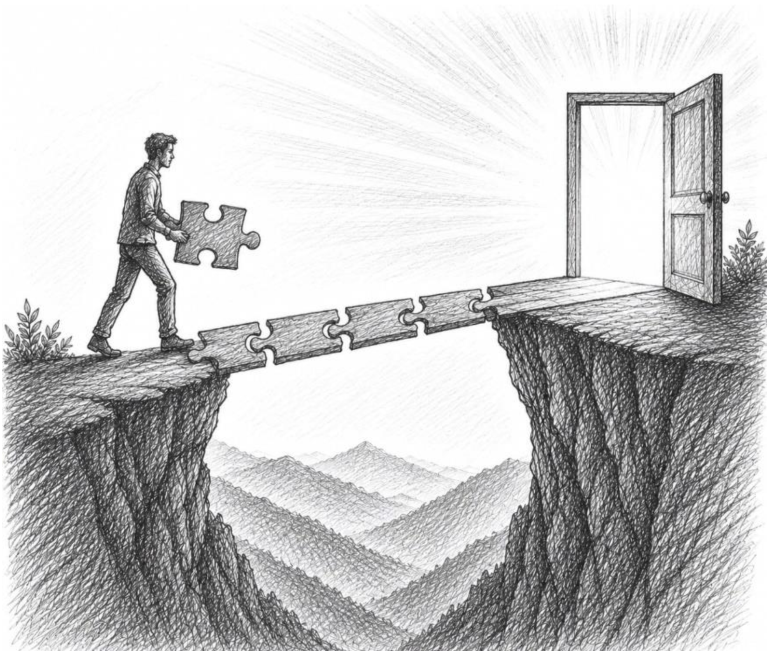

काबिलियत के साथ पहचान होने पर मौका आसानी से मिलता है।

सिपाही ट्रेनिंग के बाद काले बॉक्स पर सफेद पेंट से अपना नाम, नंबर लिखवा कर मैंने यूनिट में रिपोर्ट किया, अगली सुबह बूट, बेल्ट पॉलिश कर और यूनिफार्म को प्रेस करवा कर बड़े साब के इंटरव्यू के लिए पहुंचा। इंटरव्यू के दौरान अलग-अलग विषयों पर बात करने के बाद बातों-बातों में मैंने साब को अपनी अधिकारी बनने की इच्छा बताई और उनसे मौका देने का अनुरोध किया। दोपहर बाद हवलदार ने मुझे फुल बैटल लोड पिट्ठू के

साथ अगले हुक्म तक धूप में दो घंटे टहलने का फरमान सुनाया। मैं इस व्यवहार से हैरान था पर फिर सोचा शायद पलटन में नए सैनिक के स्वागत का यह दस्तूर हो। तीसरे दिन सजा के दौरान आए सूबेदार ने तंज़ कसते हुए कहा कि अगर अफसर बनने का शौक है तो घर से पढ़कर आना था। मुझे सजा के कारण का आभास होने पर मैं अपने आप को समझा कर यूनिट रूटीन में ढालने लगा, पर रह-रहकर अधिकारी बनने का ख्याल मन में आता था। एक दिन मां से बात हुई तो उन्होंने बताया कि "बेटा मौका पाने के लिए पहले काबिल बनो और इसका यकीन अपने सीनियर्स को दिलाओ"। मेरे पूछने पर कि 900 सैनिकों में चंद दिन पहले आया सैनिक, पहले पहचान बनाना और फिर अपनी काबिलियत, इस सब में तो बहुत वक्त लग जाएगा तो मां ने बताया कि कोयले की खान में हीरा अलग चमकता है, लकीर से हटकर कुछ ऐसा करो जोआपकी पहचान व काबिलियत का प्रमाण दे। यूनिट में बास्केटबॉल तथा टैंक फायरिंग एफ एम आर (फील्ड मिनीचर रेंज, टैंक के फायरिंग सिस्टम द्वारा छोटे वैपन से मिनिचर रेंज में फायर करना) कंपटीशन शेड्यूल था और किस्मत से मैं इन दोनों प्रतिस्पर्धा में निपुण था। मेहनत और अभ्यास के बाद मैं एफ एम आर, में यूनिट का बेस्ट गनर बना तथा बास्केटबॉल में मुझे यूनिट टीम के लिए चुना गया। इन दो प्रतियोगिताओं में मेरा प्रदर्शन देख यूनिट के सब लोग मुझे पहचानने लगे थे, इससे उत्साहित हो मुझे लगा कि यह पहचान बनाने का सबसे अच्छा जरिया है और मैंने हर प्रतियोगिता में हिस्सा लेने तथा अच्छा प्रदर्शन करने का मन बना लिया। उसके बाद बॉक्सिंग कंपिटीशन, जिसमें यूनिट की सारी टीम तैयार थी, सिर्फ एक स्लॉट खाली था, जो मेरे भार से ज्यादा वाला था। पानी पी-पीकर भार बढ़ा मैंने हिस्सा लिया। रिंग में सामने वाला बॉक्सर मेरे से करीब 10 किलो भारी होने के कारण, मुझे मेरे कोच ने पहले ही राउंड में टॉवेल फेंकने यानी सरेंडर करने को कहा पर मैंने लड़ने की इच्छा जताई। सारे मैच में विपक्षी खिलाड़ी ने मुझे प्रैक्टिस किट की भान्ति पीटा और अन्ततः मैं मैच हार गया पर मेरे हौसले को हर किसी ने सराहा। दूसरे मैच में पूरे दमखम और टेक्निक के साथ लड़कर जीतने से मैं चर्चा का विषय बन गया। इसके बाद 42 किलोमीटर मैराथन की तैयारी कर मैंने इसमें हिस्सा लिया और ब्रिगेड में तीसरे स्थान पर रहा। यूनिट में मुझे लोग जानने लगे थे। मैं 900 सैनिकों में अपनी अलग पहचान बना चुका था। इससे अगला प्रतियोगिता 50 किलोमीटर वॉक था। इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने से हर

कोई कतराता था। हमारा यूनिट इस प्रतियोगिता में अभी तक कोई मेडल नहीं जीता था। शाम को हुक्म आया कि जो भी सैनिक वॉक में मेडल जीतेगा उसे अनपेड नायक की तरक्की दी जाएगी। मैंने अगले दिन से 50 किलोमीटर वॉक की तैयारी करना शुरू कर दिया। कठोर मेहनत परिश्रम से तकनीक सीख मैंने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और ब्रिगेड में अव्वल आया। सारा यूनिट बहुत खुश था। मेरे अच्छे प्रदर्शन के एवज में सीओ साहब ने सारे यूनिट को बुलाकर सबके सामने मेरे को अनपेड नायक बनाने की घोषणा की और मुझे स्टेज पर बुलाया पर मैंने उन्हें बताया कि मुझे नायक ना बनाकर अधिकारी बनने के लिए चल रही क्लास में जाने का मौका दिया जाए। मेरी शैक्षणिक योग्यता के बारे में पूछने के बाद उन्होंने मुझे क्लास लगवाने की अनुमति दे दी। मुझे एहसास हो गया था कि "काबिलियत के साथ पहचान होने पर मौका आसानी से मिलता है"।

अध्याय-11

देशसेवा सर्वोपरि है, इसके सामने निजी तरक्की मायने नहीं रखती

मैं खुश था कि अधिकारी बनने की क्लास लगाऊँगा और जिस लक्ष्य के लिए मैंने सेना में दाखिला लिया था, उसे पूरा करूंगा, पर सीओ साहब की परमिशन के बावजूद भी कंपनी के हवलदार व सूबेदार मेरे क्लास लगाने से खुश नहीं थे। कल तक जो सूबेदार, हवलदार मेरे खेल में अव्वल आने पर मुझे शाबाशी और हौसलाअफजाई करते थे, आज अधिकारी बनने की क्लास लगवाने मात्र से ही मेरे विरुद्ध थे। उनके इस व्यवहार से यह समझ आया कि साथी अच्छा करें, यह सब चाहते हैं, पर कुछ ज्यादा ही बड़ा करने लग जाए तो वही साथी रास्ते का रोड़ा बन जाते हैं। मैं जैसे ही क्लास लगवाकर बैरक में पहुंचता मेरे लिए दोपहर बाद का काम और रात की

ड्यूटी का फरमान सुना दिया जाता। रात की ड्यूटी को तीन सैनिक मिलकर दो घंटे जागने व चार घंटे सोने के साइकल से बारह घंटे पूरा करते हैं। सुबह क्लास, दोपहर को काम और रात को ड्यूटी, पढ़ने का समय नहीं था। तब मैंने ड्यूटी के दौरान स्ट्रीट लाइट के नीचे सड़क पर बैठकर पढ़ना शुरु किया। आलम यह बन गया कि शाम को गार्ड आंवटन के वक्त यूनिट का हर सैनिक मेरे साथ ही ड्यूटी शेयर करना चाहता था क्योंकि मैं सारी रात स्ट्रीट लाइट के नीचे पढ़ता रहता था। कुछ दिनों में मेरी स्ट्रीट लाइट के नीचे पढ़ने की खबर अधिकारियों तक पहुंची तो ऑफिस बुला सारी बात समझ साब ने मेरी साल की बची हुई एवं अगले साल की अडवांस लीव इक्कट्ठी कर परीक्षा तक छुट्टी और एक छोटे स्टोर में पढ़ने के लिए रातभर लाइट ऑन रखने की इजाजत दे दी। मुझे भी मानो परीक्षा पास करने का जुनून हो गया था। दिसंबर-जनवरी की कड़कती ठंड में जब रात को नींद आती थी तो कभी पागलों की तरह दौड़ता तो कभी खुले पानी के टैंक में सिर डूबो देता। बैरक से निकलते वक्त बिस्तर को फोल्ड कर यह कहता कि मुझे आज सोना नहीं है और जब रात को सोने का मन करता तो फोल्ड बिस्तर देख वापिस पढ़ने लग जाता। दिन-रात मेहनत कर मैंने अधिकारी की परीक्षा दी और परिणाम आया तो मैं पूरे कोर लेबल के सैनिकों में अव्वल था। सीओ साहब ने खुश होकर मुझे एस एस बी कोचिंग के लिए 10 दिन की छुट्टी पर भेज दिया। इसी दौरान कारगिल युद्ध शुरू हो गया और हमारी यूनिट को उसमें हिस्सा लेने का आदेश आ गया। सभी सैनिक जहां भी ड्यूटी या छुट्टी पर थे, वापस यूनिट में पहुंचे। सभी सैनिकों ने घर के लिए पत्र लिख अपने बाक्स में रख दिया जो शहीद होने पर पार्थिव शरीर के साथ घर भेजा जाता है। मैंने फोन पर मां से बात की और अधिकारी बनने के अपने सपने की बात कही तो मां ने रूंधी आवाज में कहा, देशसेवा एवं राष्ट्रप्रेम सर्वोपरि है, उसके सामने निजी स्वार्थ व निजी तरक्की मायने नहीं रखती। जब हम रेल से बॉर्डर की तरफ जा रहे थे तो मिलने वाले सम्मान और इज्जत देख हम हैरान थे, ज्यादातर रेल डिब्बे के संडास के पास की गैलरी में सफर करने वाले सैनिकों को अच्छी सीट पर बैठाया जा रहा था। ऐसे लग रहा था कि हम बड़े ही पूजनीय हैं। जगह-जगह फूल, मिठाइयों से अभिवादन देख हमारे एक हवलदार ने मजाक में कहा कि यह लोग हमारी उस बकरे की तरह पूजा कर रहे हैं जिसकी थोड़ी देर में बलि दी जाएगी। इस हकीकत से भलीभांति वाकिफ होने के बावजूद भी हम सब सैनिक अपना घर-गांव,

दोस्त-मित्र, परिवार समाज सब भूल देश की रक्षा के लिए निकल चुके थे। युद्ध के दौरान खून से सने कटे हाथ-पैर, पीड़ा से कहराते सैनिकों को देख, ख्याल आता आखिर ये क्यों और किसके लिए, पर भावनाओं के सामने देश को सर्वोपरि रख जोर से नारा लगा जोश से आगे बढ़ जाते। मौत को इतने नजदीक से देखने एवं खूनी मंजर ने जिंदगी जीने का नजरिया बदल दिया। कई दोस्तों को खोने के बाद मिली जीत ने बुरे अनुभवों को भूला फिर नये सपनों के साथ जीने में व्यस्त कर दिया।

अध्याय-12

सफलता के लिए सच्चा व्यक्तित्व जरूरी, बनावटी नहीं

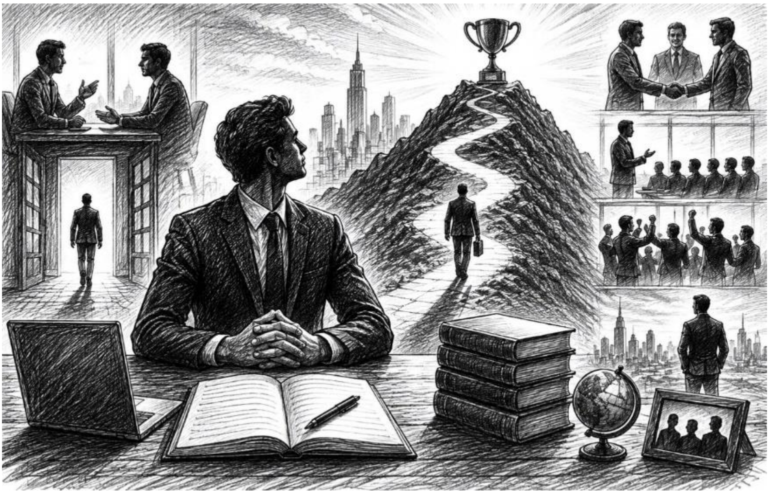

युद्ध समाप्ति पर, यूनिट परमानेंट लोकेशन में आ गई और फिर से आम दिनचर्या शुरू हो गई। मुझे भी एस एस बी साक्षात्कार के लिए कॉल लेटर आ गया, तोपखाना बाजार के प्रसिद्ध दर्जी से लाइट ग्रे शर्ट व गहरी काली पैंट सिलाई करवा, काले शूज और बेल्ट ले मैंने तैयारी कर ली। सीओ साहब ने बुलाकर साक्षात्कार में कुछ बातें ध्यान में रखने को कहा। पहला आपका ज़बाब अगले प्रश्न की कड़ी बनता है, उसे अपनी पकड़ के दायरे में रखना, दूसरा साक्षात्कार आपका व्यक्तित्व जानने को होता है ना कि आपका ज्ञान। तीसरा भाषा वो इस्तेमाल करना जिसमें आपकी अच्छी पकड़ हो। और सबसे महत्वपूर्ण सफलता के लिए सच्चा व्यक्तित्व जरूरी है, बनावटी नहीं। एसएसबी इंटरव्यू के लिए रेलवे स्टेशन पर रिसेप्शन सेंटर पर लगी बस में बैठते वक्त दूसरों का सामान उठा मदद करते हुए कैंडिडेट

अपना हेल्पफुल नेचर दिखा रहे थे। इंटरव्यू कैंपस में पहुंचने पर सामान गाड़ी से उतार एक साइड में रख सभी एक हॉल में बैठे जहां हमारा स्क्रीनिंग टेस्ट शुरू हुआ जो 5 दिन के एसएसबी इंटरव्यू का छोटा रूप था। करीब 1 घंटे के टेस्ट के बाद हमें नतीजा बता दिया गया जिसमें करीब 400 में से 350 को रिजेक्ट कर वापस जाने का आदेश दे दिया। रेलवे स्टेशन से आते वक्त दिख रही हेल्पफुल नेचर अभी बिल्कुल गायब थी। करीब 50 सिलेक्टेड कैंडिडेट, जिनमें मैं भी एक था, हमें बैरक्स में भेज अगले दिन की रूटीन के बारे में बता दिया गया। अगले 4 दिन में अलग-अलग पैमानों पर परखने के अलावा मुख्य साक्षात्कार हुआ। अपनी बारी पर मैं अच्छी तरह ड्रेसअप हो इंटरव्यू रूम में पहुंच सामने बैठे अधिकारियों को नमस्कार कर हर प्रश्न का उत्तर अपनी पकड़ के दायरे में रख सच्चाई से देने का मन बना लिया। मैंने शुरू में अंग्रेजी में जवाब देते हुए उनको बता दिया कि श्रीमान मैं साक्षात्कार में हिंदी भाषा बोलना चाहता हूं क्योंकि अंग्रेजी भाषा में मेरी पकड़ इतनी अच्छी नहीं और हो सकता है कि भाषा पर कमजोर पकड़ की वजह से मेरे ज़बाब के अर्थ गलत प्रस्तुत हो। उन्होंने मेरा हौसला अफजाई करते हुए कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है और इसमें बात करना हमारे लिए गर्व की बात है। कुछ प्रश्नों के ज़बाब, जो मेरे सच्चे व्यक्तित्व के प्रमाण थे, जैसे मेरे रोल मॉडल के बारे में प्रश्न, जिसमें मैंने कहा मेरे रोल मॉडल मेरे पिताजी हैं, जो खेती-बाड़ी कर हमारे पूरे परिवार को अच्छी शिक्षा और जिंदगी में सच्चाई के पथ पर चलने के लिए कहते हैं। मेरे पिताजी में एक काबिलियत है कि पशुओं की बीमारी का वह देसी नुक्ते से इलाज करते हैं और दूर-दूर तक के गांव से लोग उनसे सलाह-मशवरा और दवाई लेने आते हैं। बिना किसी लोभ-लालच के वह रात दिन लोगों की मदद के लिए तैयार रहते हैं। मुझे पूछा गया पिताजी के अलावा दूसरा आदमी, जिससे मैं प्रभावित हूं तो मैंने बताया कि मेरे गांव के रास्ते में आम के पेड़ के नीचे बैठा मोची, जो चत्रु के नाम से मशहूर है, सारा दिन गरीब अमीर छोटे-मोटे सबके जूते बनाता है और उसमें एक खासियत है कि उसके बनाये जूते जंगल, खेत, पानी में इस्तेमाल से ख़राब नहीं होते और न ही उसमें से कभी कांटा या कील पार होती। उनके प्रसिद्ध व्यंजन के बारे में पूछने पर मैंने जैसे ही बताया कि मक्की की रोटी तो सामने से उन्होंने कहा कि साथ में सरसों का साग, तब मैंने कहा सर मक्की की रोटी और सरसों का साग तो हर उत्तर भारतीय का पसंदीदा व्यंजन है पर मुझे मजा मक्की की रोटी के साथ पल्दा, जो कि लस्सी

में थोड़ी हल्दी, नमक, मिर्च डालकर गर्म करने से ही बन जाता है, मक्की की रोटी को उसमें मैश करके खाने में अलग ही स्वाद आता है। मेरी सादी व सच्ची बातें सुन वो प्रभावित हुए। मुझे अंग्रेजी भाषा पर पकड़ मजबूत करने की बात कर जाने को कहा। एस एस बी साक्षात्कार में अतिआवश्यक बात होती है पि आई क्यू यानि पर्सनल इंफॉर्मेशन क्वश्चनीयर मतलब प्रश्न पत्र,अगर इसे सच्चाई से भरा होगा तो इंटरव्यू में कोई दिक्कत नहीं आती क्योंकि हर प्रश्न उसी पर आधारित होता है।

अध्याय-13

चाहें गलतियाँ हों पर कुछ न कुछ जरूर करें

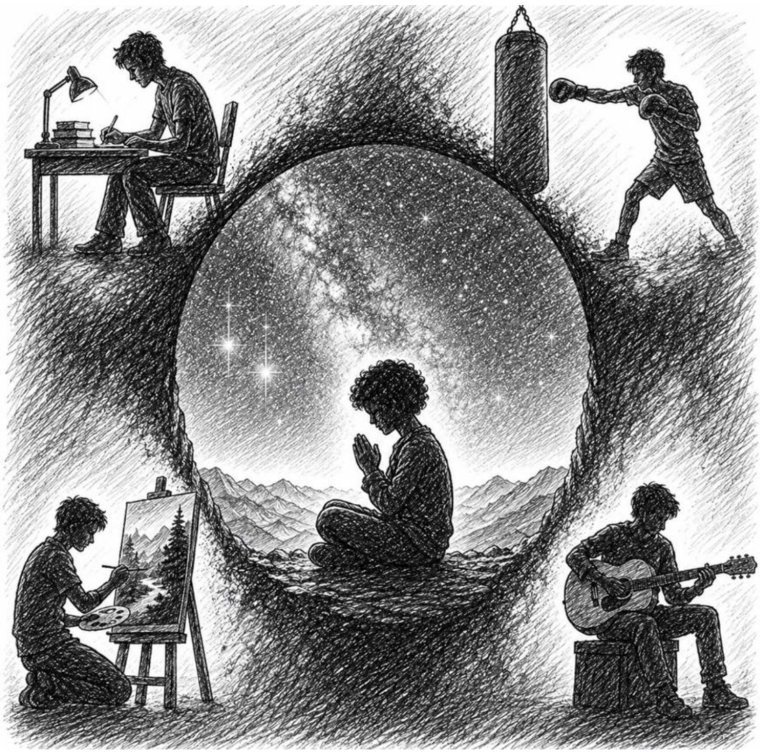

जिंदगी में त्रुटिरहित के इन्तजार में कुछ भी ना करने से अच्छा है कुछ त्रुटीपूर्ण ही करना।

एसएसबी इंटरव्यू में पास एवं भारतीय सेना में अधिकारी ट्रेनिंग के लिए सिलेक्शन का कॉल लेटर मिलने पर मैंने इंडियन मिलिट्री अकादमी यानी आई एम ए देहरादून में रिपोर्ट किया। बर्फ के पहाड़ों से घिरी इस

अकादमी में देश के हर कोने से आए युवा अधिकारी बनने की ट्रेनिंग लेते हैं। इंडियन मिलिट्री एकेडमी में अधिकारियों का ट्रेनिंग के दौरान एक लयबद्ध तरीके से सर्वांगीण विकास होता है, जिसमें शारीरिक व मानसिक तौर पर सुदृढ़ एवं सक्षम बनाने के साथ-साथ रहन-सहन तथा व्यवहार के बारे में भी सिखाया जाता है। कैडेट, जिस कमरे में रहता है, उस कमरे का रख-रखाव जैसे बेड लगाना, ड्रेसिंग टेबल व अलमारी के हर सामान तथा स्टडी टेबल में पेन्सिल, कॉपी, किताब आदि को सलीके से रखना। कमरे से बाहर यहाँ तक कि बरामदे में भी प्रॉपर गौउन में आना। ब्रेकफास्ट, लंच, डिनर के दौरान अच्छी तरह ड्रेस अप होकर मैस में टेबल मैनर्स, जिसमें भोजन के विभिन्न हिस्सों या कोर्स के बारे में जानना और उसके अनुसार कटलरी का इस्तेमाल करना, खाना खाते वक्त टेबल पर बैठे सीनियर और जूनियर के मुताबिक व्यवहार आदि। दूसरा शारीरिक या फिजिकल ट्रेनिंग, जंगल में सर्वाइवल अभ्यास, नक्शा पढ़ना और उसके हिसाब से मार्च करना, विभिन्न किस्म के हथियारों के फायर व मैंटनैस के बारे में जानना तथा युद्ध तकनीक आदि। ट्रेनिंग का तीसरा महत्वपूर्ण हिस्सा था हर शाम को स्टडी पीरियड के बाद सभागार में इकट्ठा होकर दो घंटे के लिए सारे जूनियर एवं सीनियर कैडेट्स का अपनी बारी के अनुसार तीन भाषाओं में, जिसमें हिंदी व अंग्रेजी कंपलसरी तथा इच्छा अनुसार तीसरी भाषा में किसी भी टॉपिक पर कम से कम 5 से 10 मिनट बात करना। जैसे-जैसे कैडेट सीनियर होते जाते हैं, टॉपिक भी ज्यादा महत्वपूर्ण व रूचीपूर्ण होता जाता है। धीरे-धीरे कैडेट अपना समय लाइब्रेरी में युद्ध, मनोरंजन, फिक्शन, टरू स्टोरी, ऐतिहासिक, कल्चलरल व अन्य साहित्य की किताबों को पढ़ने में बिताना शुरू कर देते हैं। इसके अलावा सप्ताह में दो बार शाम को 3 घंटे के लिए हर कैडेट अपनी इच्छा से चुने हुए क्लब में समय व्यतीत करता है, जिसमें गाना बजाना, पेंटिंग, फायरिंग, घुड़सवारी, तलवारबाजी, पर्वतारोहण, गोल्फ, पोलो एवं कराटे इत्यादि हर तरह के ऑप्शन होते थे। मीड टर्म ब्रेक के दौरान देश की अलग-अलग संस्थाओं और स्थानों पर जाकर वहां के बारे में जानकारी हासिल करना होता था। मेरे अलावा अन्य हिमाचली युवा, जिन्होंने अपना बचपन पहाड़ी क्षेत्र में बिताया था, उन्हें शारीरिक या फिजिकल तथा दूसरी चीजें सीखने में कोई मुश्किल नहीं हुई पर जो थोड़ी दिक्कत थी, वे थी बात करने का लहजा। बात करते वक्त ज्यादातर उत्तर भारतीय भारी और ऊंची आवाज में हर बात पर दबाव और प्रेशर बना कर

बोलते हैं जिस कारण शब्द की परन्सियेशन व टोन बदल जाती है और उसकी वजह से अन्य युवाओं के लिए हँसी का पात्र बन जाते हैं। ट्रेनिंग के दौरान, इसी कारण डिबेट या वाद-विवाद प्रतियोगिता में हिस्सा लेते वक्त मुझे टोन की वजह से रिजेक्ट कर दिया जाता था। एक बार डिबेट के लिए कैडेट सेलैक्शन के दौरान टॉपिक का अच्छा ज्ञान होने के बावजूद सिर्फ टोन की वजह से मैंने हिस्सा लेने से मना कर दिया। तब मुझे अंग्रेजी के प्रोफेसर ने बताया कि जिंदगी में त्रुटिरहित कुछ भी ना करने से अच्छा है कुछ त्रुटी पूर्ण ही करना। उन्होंने मुझे टोन व भाषा को एक सभ्य, सिविलाइज्ड और सॉफ्ट तरीके से व्यक्त करने के लिए जीव्हा की एक्सरसाइज करने का तरीका बताया जिसके लिए मैं दिन में दो घंटे के लिए शीशे के सामने मुंह में छोटे पत्थर और पानी लेकर जोर-जोर से न्यूज़ पेपर को पढ़ता था, शुरु में तो ये मुश्किल था पर थोड़े अभ्यास के बाद, आवाज और भाषा में समता और सौफ्टनैस आ गई। उसके बाद मैंने डिबेट, डिक्लेमेशन के अलावा हर तरह के कम्पीटीशन में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। मुझे एक बात समझ आ गई थी कि कोई चीज करने के लिए परफैक्शन या फलालैस होने तक का इंतजार करने से अच्छा है कि थोड़ी बहुत ग़लती के साथ करना शुरू कर देना।

अध्याय-14

जिंदगी में कभी किसी को कम ना आंकें

जिंदगी में कभी किसी को कम ना आंकें। सुई और तलवार दोनों की अपनी महत्ता है।

इंडियन मिलिट्री एकेडमी में सभी ट्रेनिंग करने वालों को जैंटलमैन कैडेट या 'जी सी' कहा जाता है। यहां ना केवल शारीरिक अभ्यास बल्कि मानसिक विकास भी होता है, कठिन ट्रेनिंग में मन लगाए रखने के लिए हास्य विनोद की बातें चलती रहती हैं, ट्रेनिंग के दौरान पेट दर्द का बहाना बनाते अगर

कोई कैडेट अंग्रेजी में उस्ताद को कहे कि उस्ताद आज "स्टमकैक" है तो ज़बाब मिलना कि स्टमक एक हो या दो जब कह दिया कि जी सी रोलींग करेगा तो करेगा। ड्रिल मैदान में इन फ्रंट आफ बिहांईड चेटवुड को बिना अंग्रेजी ग्रामर में ध्यान दिए अक्सर सुना जाता है। आई एम ए ट्रेनिंग का एक बहुत ही अहम हिस्सा जंगल कैंप व रूट मार्च है। एक स्तर, जो छः महीने का होता है, उसके अंत में जंगल ट्रेनिंग, जिसमें पूरी की गई ट्रेनिंग का प्रैक्टिकल के रूप में निचोड़ होता है, जंगल कैंप को रूट मार्च के साथ खत्म किया जाता है और रूट मार्च की मुश्किल एवं दूरी कैडेट की सनियोरिटी के साथ बढ़ती जाती है। आखिरी दो टर्म के जंगल कैंप व रूट मार्च बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं और इनमें शामिल होना हर जी सी के लिए मैंडेटरी होता है और इसमें सीखी बातें ना केवल अफसर बनने के बाद बल्कि सिविल जिंदगी में बहुत काम आती हैं। आखिरी रूट मार्च एक कंम्पीटीशन के तौर पर होता है जिसमें प्रथम आने वाले को ईनाम के तौर पर ट्राफी के साथ-साथ कुछ पांईटस दिये जाते हैं जो कैडेट की मैरिट में सुधार लाते हैं और उसी आधार पर मनपसंद कोर या रैजीमैंट मिलने के आसार बढ़ते हैं। रूट मार्च को आठ से दस कैडट के समूह या सिंडीकेट में किया जाता है, हर सिंडिकेट में उनकी रक्षा के लिए जरूरी हथियार, बारूद, पीने के लिए पानी तथा सर्वाइवल के लिए बेयर मिनिमम चीजें देकर छोड़ा जाता है, आखिरी रूट मार्च करीब साठ किलोमीटर का होता है, जो एक बार रास्ता भटकने या भूलने से दस किलोमीटर बढ़ जाता है, इस दौरान कैडेट्स को जंगल, नदी, पहाड़, खेत, नालों व मुश्किल दर्रों से गुजरना होता है। स्टार्टिंग पॉइंट से फिनिशिंग पांइट यानी आईएमए के बीच में 4 से 5 रिपोर्टिंग पॉइंट बनाए जाते हैं, जिससे हर सिंडिकेट की पोजीशन का पता चलता रहे। हिमाचली कैडेट, जिन्हें जंगल, नदी, नालों व दर्रों का बचपन से ही अच्छा अनुभव होता है, रूट मार्च के दौरान सिंडिकेट के लिए सबसे ज्यादा डिमांड में रहते हैं। इस अभ्यास का चयन पूर्णिमा और अमावस के बीच के दिनों में किया जाता है ताकि कैडेट्स चांदनी में कुछ देर तारों की मदद से चलने के बाद अंधेरी रात में नदी व पहाड़ियों तथा नालों की लय से रास्ता पढ़ने एवं दिशा का अंदाजा लगाने का अनुभव ले सकें। हमारे फाइनल टर्म के रूट मार्च से ठीक पहले हम में से कुछ लड़कों को सिंडिकेट लीडर बना कर हमें अपनी पसंद के आठ लड़के चुनने को कहा गया। हर लीडर ने बढ़िया ग्रुप बनाने के उद्देश्य से इंटैलीजैंट, जो मैप पढ़ना जानते हों तथा ताकतवर, जो रात को

सामान कैरी करने में सक्षम हों, उन्हीं कैडेट को चुना। कुछ कमजोर एवं पढ़ने में ज्यादा ध्यान न देकर हँसी-मज़ाक करने वाले कैडेट्स को किसी ने नहीं चुना। तब उस्ताद ने सारे सिंडिकेट में दो इन्टैलिजैंट, दो बलशाली, दो कमजोर एवं दो मजाकिया कैडेट्स का ग्रुप बनाते हुए कहा कि एक बात याद रखना कि जिंदगी में कभी किसी को कम मत आंकना, सुई और तलवार दोनों की अपनी महत्ता है। रूट मार्च के दौरान उस्ताद की बात प्रमाणित हुई और हमें यह सीखने को मिला कि कभी भी अकेला कैडेट अपने बल पर इस रूट मार्च को कंप्लीट नहीं कर सकता। रास्ते में दर्रे से गुजरने के लिए पहाड़ी की चोटी पर पेड़ से रस्सी बांधने का काम सिंडीकेट का सबसे कमजोर और हल्का कैडेट, जिसे ताकतवर अपने कन्धों पर उठाता था, पहले जाता था, मैप देखना और उस तरह से जमीन को पढ़ना सबसे इंटेलिजेंट कैडेट करता था और चलते-चलते जब ऊब जाते तो कोई ना कोई मजाकिया या फिर गाना गाने वाला कैडेट हौसला बढ़ाता था। करीब 15 से 20 घंटे का रूट मार्च, जिसमें अमूमन हर सिंडिकेट 60 से 70 किलोमीटर का रास्ता, रात और दिन में तय करता है, वो यही सिखाता है कि कोई किसी से कमजोर नहीं, हर आदमी की अपनी महत्ता है, जिंदगी में बड़े लक्ष्य अकेले नहीं बल्कि मिलकर हासिल होते हैं।

अध्याय-15

काम वह करें, जिस पर सबको नाज़ हो

अधिकारी प्रशिक्षण की आखिरी कड़ी में सभी जेंटलमैन कैडेट को पासिंग आउट परेड में हिस्सा लेना है, जिसका आयोजन गणतंत्र दिवस में लाल किले से दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाली परेड के समान भव्य होता है। इस परेड की तैयारी करीब एक से डेढ़ महीने तक की जाती है। इस परेड के दौरान जोश, समन्वय एवं तालमेल का अनूठा संगम देखने लायक होता है, पेरेंट्स के अलावा हर कैडेट के कम-से-कम पाँच सगे संबंधियों या पहचान वालों को आयोजन में अतिथि के तौर पर बुलाया जाता है, जबकि भारत के राष्ट्रपति स्वयं ही ज्यादातर मौकों पर इस भव्य समारोह के मुख्य अतिथि होते हैं। फौजी बैंड की धुन पर की जाने वाली परेड का समापन चैटवुड हॉल के एक दरवाजे पर उकेरे शब्द अंतिम पग को लांघने से होता है, जिस तक पहुँचना

हर कैडेट का ट्रेनिंग के पहले दिन से सपना होता है। जैसे ही कैडेट्स अंतिम पग की तरफ बढ़ते हैं, तो हवाई जहाज से उनपर फूल बरसाए जाते हैं। इस नजारे एवं सम्मान से हर कैडेट अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता है। अंतिम पग पार करते ही सभी कैडेट्स परेड में इस्तेमाल हुए हथियारों को संबंधित जगह पर जमा करवाकर 'शपथ समारोह (कसम परेड)' के लिए पहुँचते हैं, आग, पानी और वायु हर जगह और हर स्थिति में देश को सर्वोपरि रखकर सेवा करने की कसम खाते हैं। इसके बाद का आयोजन हर कैडेट और उनके परिवार के लिए अविस्मरणीय होता है, एक ऐसा पल जिसे मुल्क का हर नौजवान जीना चाहता है, ऐसा पल जिसको अनुभव करने का मौका सेना में अधिकारी बनने वाले नौजवानों के अलावा और किसी को भी नसीब नहीं होता, चाहे वो प्रशासनिक अधिकारी हो, वैज्ञानिक हो, बिजनेसमैन, खिलाड़ी, राजनेता हो या अभिनेता। जब कैडेट्स के माता-पिता उनके कंधों पर सितारे लगाकर उन्हें भारतीय सेना में अधिकारी बनाकर भारत माता की सेवा का आशीर्वाद देते हैं और बदले में नया बना अधिकारी अपने माता-पिता को पहला सैल्यूट करता है, इस पल में लगभग हर अधिकारी और उसके पेरेंट्स की आँखों में खुशी के आँसू होते हैं और शायद हर माँ-बाप अपने बच्चे पर गर्व महसूस कर रहे होते हैं। हिमाचली युवाओं और सेना का एक विशेष रिश्ता है, अगर हम अपने आस-पड़ोस में देखें, तो हर घर में एक सैनिक मिलेगा और ज्यादातर सैनिक यहाँ सेना में सिपाही या सूबेदार हैं और उन्होंने अपने सेवाकाल के दौरान अधिकारी बनने की परेड एवं समारोह को अक्सर देखा होता है और यक़ीनन मन-ही-मन में अपने बेटे को इस जगह कंधे पर सितारे लगाकर सैल्यूट मारने का सपना देखा होगा। सिपाहियों और सूबेदारों के साथ चर्चा के दौरान मैंने अक्सर सुना है कि 'साहब, भगवान ने चाहा तो जब मैं अपने बेटे को सितारे लगाऊँगा, तो उससे पहले मैं उसको सैल्यूट करूँगा', 'साहब, अपने बेटे को सैल्यूट करने का जो आनन्द है उसे सिर्फ एक पिता ही समझ सकता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि पुराने समय से ही हिमाचली युवाओं की पहली पसंद सेना में सेवा करना रहा है। भूतकाल में हमारे परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने तथा शिक्षा के पर्याप्त संसाधन एवं अधिकारी बनने के लिए जरूरी ज्ञान न होने की वजह से कैलिबर और टेलैंट होने के बावजूद भी हिमाचली सेना में अधिकारी बनने के बजाय सिपाही बनते थे। पर आज समय बदल गया है आर्थिक-स्तर पहले से कहीं बेहतर है तथा सीबीएसई एवं आईसीएसई माध्यम की शिक्षा के

विद्यालयों के शहर, गाँव व हर नुक्कड़ तक पहुँचने से लगभग सारे देश की शिक्षा-प्रणाली एक सी होने के साथ-साथ उच्च दर्जे की हो गई है। इस कारण अब शहर व गाँव तथा अमीर व गरीब की शिक्षा एवं उनके ज्ञान में ज्यादा फर्क नहीं है। मोबाइल व इंटरनेट की जगह-जगह पहुँच के कारण हर परीक्षा, उसकी योग्यता एवं तरीके की जानकारी आसानी से प्राप्त की जा सकती है। इसलिए, आज के दौर में सेना में अधिकारी बनने की इच्छा रखने वाले बच्चों के लिए इस लक्ष्य को हासिल करना ज्यादा मुश्किल नहीं है, जरूरत है तो बस सही रास्ता चुनकर मेहनत करने की। मेरा मानना है कि वर्तमान में सेना में अधिकारी बनना सिपाही बनने से ज्यादा आसान है। ऐसे में, अगर हमारे युवा अब सिपाही बनने के बजाय अधिकारी बनने की कोशिश करें, तो वे सेना में शामिल होने की पारिवारिक परम्परा के साथ अपने पेरेंट्स को ज्यादा गौरवान्वित महसूस करवा सकते हैं।

अध्याय-16

आप सपने को नहीं, सपना आपको चुनता है

ट्रेनिंग समापन पर अपनी योग्यता, मेरिट और इच्छा के अनुसार हर कैडेट भारतीय सेना के अलग-अलग दस्तों में अधिकारी बनकर जाता है। आई एम ए में हासिल किया गया प्रशिक्षण अति आवश्यक व अनिवार्य होता है, पर अधिकारी बनने पर 'फाइटिंग आर्म' यानी 'लड़ाकू दस्ते', 'सपोर्टिंग आर्म' यानी 'सहायक दस्ते' एवं ''टेक्निकल आर्म' यानी 'तकनीकी दस्ते' जैसे इन्फेंट्री, आर्टिलरी,आर्म्ड जैसे लड़ाकू दस्ते, ऑर्डिनेंस, ए एस सी जैसे सहायक दस्ते तथा इंजीनियर, सिग्नल जैसे टेक्निकल दस्तों में अधिकारियों को उनके काम के आधार पर आगे का प्रशिक्षण दिया जाता है। हर यूनिट में कल्चर तथा रिवाज के हिसाब से पहले महीने नए अधिकारी को एक सिपाही से लेकर सूबेदार मेजर तक के सारे काम करवाए जाते हैं, उसी के

बाद उसको अधिकारी के रूप में कार्यभार सौंपा जाता है। मुझे भी एक महीने इस सारी प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। शुरुआत में जब सिपाही के काम के बारे में सिखाया जा रहा था, तो एक बड़ी ही रोचक घटना मेरे साथ हुई जिसने मुझे बहुत कुछ सिखाया। मैं सिपाही के तौर पर रात को 10 से 12 बजे की नाइट ड्यूटी खत्म कर जैसे ही अगले संतरी को जगाने के लिए गया, तो मुझे बताया गया कि वह बीमार हो गया है। मुझे यूनिट एरिया का ज्यादा पता न होने के कारण दूसरा सैनिक उसको लेकर डॉक्टर के पास चला गया तथा पीछे से गार्ड चेक करने के लिए एक सूबेदार आ गया। उसने सारी रात मुझे हर पोस्ट पर कैसे तैनाती की जाती है उसकी परीक्षा ली। उसने मुझे सैनिक को ड्यूटी के दौरान आने वाली मुश्किलों और ध्यान में रखने वाली बातों से अवगत कराया। करीब 20 दिन तक यूनिट रूटीन सीखने के बाद मुझे बॉर्डर पर भेज दिया गया, जहाँ पड़ोसी देश के सैनिकों की दिनचर्या के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। बॉर्डर पर सब अधिकारी, सूबेदार एवं सिपाही अपने-अपने बंकर में रहते हैं तथा पड़ोसी सीमा पर तैनात सैनिकों पर नजर रखते हैं। ऐसे समय में नए अधिकारी को सेना से संबंधित एवं अन्य विषयों पर आधारित किताबें पढ़ने का बहुत समय मिलता है, इसी दौरान 'रॉबर्ट एच स्कलर"' नामक लेखक की किताब में मैंने पढ़ा कि इस दुनिया में जो भी कोई सपना देखता है वह सपना अचानक या एक दिन का नहीं होता और केवल उस व्यक्ति का नहीं होता, बल्कि उस सपने का जन्म, प्रकृति या भगवान के द्वारा एक पूरी प्रक्रिया के बाद एक व्यक्ति विशेष में होता है। सपने का संबंध व्यक्ति के परिवार के किसी-न-किसी सदस्य से जुड़ा होता है। इस बात को पढ़ने से मुझे भी अचानक मेरी माँ की वह बात याद आई जब वह मेरे कंधे पर अधिकारी के स्टार लगा रही थी। तब उन्होंने बताया था – "बेटा, हमारे हिमाचल में ज्यादातर लोगों के सेना में सिपाही होने के कारण जब भी कोई अधिकारी बनता है, तो उसके अधिकारी बनते ही पूरे गाँव में एक जश्न मनाया जाता है, उसे बैंड-बाजे के साथ पूरे गाँव में लाया जाता है और धाम (पहाड़ी दावत) के रूप में पूरे गाँव, पड़ोसियों तथा रिश्तेदारों को जलपान करवाया जाता है। यह पूरे गाँव के लिए ही एक बड़े गौरव की बात होती है"। माँ ने बताया – "जब तू छोटा था, तो ऐसे ही सेना में एक अधिकारी हमारे गाँव से बने थे और उसके स्वागत के दौरान जब सब लोग उनको हार पहना रहे थे, तो मैंने भगवान से मन्नत माँगी थी कि अगर मेरा बेटा भी बड़ा होकर सेना में अधिकारी बनेगा, तो मैं भी इसी तरह से सारे गाँव को धाम

तथा बेटे का हार पहनाकर स्वागत करूँगी। इसलिए, कॉलेज टाइम में जब तूने सेना में जाने की बात कही, तो मुझे कहीं-न-कहीं लगा कि तुम मेरा सपना पूरा करोगे पर अपनी आर्थिक स्थिति तथा क्षमता को देखते हुए मैंने अपने सपने को तेरे साथ साझा नहीं किया। पर आज जब तुम अधिकारी बने हो, तो मुझे लगता है कि भगवान ने मेरी सुन ली"। तब मैंने बहुत सारे लोगों के सपनों और सफलता को जोड़ा और पाया कि हर माँ-बाप अपने बच्चों के लिए मन्नत माँगते हैं और सपना देखते हैं, प्रकृति या भगवान उसी सपने के लिए उचित व्यक्ति को चुनता है और उसको हासिल करने की ताकत देता है। हर मन्नत के साथ एक सपने का जन्म होता है और वह सपना उसको पूरा करने वाले काबिल इंसान को खुद चुनता है।

अध्याय-17

असहमति पर प्रश्न करने का साहस जुटाएँ

बॉर्डर पर सैनिकों के साथ फौज के बारे में जानकारी हासिल करने के साथ-साथ दुश्मन देश की ताकत और कमजोरी के बारे में भी तजुर्बा हासिल किया जाता है। इसी दौरान एक सूबेदार साब ने अपनी नौकरी के तजुर्बे से एक बात कही – "साहिब, याद रखना कि अगर सेना में तरक्की करना चाहते हो, तो कभी भी मुँह मत खोलना, जो भी हुकुम दिया जाए, बस 'यस सर' कह कर आगे बढ़ जाना। यह करने से आप सेना में ही नहीं बल्कि सेवानिवृत्ति के बाद सिविल लाइफ में भी कामयाब रहोगे"। उसकी बात मैंने ध्यान से सुनी औरअपने जेहन में बैठा ली। कुछ दिनों बाद यूनिट के एक मेजर साहब से बातों-बातों में मैंने इसका जिक्र किया, तो उन्होंने कहा कि जब आपको

कोई हुक्म दिया जाता है तो पहले उसपर अमल करना, बाद में अगर आपको लगे कि यह गलत था तो प्रश्न करना। सूबेदार और मेजर साहब, दोनों की बातों में काफी हद तक फौज में नौकरी करने का गुर या तरीका समाया हुआ था। न जाने क्यों पर मैं उनके इन सुझावों व सीखों से पूरी तरह सहमत नहीं था। एक दिन सीनियर अधिकारी से चर्चा करते हुए मैंने इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने मुझे बड़े ही विस्तार से इसका जवाब दिया जो कि जिंदगी में हर वक्त और हर मोड़ पर काम आने वाला है। उन्होंने बताया कि फौज में जब भी आपको किसी तरह का हुकुम मिलता है, तो उसका पालन करना आवश्यक होता है पर किसी भी बात को बिना सोचे-समझे मानने से इसके परिणाम क्या होंगे इसके बारे में सोचना भी अति आवश्यक है, अगर बात देश के हित में न हो तो उसपर प्रश्न करना बड़ा ही जायज़ है। उन्होंने एक और बात कही कि दुनिया में अगर अलग पहचान बनाना चाहते हो, तो प्रश्न करने का साहस जुटाना पड़ेगा। उन्होंने एक उदाहरण देकर समझाया कि आम आदमी एक सेब या आम के पेड़ के नीचे जाकर खड़े हो जाते हैं और जैसे ही सेब गिरता है, उसे उठाकर खा लेते हैं। पर एक इंसान ने जब सेब गिरा, तो प्रश्न पूछना शुरु किया कि सेब नीचे गिरने के बजाय ऊपर की तरफ क्यों नहीं गया? हल्के-फुल्के घास-फूस नीचे जाने के बजाय हवा के साथ क्यों उड़ जाते हैं? उनके इस प्रश्न पर उस जमाने के हर व्यक्ति ने उनका मजाक उड़ाया और व्यर्थ के प्रश्न पूछकर समय बर्बाद करने के लिए उन्हें बेवकूफ कहा, पर वो व्यक्ति आज न्यूटन के नाम से मशहूर हैं। उन्होंने गुरुत्वाकर्षण बल की खोज की। उनकी इस बात से यह साफ हो गया कि हर बात को बिना प्रश्न किये मान लेने से आप सामान्य तरक्की पाकर एक आम जिन्दगी व्यतीत कर सकते हैं पर कुछ खास हासिल करने के लिए, जिससे सदियों तक आने वाली नस्लें आपको याद रखें, उसके लिए जहाँ सहमति न बने वहाँ प्रश्न करना अति आवश्यक है। जब सिद्धार्थ ने जन्म, जवानी और मृत्यु पर प्रश्न किया, तो लोगों ने उसे पागल समझा पर वो महात्मा बुद्ध बन गए। जब भीमराव ने भारत की जाति-प्रथा तथा ऊँच-नीच पर प्रश्न किया, तो वो बाबा साहब अंबेडकर बन गए। मोहनदास ने अंग्रेजों के शासनकाल पर प्रश्न किया, तो वे महात्मा गाँधी बन गए। मार्टिन ने काले-गोरे के भेदभाव पर प्रश्न किया, तो मार्टिन लूथर किंग बन गए। इनलोगों ने सफलता की उस पराकाष्ठा को छुआ कि आज भी लोग उन्हें याद करते हैं। इन सब उदाहरणों से यह तो भलीभांति साफ हो गया है कि जब हम सदियों

से आ रही किसी भी तरह की संस्कृति, धर्म, जाति, रंग और मान्यता पर अपने संयम और विवेक से प्रश्न करने का साहस करते हैं, तो इससे जिंदगी में आपके लिए नए आयाम स्थापित होते हैं। जब भी हम बच्चे के किसी प्रश्न पर कहते हैं कि बेटा चुप रहो, ऐसा नहीं कहते, ऐसा नहीं पूछते, सदियों से ऐसा ही होता है और आप प्रश्न न करो, तो मुझे लगता है कि इससे हम अपने बच्चों को दब्बू बना रहे हैं, उनके पंख कतरकर उनकी उड़ान में बाधा बन रहे हैं। हमें अपने बच्चों को तथा आने वाली पीढ़ी को प्रश्न करने का साहस जुटाने की प्रेरणा देनी चाहिए, उनके हर प्रश्न का उत्तर देना चाहिए और अगर वे संतुष्ट न हों, तो उन्हें चुप रहने के बजाय सही जवाब ढूँढ़ने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करें। इससे हमारा समाज एवं दुनिया और भी बेहतर बनेगी तथा बच्चे कोचिंग व अन्य सहारे के बिना ही बड़ा लक्ष्य हासिल करेंगे।

अध्याय-18

कॅरियर में सफलता के लिए प्लानिंग जरूरी

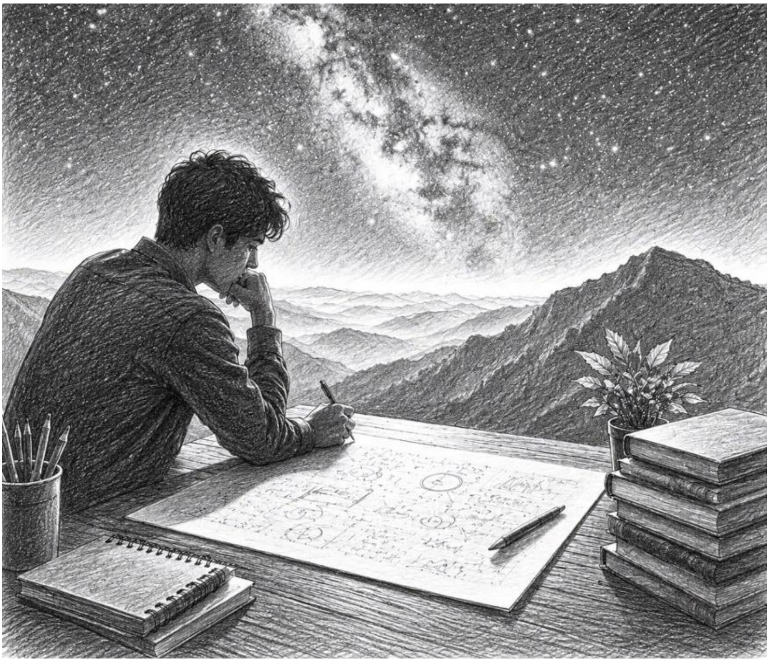

सही दिशा एवं योजनाबद्ध मेहनत से हासिल होते हैं बड़े लक्ष्य... सेना में सेवाकाल के दौरान ज्यादातर मौके ऐसे होते हैं जब आपको मौसम और हालात को ध्यान में रखते हुए बॉर्डर की रक्षा करने के लिए ऐसे स्थान पर रहना पड़ता है जहाँ आपके साथ सिर्फ कुछ सैनिक होते हैं तथा दूर-दूर तक कोई गाँव, मकान, बाजार, बिजली, पानी कुछ भी नहीं होता। दिये हुए काम को करने तथा साथी सैनिकों संग हँसी-मज़ाक के अलावा बंकर या अधिकारी के लिए लगे टेंट में समय सिर्फ किताबों के साथ ही व्यतीत होता है। यहाँ

अधिकारी फौज के अलावा हर तरह की किताबें पढ़कर देश, धर्म, संस्कृति के साथ-साथ इतिहास की प्रसिद्ध हस्तियों एवं व्यक्तित्व के बारे में जानकारी हासिल करते हैं। ऐसी ही एक पोस्टिंग के दौरान एक शाम सभी बंकरों का मुयायना करने के बाद हेडक्वार्टर में ओके रिपोर्ट देकर मैं बैठा ही था कि मुझे खबर मिली कि नजदीक वाली पहाड़ी पर बसे गाँव में एक नामी आतंकवादी हर जुम्मे के दिन आकर गाँव के लोगों से बात करता है। उस दिन बृहस्पतिवार था, तो पता चलते ही मैंने सूबेदार को बुलाकर टीम को तैयार होने का हुक्म दिया। हम उसी रात गाँव की तरफ निकल गए और सुबह पूरे गाँव को हमने घेर लिया। अज़ान पर लोग मस्जिद की तरफ आने लगे। मैंने देखा कि नमाज अदा करने के बाद दो-तीन आदमी बाहर चिनार के पेड़ के नीचे इकट्ठा होने की बात कर रहे थे, शायद वहाँ पर आतंकवादी सरगना लोगों के साथ बात करने वाला था। जैसे ही लोग इकट्ठा होने लगे, हम उस जगह पर पहुँच गए और आंतकवादी को सरेंडर करने की बात कही। इसपर गाँव का मुखिया बाहर आया और बोला कि आप घरों की तलाशी ले सकते हैं, यहाँ कोई भी नहीं है। गाँव में हर आदमी को चेक करने के बाद भी हमें कुछ भी न मिलने पर खाली लौटना पड़ा। वापस आकर जब हम खबर की सच्चाई एवं ऑपरेशन के असफलता के बारे में चर्चा कर रहे थे, तो एक सूबेदार ने कहा कि साहब कोई भी काम बिना सही प्लानिंग और उसके तह तक जाए बिना करने से सफलता नहीं मिल सकती। जैसे ही आपको खबर मिली, आप उसी वक्त बिना सोचे-समझे, ऑपरेशन के लिए निकल गए। हम खुशकिस्मत हैं कि हमें कोई नुकसान नहीं हुआ। इसमें कोई दो राय नहीं कि वहाँ पर वह सरगना आता होगा और आज सुबह हमारा कोर्डन देख निकल गया होगा। अगर हम इस खबर के बाद सही प्लानिंग व पेशेंस से काम करते, तो परिणाम कुछ और होता। टेंट में पहुँचकर सूबेदार और किताबी बातों को ध्यान से सोचा, तो इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जिंदगी में बिना सोचे-समझे किसी भी लक्ष्य की तरफ बढ़ने से सफलता या फायदा कम और नुकसान ज्यादा होता है। इसके बाद हमने सही प्लानिंग की और उस गाँव पर हफ्तों तक खुफिया तरीके से निगरानी रखी। वहाँ के लोगों के व्यवहार को समझा और उनसे दोस्ती की तथा तसल्ली से मौके का इंतजार कर अपना लक्ष्य पाया। इस तजुर्बे को अगर छात्र जीवन के संघर्ष से जोड़ें, तो मेरा मानना है कि अगर हमें जिंदगी में कुछ करना है तो सबसे पहले

दिमाग में ये बिठाना होगा कि मैं यह कर सकता हूँ। दूसरा,अभिवाभक एवं अध्यापकों को बच्चों के बड़े सपने सुनकर उनका मज़ाक उड़ाना या उन्हें डिमोरलाइज करने के बजाय उस लक्ष्य को हासिल करने के आधार के बारे में उन्हें बताना चाहिए और उसके हिसाब से उन्हें शिक्षा दिलानी चाहिए। उसी तरह की किताबें, उसी तरह के लोगों के बारे में उन्हें बताना बहुत जरूरी है। तीसरा, सही दिशा में लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए मेहनत करें। अगर किसी को मछली चाहिए, तो उसे झील के किनारे जाना पड़ेगा, न कि किसी पहाड़ की चोटी पर। खिलाड़ी बनने के लिए मैदान में मेहनत करें और डॉक्टर के लिए किताबों में समय दें। एक और बात याद रखें कि कभी ज्यादा लक्ष्य चुनकर उलझन में न रहें, हिमाचल में कहावत है कि ज्यादा घरों का अतिथि भूखा रहता है तथा दो नावों पर सवार होकर दरिया पार नहीं होते। चौथा, कभी भी ऐसा सपना न देखें, जो उस वक्त के हिसाब से पूरा होने लायक न हो, पर हाँ, अगर पॉइंट 5% भी लगता है कि आप यह सपना हासिल कर सकते हैं, तो उसके लिए वहीं से ही तैयारी शुरु करें। हर लक्ष्य को हासिल करने के लिए सही प्लानिंग एवं एटमोस्फेयर बहुत जरूरी है - प्लानिंग, पेशेंस एवं मेहनत से सफलता मिलती है।

अध्याय-19

ऊँचा पद नहीं, सच्ची खुशी है असली सफलता

मेरे शुरुआती दिनों में एक बड़े शहर में पोस्टिंग के दौरान सेना द्वारा आयोजित संगीतमय संध्या एवं रात्रि भोज के दौरान मेरी मुलाकात एक सेवानिवृत्त जनरल साहब से हुई, जो हिमाचल के रहने वाले थे। पहचान होने पर उन्होंने अगली शाम मुझे घर आने का न्योता दे दिया। अगले दिन एक दोस्त के साथ जनरल साहब के घर जाने के प्रोटोकाल अनुसार हाथों में फूलों का गुच्छा लिए रास्ते में उनसे क्या बातचीत करनी है, चर्चा करते रहे। अक्सर मोटरसाइकिल से उनकी हवेली के सामने से निकलते वक्त हम उसके बारे में चर्चा करते रहते थे, जनरल साहब भी अपनी प्रोफेशनल कंपिटेंसी तथा

रूआबदार व्यक्तित्व के लिए पूरी भारतीय सेना में जाने जाते थे। दिये हुए समय से 5 मिनट पहले उनके गेट से अंदर पूरी तरह अंधेरा देख हम सोच में पड़ गए कि हम कहीं गलत हवेली में तो नहीं आ गए। फिर गेट पर लगी नाम पट्टी पर उनका नाम पढ़कर हमने घंटी बजाई। कोई जवाब नहीं आया पर झूला झूलने की आवाज सुनाई दी। दोबारा घंटी बजाने पर अंदर से आवाज आई - प्लीज कम इन! गेट खुला है, अंदर आ जाइए। हम अपने टाई और बालों पर हाथ फेरते हुए गेट खोल अंदर पहुँचे और जोश से उनका अभिवादन कर हाथ में फूलों का गुच्छा थमा दिया। अंधेरे में झूले के सामने रखी कुर्सियों पर बैठकर थोड़ी देर तक फॉर्मल बातें करते रहे। हमने देखा कि तब तक घर से न ही किसी ने पानी के लिए पूछा और न ही किसी तरह की कोई लाइट ऑन हुई। थोड़ी देर चर्चा के बाद जनरल साहब, जो करीब 80 की उम्र में थे, ने हमें अंदर चलने को कहा - प्लीज जेंटलमैन, स्विच ऑन द लाइट्स एंड हेल्प योर लेल्फ! जनरल साहब हमें सीधे बार काउंटर पर ले गए और इच्छा अनुसार ड्रिंक लेने का ऑफर किया। थोड़ी देर बाद जनरल साहब ने बीसीआर में कैसेट चला दी, जो उनको सेवानिवृत्ति के दौरान उनकी उपलब्धियों की यादगार संग्रह के तौर पर भेंट की गई थी। थोड़ी देर देखने के बाद उनके परिवार के बारे में जानना चाहा, तो पता चला कि सेवानिवृत्ति के कुछ वर्षों बाद उनकी पत्नी का देहांत हो गया था तथा उनका बेटा कर्नल है और बेटी विदेश में रहती है। उन्होंने बताया कि मैं हिमाचल के एक छोटे गाँव से थे, जहाँ नंगे पाँव स्कूल जाया करते थे। सुविधाएँ न होने के कारण जुगनू ओर दीयों की लौ में पढ़ाई कर भारतीय सेना में अधिकारी बने। अधिकारी बनने पर उन्होंने अपने आप को इस समाज में ढालना शुरु किया और शहर में एक अधिकारी की बेटी से शादी की। सर्विस के दौरान बच्चों को सर्वोच्च सुविधाएँ उपलब्ध कराईं और गाँव व देहाती-संस्कृति से दूर रखा तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात् शहर में यह हवेली बना ली थी।

बातों-बातों में जनरल साहब की दमदार और रूआबदार आवाज में थोड़ा रुआंसापन आना शुरु हो गया। अभी तक जेंटलमैन कहकर बात करने वाले जनरल साहब अभी बेटा कहकर संबोधित कर बोले कि चकाचौंध भरी जिंदगी इस मोड़ पर आ गई कि मेरी पत्नी आज मेरे साथ नहीं है, मेरे बच्चे जिनको मैंने हर सुख-सुविधा, दी मेरे पास आने से कतराते हैं। उन्हें दुख था कि आज 80 वर्ष की उम्र में उनके पास धन, शोहरत, पैसा, इज्जत सबकुछ था पर इतने बड़े बंगले में अकेले रहते थे। एक गरीब महिला और उसका

बेटा हर दिन घर का काम व दोपहर को खाना बनाकर छोड़ जाते थे, शाम को खुद खाना गर्म कर, थोड़ी देर पुरानी यादों को देखकर वे सो जाते थे। उन्होंने बताया कि अपनी तरक्की व सेना की मजबूरियों के कारण वे अपने माँ-बाप की अंतिम-यात्रा में भी शामिल नहीं हो पाये थे। अब गाँव और पुराने दोस्तों की याद आती है पर न ही अकेले जा सकते हैं, न ही वहाँ अब उन्हें कोई जानता है। जनरल साब को देख मुझे अपने दादाजी की बात याद आई, वे कहते थे कि बेटा हमेशा याद रखना कि पेड़ कितना भी ऊँचा हो जाए,अगर जड़ हिल जाए तो वह ज्यादा दिन हरा नहीं रह सकता। मुझे लगता है कि असली सफलता माँ-बाप को बुढ़ापे में खुश रखने तथा बच्चों को बचपन में उचित संस्कार देने में है। दूसरा, हमारी तरक्की में अपनी मेहनत के अलावा घर, गाँव, माँ-बाप, दोस्त, नुक्कड़, चौराहा, खेत-खलियान सबका योगदान रहता है और सफल होने पर यह कर्ज चुकाना हमारी जिम्मेदारी है। गाँव छोड़कर शहर जाने के बजाय गाँव में वह सुविधा तैयार करने की कोशिश करें। बच्चों के लिए पाश्चात्य संस्कृति एवं देहाती संस्कार दोनों ही जरूरी हैं।

अध्याय-20

मुसीबतों से डरकर उम्मीद न छोड़ें

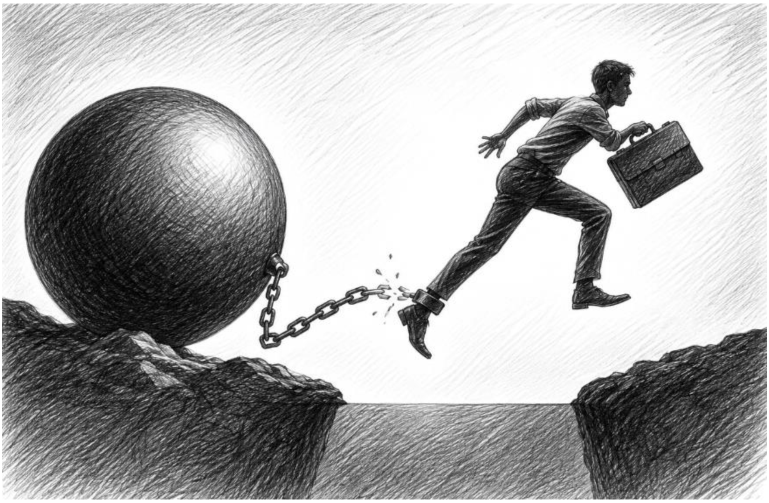

सेना में सुबह शारीरिक अभ्यास, दोपहर को हथियारों की मेंटेनेंस एवं युद्धकला-प्रशिक्षण, शाम को खेलकूद तथा रात्रि में कुछ समय के लिए नाइट ट्रेनिंग आदि की दिनचर्या के साथ-साथ कुछ साप्ताहिक, मासिक एवं वार्षिक प्रशिक्षण अभ्यास होते हैं जिससे सैनिक न सिर्फ शारीरिक, बल्कि मानसिक तौर से भी फिट एवं युद्ध के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। इसी तरह के वार्षिक फील्ड फायर यानी टैंक से फायर करने के अभ्यास के लिए हमारी यूनिट राजस्थान के पोखरण पहुँची। मैं गनरी अफसर यानी फायर कंडक्ट करने की जिम्मेदारी निभा रहा था। प्रोफेशनल तौर से हर तरह तैयारी तथा धर्मगुरु द्वारा पूजा-हवन के पश्चात् हमने फायर शुरु किया। टैंक में तीन आदमी का क्रू दो जगहों से ऑपरेट करता है, अगला हिस्सा ड्राइवर कम्पार्टमैंट का होता है। गनर व कमांडर पिछले हिस्से यानी फाइटिंग कंपार्टमेंट से काम करते हैं। फायर के दौरान गोला, गन के ब्रीच एंड फाइटिंग कम्पार्टमेंट से लोड होता है और मजल एंड ड्राइवर कंपार्टमेंट के ऊपर से निकलता है। कुछ

आधारभूत तैयारियों में से एक ड्राइवर कंपार्टमेंट का बंद होना चेक कर, गनरी ऑफिसर करीब 100 मीटर पीछे से रेडियो फ्रीक्वेंसी से हर चीज पर नियंत्रण कर, फायर का हुकुम देता है। फायर शुरु होने के कुछ देर बाद एक टैंक के फायर करते ही अजीब-सी आवाज आई और टैंक के फाइटिंग कम्पार्टमेंट से आग की लपट निकली और आसपास धुआँ ही धुआँ हो गया। इतने में हर तरफ से आवाज आने लगी - "साहब! गन ब्लास्ट हो गई... गन फट गई"। तब सावधानी से बलास्ट टैंक से कमांडर, गनर एवं ड्राइवर को अधजली हालत में बाहर निकालकर अस्पताल भेजा तथा टैंक पर फायर इट्सिंगयूशर, रेत व पानी फेंककर आग बुझाने की कोशिश की। एक्सीडेंट का कारण जानने की कोशिश शुरु हुई। अमुनिशन, जिससे हादसा हुआ था उस लॉट को अलग कर दिया गया। सारी यूनिट में एक दहशत का माहौल था और इस दौरान फायर को जारी रखना बहुत जरूरी था। शाम को मैंने बाकी अधिकारियों से चर्चा करने के बाद मेन अमुनिशन का फायर करने के बजाए स्मोक लॉन्चर से फायर करने का निर्णय लिया पर बदकिस्मती से फिर एक हादसा हुआ और हमारे एक सूबेदार का हथ उड़ गया। फायर बंद कर दिया गया। सीनियर अधिकारियों से आदेश आने लगे कि हादसों के कारण जानकर, ठीक ढंग से अभ्यास शुरु करवाया जाए। उस रात पूरी यूनिट सदमे में थी। मैं सो नहीं पा रहा था। अंततः, रात को 1:00 बजे यूनिट के सीओ से डिस्कस कर मैंने सुबह 5 बजे एक टैंक को फायर के लिए लगाने का हुक्म दे दिया। दूसरे दिन सुबह 5:00 बजे फायरिंग रेंज पर सारी यूनिट पहुँच गई, एक टैंक तैयार खड़ा था। सब तैयारी के बाद फायरिंग-क्रू का नाम नहीं आया। पूछने पर बताया गया कि साहब, गन-ब्लास्ट के हादसे से सैनिक डरे हुए हैं और फायर करने से हिचकिचा रहे हैं। मैंने सभी सैनिकों को एक जगह इकट्ठा किया और समझाया कि गन ब्लास्ट एक हादसा है जो कभी भी हो सकता है पर अगर हम ड्राइवर कपोले (दरवाज़े) को सही ढंग से बंद कर देते हैं तो ब्लास्ट का असर क्रू मेम्बर पर नहीं होता है और सब सैनिक टैंक के अंदर सुरक्षित रहते हैं, इसलिए जब तक जाँच नहीं होती और ब्लास्ट का सही कारण पता नहीं चलता तब तक पूरे सेफ्टी प्रिकॉशन के साथ हमें फायर जारी रखना चाहिए। मैंने उनको समझाया कि फाइटिंग कम्पार्टमेंट में आग पहुंचने का कारण ड्राइवर कपोले का ठीक से बंद न होना था, पर कोई मानने को तैयार नहीं था। उनकी बातों में कुछ गलत नहीं था पर समय और हालात के अनुसार उस वक्त फायर जारी करना बहुत ही जरूरी था। इसीलिए मैंने

और यूनिट के एक अन्य अधिकारी ने खुद फायर करने का निर्णय लिया। सारी तैयारी चेक कर, ड्राइवर कपोला अच्छी तरह बंद कर दूसरे अधिकारी कमांडर और मैं गनर सीट पर बैठे और फायर शुरु कर दिया। 3 गोले बिल्कुल सही फायर हुए और चौथे गोले में फिर से गन ब्लास्ट हो गई, पर इस दौरान ड्राइवर कपोला बंद होने से आग फाइटिंग कम्पार्टमेंट में नहीं आईं। तब सभी सैनिकों को विश्वास हो गया कि अगर तैयारी सही ढंग से की गई हो, तो हादसा होता ही नहीं है और अगर हो भी जाए तो नुकसान बहुत कम होता है। उसके बाद पूरी फायरिंग इत्मीनान से की गई। उस फायर में कुल तीन गन ब्लास्ट हुई, पर कोई भी ह्यूमन लाइफ़ का नुक़सान नहीं हुआ। यह एक ऐसा अनुभव था जिसने सिखाया की मुसीबत आने पर उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए और पूरी तैयारी के साथ प्रयत्न करने से सफलता जरूर हासिल होती है।

अध्याय-21

बेटा-बेटी दोनों को बराबर समझें, बेटा-बेटी दोनों को बराबर मौका दें

कुछ दिन पहले रूटीन जाँच के लिए मिलिट्री हॉस्पिटल जाना हुआ। टेस्ट करवाने के लिए हम जैसे ही लैब में पहुँचे, तो वहाँ पर मिलिट्री नर्सिंग सर्विस की कैप्टन मेरी वाइफ के पास आईं और धन्यवाद करने लगी। बात करने से पता चला कि वह लड़की हमारे यूनिट के एक सूबेदार की बेटी है। वह दो बहनें थीं, इसलिए जब उसकी छोटी बहन के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह भी इसी अस्पताल में डॉक्टर है और कैप्टन के रैंक पर है। टेस्ट के बाद वह लड़की ज़िद करके हमें अपने साथ चाय के लिए घर ले गई। घर में उसके माँ-बाप (सूबेदार साहब) और मैडम को देखकर पुराने दिन (जब ये परिवार यूनिट में आया था) मेरी आँखों के सामने घूम गया। मैं वह सब याद

करने लगा कि कैसे एक दिन यूनिट के फंक्शन के दौरान किसी ने कह दिया कि सूबेदार साहब की शादी को 18 साल हो गए हैं और अभी तक एक बार भी सूबेदारनी जी को यूनिट नहीं लाए। जब सूबेदार साहब से बात हुई, तो उनका जवाब हमारे देश के ज्यादातर लोगों की मानसिकता की तरह था। उनका कहना था कि वह यहाँ शहर में आकर क्या करेगी, परिवार गाँव में रह रहा है, मेरे भाई भी फौजी हैं पर हम में से किसी ने भी आज तक परिवार को अपने साथ नहीं रखा। वैसे भी मेरी दो बेटियाँ हैं, एक दसवीं में और दूसरी 8वीं में। अगले चार साल अपनी रिटायरमेंट से पहले कम-से-कम एक की शादी कर दूँगा। लड़की जात है, शहर में रखूँगा, तो बिगड़ जाएँगी। पर जैसे-तैसे वह अपने परिवार को मात्र 2 महीने के लिए लाने को मान गया। लेडीज का कुशलक्षेम जानने के लिए एक दिन मेरी वाइफ फैमिली क्वार्टर में गई, तो उनकी बात सूबेदार साहब की पत्नी और बेटियों से हुई। उनकी बड़ी बेटी, जो दसवीं में पढ़ती थी, बातों-बातों में मेरी वाइफ से कहा कि आप कार चलाकर खुद आ रहे हो, मैं भी आपकी तरह जिंदगी जीना चाहती हूँ, कुछ बनना चाहती हूँ, जो बिना किसी डर के और अपनी मर्जी से जो दिल करे, पहने और जहाँ दिल करे जाए। पर मेरी माँ कहती है कि हमारी किस्मत ऐसी नहीं है, यह सब बड़े लोगों के लिए है। यह सब पता चलने पर मैंने सूबेदार साहब को अगले 2 साल के लिए यूनिट में रुकने के लिए किसी-न-किसी तरह मना लिया तथा बच्चों की केन्द्रीय विद्यालय में एडमिशन करवा दी। हफ्ते में 2 दिन मेरी वाइफ अपनी मर्जी से फैमिली क्वार्टर में बच्चों को पढ़ाने और कैरियर टिप्स देने जाया करती थी। जैसे लड़कों को पाँचवीं के आधार पर सैनिक स्कूल, मिलिटरी स्कूल एवं आरआईएमसी में छठी से भेजा जा सकता है और इसकी पात्रता सिर्फ फौजियों के लड़कों तक सीमित नहीं बल्कि 'कोई भी बच्चा पाँचवीं पास' का होना चाहिए। 12वीं के बाद लड़कों के लिए एनडीए तथा लड़के और लड़की दोनों के लिए पीएमटी। अभी नीट डॉक्टर व आईआईटी इंजीनियर के लिए या रुचि मुताबिक स्नातक डिग्री करने के बाद प्रशासनिक सेवाएँ, जैसे - आईएएस और आईपीएस में जा सकते हैं।सूबेदार साहब की दोनों बेटियाँ बहुत मेहनती थीं और जैसे ही बड़ी बेटी ने 12वीं पास की, उसको फॉर्म भरवाकर एक आर्म्ड फोर्सेज मेडिकल कॉलेज एवं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस की तैयारी करवाई। बेटी ने दोनों एग्जाम दिये और नर्सिंग सर्विसेज का टेस्ट पास कर सेलेक्ट हो गई। मैं यह सब सोचते हुए पुराने दिनों में इतना खो गया था कि साहब ने चाय का कप

मेरी तरफ कर मुझे हिलाते हुए प्रश्न किया - कहां खो गए, साहब? चाय पीते वक्त साहब व उनकी पत्नी ने भरी आँखों से हमें बताया – "साहब, आपके और मेमसाहब की जबरदस्ती की वजह से हमने बेटियों को पढ़ाया। बड़ी को देख छोटी ने एएफएमसी पास किया और आज हमारी बेटियाँ अपनी मर्जी की जिंदगी जी रही हैं। ये मेरी बेटियाँ नहीं, बेटे हैं। ये देख मुझे बिश्वास हो गया कि पुराने रीति-रिवाज और मान्यताएँ, जो हमें आगे बढ़ने की स्वतंत्रता नहीं देते, उनको बदलना चाहिए। लड़कियाँ और लड़के, दोनों ही बराबर हैं और माँ-बाप का दायित्व बेटियों को सिर्फ थोड़ी शिक्षा देकर शादी कर देने से ही पूरा नहीं हो जाता। 'बेटियाँ पराया धन हैं', यह कहकर उनको कमजोर करने और पंख काटने की बात करने के बजाय उनको बड़े सपने देखने व खुले आसमान में उड़ने की आजादी देनी चाहिए। बेटा-बेटी दोनों ही माँ-बाप का हिस्सा एवं जिम्मेदारी हैं, इसलिए हमें फर्क किए बिना दोनों को बराबर का सम्मान एवं मौका देना चाहिए।

अध्याय-22

बच्चों के सामने उचित व्यवहार करें

समय के साथ पुराने हो रहे अच्छे तथा जाँचे-परखे हत्यारों को आला दर्जे एवं आधुनिक उपकरण लगाकर उसकी उम्र एवं काबिलियत को बढ़ाने की कार्रवाई को रेट्रोफिटमेंट कहा जाता है। सेना में एक बार डीआरडीओ द्वारा बनाए गए आधुनिक उपकरण के टैंक में रेट्रोफिटमेंट के लिए ट्रायल रखा गया और इसके लिए मुझे मेरी यूनिट के कुछ टैंक लेकर ट्रायल साइट पर जाने का मौका मिला। सैनिक व डीआरडीओ के वैज्ञानिक मिलकर काम करते-करते एक-दूसरे को अच्छी तरह जानने लग गए। दिन में काम के बाद रात को वैज्ञानिक मेरे साथ अधिकारी-मेस में खाना खाते थे। मैंने महसूस किया कि एक वैज्ञानिक जो कि हर चीज का अच्छा ज्ञान रखता था, न हमारे साथ दोस्ती करता और न ही हमारे साथ मेस में खाना खाता था। एक दिन मेस हवलदार ने मुझे बताया कि वह वैज्ञानिक हमेशा खाने के साथ एक आम आदमी से ज्यादा शराब अपने टेंट में मँगवा लेता है। यह जानकर मैंने हुकुम

दिया कि खाना तथा शराब किसी भी टेंट में नहीं जाएँगे। उस वैज्ञानिक के टेंट में साफ-सफाई के लिए जाने वाले लड़के से पता चला कि वह अभी शराब बाहर से ले आता है तथा हर आधे घंटे में पीता है। बाकी वैज्ञानिकों से बात करने से पता चला कि वह डीआरडीओ के गिने चुने और सबसे ज्ञानवान वैज्ञानिकों में से एक है। अगर वह शराब की लत छोड़ दे, तो भविष्य का अब्दुल कलाम बन सकता है। यह सब सुनकर मैंने उस वैज्ञानिक से बात करने का मन बनाया और अगले दिन जब वह टैंक पर काम कर रहा था, तो मैं भी उसके साथ काम करने लग गया। शुरु में तो वह फालतू बात नहीं कर रहा था पर धीरे-धीरे इकट्ठा काम करने पर उसने बात करनी शुरु की। तब उसने मुझसे कहा कि साहब अगर हो सकता है, तो मेस से शराब टेंट में ले जाने का हुक्म दे दो। तब मैंने उसको कहा कि आज हम मेस में ही खाना खाते हैं और अगर वह पीना चाहे, तो पी ले। तो उसने मुझे बताया कि वह कभी भी किसी के साथ शराब नहीं पीता है। कारण पूछने पर उसने बताया कि वह एक अच्छे शिक्षित एवं संपन्न परिवार से ताल्लुक रखता है। जब वह छोटा था, तो उसके पिता रोज शाम को अपने दोस्तों के साथ घर में बैठकर मदिरापान करते थे और माँ हमेशा स्नैक्स या फिर खाने के लिए किचन में व्यस्त रहती थी। तब वह वेटर की तरह एक-एक करके सारा स्नैक्स उनके लिए लाता रहता था। थोड़ी देर में जब वे सब नशे में धुत्त हो जाते थे, तो गाली-गलौच करना शुरु कर देते थे। इस दौरान अगर कभी वह या उसकी माँ उनके इस व्यवहार का विरोध करते, तो घर में लड़ाई होती और कभी उनकी पिटाई भी कर देते। फिर सुबह में वे माफी माँगते, तो मेरी माँ कहती थी कि मैं आपको पीने से मना नहीं कर रही पर आप अकेले पी लिया करो, दोस्तों के साथ मत पिया करो। एक दिन मैंने भी यह जानने के लिए कि इसमें ऐसा क्या है, चुपचाप बोतल निकालकर थोड़ी पी ली। पापा को इसका पता चल गया कि बोतल में शराब कम है, तो उन्होंने मेरी बुरी तरह पिटाई की और कहा कि यह बच्चों के पीने की चीज नहीं है। जब बड़ा होकर अपने पैरों पर खड़ा हो जाएगा, तो मैं नहीं पूछूँगा, जितनी हो पी लेना। मैं पढ़ाई-लिखाई कर वैज्ञानिक बन गया, तो लगा कि अब मैं शराब पी सकता हूँ, पर अपनी माँ की बात याद कर कि अकेले पीना चाहिए मैंने रूम में अकेले पीना शुरु कर दिया। पर न जाने कैसे, यह मेरी आदत बन गई और इतनी बिगड़ गई कि मेरी जरूरत बन गई है। मैं सुबह, दोपहर, शाम शराब पीता हूँ, इसके बिना नहीं रह सकता। उसकी कहानी सुनकर मुझे यह बात

तो समझ आ गई कि आपके बच्चे वही करते हैं, जो वह देखते हैं। हमें कभी भी वो काम खुद नहीं करना चाहिए जो हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे न करें। इसके लिए चाहे किसी तरह के नशे की बात हो या अपने से बड़ों का आदर-सत्कार या मानवता का अनुसरण करना। हर चीज, जो किताबों में एक अच्छा इंसान होने की परिभाषा है उसको जब हम अपनी रियल लाइफ में जीना शुरु करेंगे, तभी हमारी आने वाली जेनरेशन उस चीज को सीखेगी और उसका अनुसरण करेगी। आजकल शादी-विवाह या किसी फंक्शन में खुशी मनाने के नाम पर नशे का उपयोग सरेआम और सामने किया जाता है और इसे देखकर हमारी आने वाली जेनरेशन, जो ये सब देख कर बड़ी हो रही है, उन्हें ये सारी चीजें सही लगती हैं। मुझे लगता है कि हमें इस तरह के चलन को बदलने के लिए सही निर्णय लेना चाहिए।

अध्याय-23

अपने अन्दर की काबिलियत को पहचानें युवा

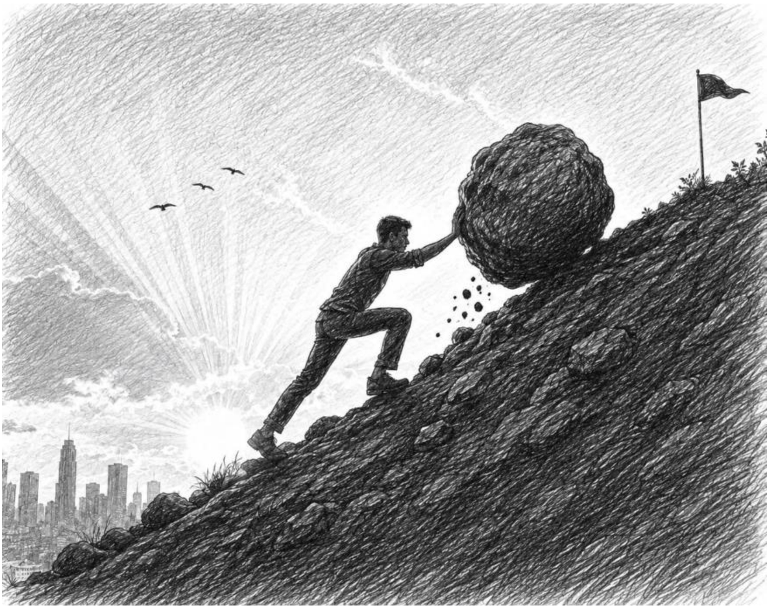

सेना जिंदगी जीने का एक तरीका है। जिसमें काम, खेल, पार्टी, मनोरंजन आदि हर चीज के लिए समय निर्धारित होता है और ये सब दिनचर्या का हिस्सा होते हैं। कैंटौनमैंट के बाहर की दुनिया से अछूते सैनिक चारदीवारी के अंदर एक हेल्दी एवं पॉजिटिव जीवनयापन करते हैं। एक बार मैं शाम को खेल के समय गोल्फ खेलने के लिए गया। गोल्फ कोर्स में कार खड़ा करते ही एक अच्छी डीलडौल और कद-काठी वाला 20-22 साल का लड़का मेरे साथ कैडी यानी गोल्फ खेलते वक्त सहायक के तौर पर आया। गोल्फ खेलते-खेलते उससे कुछ बातें हुईं, तो उसने बताया कि वह एक बहुत ही गरीब परिवार से संबंध रखता था, घर में उसके पापा दिहाड़ी मजदूरी

कर परिवार का पालन-पोषण करते थे। उसने भी गाँव में कभी मजदूरी, तो कभी ट्यूशन पढ़ाकर ग्रेजुएशन तो कर लिया है, पर उसके बाद कोई प्रोफेशनल कोर्स करने के लिए या टेस्ट देने के लिए पैसे नहीं थे तो गाँव के ही एक दूर के चाचा के साथ फौज में भर्ती होने के लिए उनके साथ यहाँ आ गया था। उन्होंने उसे अधिकारी मेस में मेस-बॉय रखवा दिया था। मैं मेस के गार्डन का घास वगैरह काटकर उसे मेंटेन रखता हूँ। मेस में साफ- सफाई तथा बर्तन आदि का काम भी करता हूँ। चाचा का कहना है कि अधिकारियों के साथ पहचान होने से फौज में भर्ती होने में आसानी होगी। फिर कुछ दिन मेरे साथ ही कैडी करने से जब थोड़ी पहचान हो गई, तो एक दिन वह बोला कि साहब आपसे विनती है कि आने वाली भर्ती में मेरी मदद कर देना। मैं रोज सुबह दौड़ लगाता हूँ तथा लिखित परीक्षा में भी पास हो जाऊँगा। मैं भर्ती होने की पूरी काबिलियत रखता हूँ पर फिर भी आप मेरी सिफ़ारिश लगा देंगे, तो फौज में भर्ती हो जाऊँगा। मुझे पता चला कि उसने ग्रेजुएशन 68 परसेंट नंबर से पास किया था। उसकी उम्र मात्र 21 साल थी। मैंने उसको शाम को मेस में मिलने को कहा, उससे डिटेल में बात करने पर मैंने उसे बताया कि तूने स्नातक की डिग्री की है और तुम फौज में सिपाही नहीं बल्कि अधिकारी बनने की भी काबिलियत रखते हो। इस पर उसने मुझे बताया कि साहब अधिकारी तो बड़े दूर की बात है,अगर आप मुझे मेस वेटर भी भर्ती करवा दो, तो भी मैं आपका पूरी उम्र एहसान नहीं भूलूँगा। उसके बाद मैंने उससे हर रोज 10 मिनट बात करनी शुरु की और उसमें विश्वास जगाया कि वह अधिकारी बनने के काबिल है। अगर मेहनत करेगा, तो अधिकारी बन सकता हैं। मैंने उसको अधिकारी टेस्ट की किताबें खरीद कर उपलब्ध करवाई और रोज शाम को लाइब्रेरी में आने की बात कही। कैंटोनमेंट के बाकी अफसरों को भी जब उसके बारे में पता चला, तो सभी उसको तैयारी करने में मदद करने लगे और जब टेस्ट हुआ तो दिल से की मेहनत का उसको परिणाम मिला और वह टेस्ट पास हो गया। एसएसबी इंटरव्यू की तैयारी के लिए मैंने उसे 10 दिन के लिए एक कोचिंग इंस्टिट्यूट में भेजा। वहाँ से आने के बाद मेस में हर अधिकारी के साथ उसको इंटरव्यू की तैयारी करवानी शुरु करवा दी और जैसे ही इंटरव्यू के लिए गया, तो किस्मत और भगवान ने उसकी मेहनत को देखते हुए उसका साथ दिया और वह इंटरव्यू में पास हो गया। कल तक एजुकेशन होने के बावजूद भी अपनी काबिलियत का अंदाजा न होने पर जो लड़का वेटर या माली की नौकरी करने को तैयार

था, वह सेना में अधिकारी सेलेक्ट हो चुका था। उसके उदाहरण से मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया कि अगर किसी भी बच्चे का सही मार्गदर्शन किया जाए, तो वह अपनी काबिलियत के अनुसार बड़े से बड़ा लक्ष्य भी हासिल कर सकता है। आज भी जब मैं देखता हूँ कि हमारे हिमाचल में बहुत सारे लड़के-लड़कियाँ जो कि ग्रेजुएशन पास है, सिपाही या क्लर्क की नौकरी के लिए मेहनत करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि अगर अधिकारी बनने की एजुकेशनल क्वालिफिकेशन और एलिजिबिलिटी उनके पास है, तो उनको पहली कोशिश अधिकारी बनने की करनी चाहिए। मैं अपनी बातचीत के दौरान हमेशा स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों से बड़े सपने देखने तथा अपनी काबिलियत पहचानने की बात करता हूँ। मुझे लगता है कि अध्यापक एवं अभिभावकों के साथ-साथ नई पीढ़ी में आत्मविश्वास भरना तथा सही मार्गदर्शन करना हम सबका दायित्व है।

अध्याय-24

अपने सपने बच्चों पर ना लादें

सेना की हर पलटन जिस दिन अस्तित्व में आई हो या जिस दिन पलटन को युद्ध में किसी खास कारनामे के लिए सम्मानित किया गया हो, उस दिन को 'यूनिट रेजिंग डे' यानी 'स्थापना दिवस' या 'यूनिट बैटल ऑनर डे' के नाम से मनाया जाता है। वैसे तो हर साल इसे सांकेतिक तौर पर मनाया जाता है पर 3 से 5 साल में इस दिन को यूनिट रियूनियन के नाम से बड़े भव्य तरीके से आयोजित किया जाता है। इस समारोह में पलटन के सभी सेवारत तथा सेवानिवृत्त सैनिकों एवं उनके परिवार का यूनिट परिसर में ही कम-से-कम 3 दिन के लिए रहने-खाने का बंदोबस्त किया जाता है। इन 3 दिनों में औरत, बच्चे एवं मर्द सभी के लिए कुछ खेलकूद प्रतियोगिताएँ, कुछ मनोरंजक प्रोग्राम तथा बड़ा खाना आदि का आयोजन होता है। एक बार इसी तरह के पलटन रियूनियन की तैयारी के दौरान जब हम सेवानिवृत्त सैनिकों तथा

उनके परिवारों की समारोह में शामिल होने की सहमति अनुसार बंदोबस्त कर रहे थे। तभी एक यूनिट अफसर ने कहा – "सर! इस बार अमेरिका वाले इंजीनियर का सारा परिवार आ रहा है"। इसपर सारे लोग थोड़ा हँसे और उनके लिए गेस्ट रूम डिसाइड किया। 'अमेरिका वाला इंजीनियर' थोड़ा अजीब लगने वाले शब्द के पीछे एक कहानी थी। हमारे एक पुराने सीओ साहब जब वह कमांड कर रहे थे, तब वह और उनकी पत्नी अक्सर बातचीत के दौरान कहते थे कि हमारा बेटा तो आईआईटी करेगा और अमेरिका में बड़ी कंपनी में इंजीनियर बनेगा। उनके सामने तो सब उनकी हाँ में हाँ मिलाते थे पर मन-ही-मन सबको मालूम था कि उनका बेटा पढ़ाई में ज्यादा अच्छा नहीं है पर खेलकूद तथा संगीत में ज्यादा रुचि रखता है। उसने हमारी यूनिट का रेजिमेंटल सॉन्ग लिखा और कंपोज किया था। वह हर तरह के म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट को बजाने में माहिर था पर उसके माता-पिता उसकी इन खूबियों को नजरअंदाज कर सिर्फ पढ़ाई पर जोर देते थे। उसे आईआईटी की कोचिंग दिलाकर इंजीनियर बनाना चाहते थे। वह लड़का कोशिश करने पर भी बारहवीं की परीक्षा भी पास नहीं कर पाया।

आखिरी खबर यह थी कि वह घर छोड़ मुम्बई चला गया था। पहचान वालों को यह सब पता होने पर भी जानबूझ कर उसके माता-पिता से 'अमेरिका वाले इंजीनियर' की परफॉर्मेंस के बारे में बात करते थे। इस सबको उसके माता-पिता अपमान समझते थे और इसी कारण उन्होंने यूनिट से बातचीत करना भी बंद कर दिया और किसी भी यूनिट फंक्शन में नहीं आते थे। इस बार करीब 10 साल बाद वह समारोह में आ रहे थे। समारोह से एक दिन पहले मेहमान आना शुरु हो गए। हम सबकी एक्सपेक्टेशन से विपरीत 'अमेरिका वाले इंजीनियर' का परिवार बेटे के साथ कीमती गाड़ी में आया। वह समारोह में सबसे खुश होकर मिल रहे थे और आनंद ले रहे थे। 'अमेरिका वाले इंजीनियर' ने गिटार से सबका मनोरंजन किया तथा सबसे बड़ा हँस-खेलकर मिला। उसके पिता से बात करने पर पता चला कि उन्होंने बेटे पर जबरदस्ती अपने सपने लादने की कोशिश की और वह बुरी तरह असफल हो गया। आईआईटी तो दूर की बात, वह बारहवीं तक भी पास नहीं कर पाया और निराश होकर गलत आदतों में पड़कर शराब आदि नशे करने लग गया था। इस सब से दुखी होकर उन्होंने उसको घर से निकाल दिया तो वह मुंबई में एक म्यूजिकल ग्रुप के साथ काम करने लग गया। शुरु में तो वे उससे नाराज़ थे पर उसकी संगीत में रुचि और काबिलियत को एक

बड़े म्यूजिक डायरेक्टर ने पहचाना और उनसे बात की। फिर पूरे परिवार ने उसको स्पोर्ट किया और मात्र 2 साल की मेहनत से ही उसने तीन क्षेत्रीय भाषाओं और एक बॉलीवुड मूवी के दो-दो गाने कम्पोज कर दिये। अभी उसने शराब भी छोड़ दी है और एक अच्छा सभ्य एवं सफल जीवन जी रहा है। 5 साल तक आईआईटी की कोचिंग दिलाने के बावजूद जो लड़का कुछ नहीं कर सका, उसने अपनी रुचि अनुसार सिर्फ 2 साल में ही, बिना किसी कोचिंग के अपने बूते पर ही सफलता हासिल कर ली।

उनकी इस बात से मुझे यह समझ आया कि न केवल हमारे हिमाचल बल्कि सारे देश में ही हम कैसे बच्चे के दसवीं करते ही उसे डॉक्टर व इंजीनियर बनाने के सपने देख लेते हैं। उसपर इसे पाने का इतनी देर तक दबाव बनाते हैं कि अगर वह असफल हो जाये तो वह इतना लेट हो जाता है कि न तो उसको दूसरा मौका मिलता है, न ही आत्मविश्वास रहता है। हमें समझना चाहिए कि विज्ञान पढ़ने या अंग्रेजी बोलने में कोई बड़प्पन नहीं, साहित्य एवं हिन्दी में कुशलता भी उतना ही सम्माननीय है। मेरा मानना है कि हमें बच्चों पर अपने सपने न लादकर उनको अपनी रुचि व मन का करने के लिए स्वतंत्र कर देना चाहिए।

अध्याय-25

बच्चों को रुचि अनुसार करियर चुनने को प्रोत्साहित करें

कहते हैं कि गोल्फ कोर्स की दोस्ती का कोई सानी नहीं है। सेना में सीनियर और जूनियर के बीच में चाहे लाख अच्छे सम्बन्ध हों पर उसे दोस्ती नहीं कह सकते। मुझे याद है कि गोल्फ में मेरे एक पार्टनर थे जो काफी सीनियर अधिकारी थे। परेड के दौरान उनसे बात करते वक्त हर तरह के प्रोटोकॉल का ध्यान रखना पड़ता था, पर हर शाम साथ खेलने से हमारी ऐसी दोस्ती हो गई, जैसे दो हमउम्र सहपाठियों में हो जाती है। पहचान बढ़ने से एक-दूसरे के बारे में जानने का मौका मिला। उनके बारे में जानने से पता चला कि वे राष्ट्रीय-स्तर के बास्केट बॉल के खिलाड़ी हैं। हमारे देश में उनके समय में खेल को करियर के रूप में बहुत कम चुना जाता था और पढ़ाई के अलावा दूसरे किसी भी क्षेत्र में करियर बनाना बड़ा ही मुश्किल था। इसलिए अच्छी खेल-प्रतिभा होने के बावजूद भी वह सेना में शामिल हो गए। उनका मानना था कि हमारे देश में अब हर विषय में, चाहे वो खेल हो, संगीत, एक्टिंग, लेखन या कोई भी और क्षेत्र, किसी भी तरह के क्षेत्र में बच्चों को रुचि अनुसार

करियर बनाने के बहुत ही अच्छे मौके मिलते हैं। उनका कहना था कि हमें अपने समय की अवधारणा, कि सिर्फ पढ़ाई से ही हम जिंदगी में अच्छा कर सकते हैं और एक सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर सकते हैं, की विचारधारा को बदलकर बच्चों को उनकी रुचि मुताबिक करियर चुनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ।

उनके दो बच्चे थे - एक लड़का, जो 13 वर्ष की उम्र का क्रिकेट की कोचिंग ले रहा था तथा एक बच्ची, जो 10 वर्ष की थी और आर्चरी (तीरंदाजी) की कोचिंग ले रही थी। मेरे पूछने पर कि ‘खेलकूद सब ठीक है, फिर भी अगर इस क्षेत्र में सफल नहीं हो पाये तो दूसरे करियर के लिए बुनियादी शिक्षा या पढ़ाई का क्या होगा’, उन्होंने बताया कि आजकल बहुत सारे ऐसे इंस्टिट्यूट हैं, जो बच्चों को उनकी रुचि के मुताबिक ट्रेनिंग देते हैं तथा उसके साथ-साथ पढ़ाई भी करवाते हैं। इससे 20 साल की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते बच्चा अगर अपनी रुचि मुताबिक कोई मुकाम हासिल नहीं कर पाता, तो उसने साथ-साथ जो पढ़ाई की है, उसके आधार पर जीवनयापन करने के लिए कोई व्यवसाय या नौकरी पा सकता है। मैं उनकी बातों से काफी प्रभावित हुआ। समय के साथ हमारे संबंध और भी प्रगाढ़ होते गए और हममें पारिवारिक मित्र की तरह रिश्ता बन गया । कुछ वर्ष बाद हमारी पोस्टिंग अलग-अलग जगह हो गई और समय के साथ बातचीत भी खास मौकों तक सीमित रह गई। एक दिन टीवी पर मैंने खबर सुनी कि विदेश में चल रही जूनियर अंतर्राष्ट्रीय आर्चरी यानी तीरंदाजी प्रतियोगिता में भारत की लड़की ने देश का नाम रोशन किया। वह एक फौजी परिवार से संबंध रखती है। उसके पिता सेना में अधिकारी हैं। उसके पिता और उस लड़की का नाम सुनकर और उसको टेलीविजन पर बात करते देख मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। मैंने तभी फोन उठाकर उनको फोन किया। ये उन्हीं अधिकारी की बेटी थी, जो 10 साल की उम्र से तीरंदाजी की तैयारी कर रही थी। आज वह एक नेशनल आइकॉन बन चुकी थी। मात्र 17 साल की उम्र में उसने इतना सम्मान और इज्जत पा लिया था, जितना पाने के लिए लोगों की सारी उम्र लग जाती है।

उसके पिता से बात करने पर उन्होंने बताया कि जैसा कि उनका विश्वास था कि बच्चों को उनकी रुचि के मुताबिक करियर चुनने देने में वे जिंदगी में अच्छा तो करते ही हैं पर उसके साथ-साथ पूरे घर-परिवार का नाम भी

रोशन कर देते हैं, यह उसी को सही साबित करता था। उनके बेटे के बारे में बात करने पर पता चला कि क्रिकेट में कंपटीशन बहुत ज्यादा है। उनका बेटा अच्छा खेल रहा था पर भारतीय टीम में अभी तक सेलेक्ट नहीं हुआ था। उन्होंने बताया कि वह रणजी और आईपीएल खेलता है तथा जितना नाम और शोहरत उन्होंने सारी उम्र में कमाई थी, उनका बेटा उससे ज्यादा इसी उम्र में कमा चुका था। उनसे बात करने के बाद मैंने फिर बाकी लोगों के बारे में और उनके करियर के बारे में जब आकलन किया, तो पाया कि बहुत सारे बच्चे आजकल अपनी रुचि के मुताबिक काम कर रहे हैं और नाम कमा रहे हैं। जिन बच्चों ने लीक से हटकर अपनी रुचि के मुताबिक काम किया और उनके माँ-बाप ने उनको प्रोत्साहित किया, आज वह भारत ही नहीं पूरे विश्व में अपने काबिलियत का डंका बजवा चुके हैं। दुनिया में बहुत सारे लोग हैं जिन्होंने छोटी उम्र में बड़ा काम एवं नाम किया है। मेरा मानना है कि हमें बच्चों को उनकी रुचि के मुताबिक आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और उचित मौका देना चाहिए।

अध्याय-26

लोगों की नहीं, अपने मन की सुनें

एक बार रेगिस्तान में रैकी (पूर्व सर्वेक्षण) के दौरान हमारी जीप खराब हो गई। पता करने पर पता चला कि नजदीक में एक फार्म हाउस है, जहाँ हर चीज का बंदोबस्त है। वहाँ पहुँचकर जीप को ठीक करवाते हुए हमने देखा कि वहाँ हर सुख-सुविधा की व्यवस्था थी। पूछने पर एक आदमी बोला कि मालिक ने भावनाओं में बहकर गलती कर दी है, जो माँ-बाप के लिए अच्छी-भली विदेशी नौकरी छोड़कर यहाँ रेत में पड़ा है। इतने में मालिक आ गया, तो बात करने पर उसने बताया कि वह अमेरिका में नौकरी करते हुए अच्छी सुख-सुविधा के साथ जिंदगी जी रहा था। एक दिन फोन पर माँ से बात करने से पता चला कि पापा की तबीयत ठीक नहीं, उनका इलाज करवाना बहुत जरूरी है। तब वह भारत आकर मम्मी-पापा को अपने साथ अमेरिका ले गया और अच्छे हॉस्पिटल में उनका इलाज करवाया। उसने माँ-बाप के लिए कोई कमी नहीं रखी थी, पर माँ-बाप को वहाँ रहना पसंद नहीं आ रहा था।

बेगाने व अनजाने शहर में लाख सुख-सुविधा के बावजूद उनका दम घुट रहा था। पापा से बात हुई, तो पता चला कि गाँव वालों ने धीरे-धीरे उनके खेतों में एनक्रोचमेंट करते हुए बाड़ आगे कर दी है। इसपर उसने पापा से पूछा कि उनको वे रोकते क्यों नहीं। उसने अपने पापा को सलाह दी कि वे गाँव वालों से कहें वे बाड़ अपनी जमीन तक ही रखें। तब उसके पापा ने तपाक से जवाब दिया कि वे किसके लिए उनकी बाड़ ठीक करवाएँ! उनका बेटा तो वहाँ पर सात समंदर पार अपने बच्चों और पत्नी साथ अच्छी जिंदगी जी रहा है और बताया कि सब कहते थे कि उनका बेटा अब वापस गाँव कभी नहीं आएगा। उन्होंने कहा कि वैसे भी वह पिछले 20 साल से, जब से वह विदेश आया था, उसका रहन-सहन और व्यवहार बदल गया था, उससे उन्हें भी लगता था कि अब उनका बेटा गाँव वापस कभी नहीं जाएगा। इसलिए अगर वे गाँव वालों से लड़ाई करें, तो किसके लिए। उन्हें शक था कि उनके अंतिम संस्कार में भी उनका बेटा समय से पहुँच पाएगा या नहीं और अगर वे गाँव वालों से लड़ते रहेंगे, तो उनका अंतिम संस्कार भी कोई नहीं करेगा। रही बात जमीन की, तो उन्हें लगता था कि आज नहीं तो कल, वह जमीन उनका बेटा तो बेच ही देगा। उन्होंने रुआँसा होकर कहा कि बेटे को पढ़ाते वक्त सोचा था कि वह पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनेगा, उनके परिवार के साथ-साथ अपनी पढ़ाई से पूरे गाँव को भी फायदा करेगा और आने वाली पीढ़ी को सभालेगा, पर गाँव तो दूर आज उनके बेटे कि लिए तो अब अपने पुरखों की धरोहर सँभालना तक मुश्किल हो रहा है।

उसने बताया कि पिता की बात उसे अंदर तक झकझोर गई। उसने उनसे कहा कि वे ऐसा क्यों सोच रहे हैं कि वह गाँव नहीं जाएगा! वहाँ उसका बचपन बीता है, बाप-दादाओं की जमीन-जायदाद है, तो वह दूसरों को क्यों देगा! तो उसके पापा ने मुस्कुराते हुए कहा कि 'बेटा, हमने दुनिया देखी है, कोई भी बड़ा अधिकारी जो ऐसी अच्छी जिंदगी शहर या विदेश में जी रहा हो, मां-बाप और बुजुर्गों की जमीन के लिए ऐशो-आराम छोड़कर गाँव में नहीं आता'। उसके बाद जब वह सोने के लिए अपने कमरे में पहुँचा, तो उसकी पत्नी बच्चों को कुछ समझा रही थी। पूछने पर उसने बताया कि आपके बेटे आज अपने दोस्तों को कह रहे थे कि ज्यादा शोर मत मचाना, हमारे घर मेहमान आए हैं... तो मैं इनको बता रही हूँ कि वह मेहमान नहीं आपके दादा-दादी हैं और हमारे परिवार का हिस्सा हैं। इसपर उनका बेटा बोला कि चाहे वह कोई भी हों, अगर वह हमारे साथ नहीं रहते और कुछ

दिन के लिए हमारे पास आए हैं तो वह हमारे मेहमान हैं और जब भी हम कभी एकाध बार उनके घर गए हैं तो आपने हमेशा कहा है कि हम दादीघर जा रहे हैं। ऐसा कभी नहीं कहा कि हम अपने घर जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इन दो वाक्यों ने उन्हें अंदर से बदल दिया और वे सब छोड़ वापस आ गया। अब माँ-बाप के साथ रहते हैं। पुरखों की धरोहर सँभाल रहे हैं और मिट्टी का कर्ज उतारने के लिए गाँव के बच्चों का करियर चुनने में मार्गदर्शन करते हैं। लोग उनके फैसले को गलत कहते हैं पर वे हमेशा वो करते हैं, जो उनका मन कहता है।

मैं उसकी बातों से बहुत प्रभावित हुआ। कुछ साल पहले मेरे साथ बिल्कुल ऐसा ही वाकया हुआ, जब मेरे बेटे ने मेरे माँ-बाप को मेहमान कहा और पापा ने डायनिंग टेबल पर वही सब बातें कहीं। तब मेरी नौकरी बीस साल थी और मेरी पोस्टिंग श्रीनगर आ रखी थी। मैंने तीन साल श्रीनगर का टेन्योर समाप्त किया। अब मेरी सीनयोरिटी, सर्विस एवं रैंक के मुताबिक मेरे लिए फौज का मुश्किल समय समाप्त हो गया था और अभी सर्विस ऐशो-आराम से गुजरनी थी पर माँ-बाप की बात का ध्यान रखते हुए मैं प्रीमैच्योर रिटायरमेंट लेकर घर आ गया और अब माँ-बाप के साथ रहता हूँ। पुरखों की धरोहर सँभाल रहा हूँ और मिट्टी का कर्ज उतारने के लिए एक संस्था 'निनाद - नई ईच्छा, नई आशा, एक दिशा' के जरिए गाँव के बच्चों को करियर चुनने में मार्गदर्शन करता हूँ। लोग यह कहकर कि अगर मैं नौकरी करता, तो जनरल बनता, इस फैसले को मेरी गलती, भूल या न जाने क्या-क्या कहते हैं, पर मैं वो करता हूँ जो मेरा मन कहता है।

अध्याय-27

बुजुर्ग माँ-बाप की अनकही बातों को समझें

एक बार राजस्थान के पोखरण में ट्रेनिंग की व्यस्त दिनचर्या से समय निकाल कुछ फौजियों सहित भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्थित तनोट माता के मंदिर में जाना हुआ। 1971 के युद्ध में पाकिस्तान की तरफ से फायर किए गए गोले, जो मंदिर परिसर में गिरे थे, वह ब्लास्ट नहीं हुए थे और उन्हें अब भी मंदिर में श्रद्धालुओं को देखने के लिए रखा गया है। बहुचर्चित हिंदी फिल्म 'बॉर्डर' में भी इस मंदिर की चर्चा है। हम सब सैनिकों ने मंदिर पहुँचकर पूजा-अर्चना करने के बाद वहीं पर ही दोपहर का भोजन करना शुरु किया। इसी दौरान एक बुजुर्ग आदमी राजस्थानी वेशभूषा में मेरे पास आया और बोला – "साहब! साथ वाले बरामदे में हमारा पंचायत चल रहा है जिसमें शहर के कुछ व्यापारी हमसे बात करने के लिए आए हैं। आप फौजी अफसर हैं,

आप पर हम विश्वास रखते हैं, तो कृपा करके आप शहरी लोगों की बातें समझने में हमारी मदद करें"। ये सुनकर मैं उनके साथ वहाँ पहुँच गया। वहाँ करीब 100 लोग थे जिनमें बूढ़े-जवान, औरत-मर्द, सभी ट्रेडिशनल पहनावे में नीचे बैठे थे और कुछ लोग सूट-पैंट में थे जिन्हें देखने से ही बाहरी होने का अंदाजा लग रहा था। बात शुरु होने पर पता चला कि बाहरी लोग मंदिर के साथ वाले ग्राम वासियों की जमीन को ऊँचे भाव में खरीदना चाहते थे और वहाँ पर कोई व्यवसाय करना चाहते थे। जमीन का भाव सुनकर सारी नौजवान पीढ़ी जमीन बेचने को तैयार हो गई थी पर गाँव का सरपंच उनसे सहमत नहीं था। वह बार-बार बुजुर्ग दंपतियों से कह रहा था कि वे अपने बच्चों को समझाएँ कि इस जमीन को न बेचें, इस जगह पर हम मंदिर में आने-जाने वाले श्रद्धालुओं को फूल तथा पूजा आदि का सामान तथा कुछ खाने-पीने की चीजें बेचकर अपना गुजारा कर लेते हैं। मंदिर के पास होने के कारण इस जमीन में सिंचाई वगैरह की सुविधा भी थी, बाकी सारी दूर की जमीन पूरी रेतीली थी जिसमें सिर्फ कीकर की झाड़ियाँ थीं। आज मिले पैसे कुछ दिनों में खत्म हो जाएँगे, फिर वे इन बाहरी व्यापारियों के नौकर बनकर काम करते रहेंगे।

नौजवान लोग सरपंच से कह रहे थे कि उनके माता-पिता को जमीन बेचने के उनके निर्णय से कोई आपत्ति नहीं थी। वे जबरदस्ती इनसे कुछ बुलवाना चाहते थे पर वह कुछ भी नहीं बोल रहे थे। इसपर सरपंच ने कहा – "बेटा! ये सब चुप रह कर भी बहुत कुछ कह रहे हैं। हमें जरूरत है इन बुजुर्गों की अनकही बात को समझने की। जिस तरह से छोटा बच्चा अपने माँ-बाप के सामने अगर चुपचाप भी खड़ा रहे, तो भी उसके माँ-बाप उसके मन में चल रही अनकही बातों को समझकर उसका समर्थन करते हैं, तो बच्चे विश्वास के साथ उस चीज को कहते हैं, उसी तरह जब बच्चे जवान और माँ-बाप बूढ़े हो जाते हैं तो उनके आत्मविश्वास में भी कमी आ जाती है, वे बहुत सारी बातें कहने के लिए विश्वास नहीं जुटा पाते। ऐसे में जरूरत होती है कि बच्चे अपने माँ-बाप की अनकही बातों को समझें और अगर उन बातों को समझकर उनका समर्थन करें, तो बुजुर्ग माता-पिता भी पूरे विश्वास के साथ अपना पक्ष रखेंगे"। मैंने यह सब ध्यान से सुना और फिर एक बुजुर्ग के पास जाकर उनसे पूछा कि क्या वे जमीन बेचना चाहते थे। बुजुर्ग हाथ जोड़कर तिरछी नजर से अपने बेटे की तरफ देखते हुए बोले – "साहब! हमने तो जिंदगी जी ली है, अभी इनकी जो मर्जी है वह करें"।

उसकी आँखों में जब मैंने उनकी अनकही बातें पढ़ने की कोशिश की, तो मुझे दिखा कि वे जमीन नहीं बेचना चाहते। मैंने व्यापारियों से उनके बिजनेस के बारे में जानकारी ली और उनको अपने तरीके से समझाकर बताया कि यह बॉर्डर एरिया है और सुरक्षा कारणों से उनको फौज से अनुमति नहीं मिलेगी। भलाई इसमें है कि वे यह जमीन न खरीदें। सुरक्षा का मुद्दा बीच में आने से उन्होंने जमीन लेने से मना कर दिया। इससे जवान लड़के तो मुझसे नाराज हो गए पर जितने भी बुजुर्ग लोग थे, वे मेरे पास आए और आँखों में आँसू भरकर हाथ जोड़कर बोले – "साहब! आपने जो आज हम पर उपकार किया है, उसको हम कभी नहीं भूलेंगे"। उनकी ये बातें सुनकर मुझे लगा कि जिस तरह से माँ- बाप हमारे बचपन में हमारी अनकही बातों को समझकर हमें वह सब दिलाते थे, जो हम कहना चाहते थे और हमारा विश्वास बढ़ाते थे, वही माता-पिता जब बुजुर्ग हो जाते हैं, तो हमें भी उनकी अनकही बातों को समझकर उनका समर्थन करते हुए उनका विश्वास बढ़ाना चाहिए। यही हमारी संस्कृति है और यही हमारा संस्कार, जिसे हमें नई पीढ़ी को समझाने की आवश्यकता है।

अध्याय-28

बच्चों की प्रतिभा को पहचानकर निखारें

करीब पंद्रह साल पहले सेना के एक अभ्यास-सत्र के दौरान हम पंजाब में मौजूद थे। क्षेत्र में अच्छी फसल, हर तरफ ट्यूबवेल्स, सड़कों का जाल, बिजली के तार तथा बड़ी-बड़ी बिल्डिंग होने से अंदाजा लगाया जा सकता था कि क्षेत्र राजस्थान के रेतीले धोरो (पहाड़) की तरह खाली नहीं बल्कि काफी विकसित था और इस एरिया में टैंक मूवमेंट इतनी आसानी से नहीं हो पाएगी। इसलिए, अभ्यास के दौरान टैंक द्वारा लड़ाई के मुताबिक की जाने वाली कार्रवाई के लिए पहले क्षेत्र को अच्छी तरह देख-सुनकर पहचानने का काम किया जाने लगा ताकि जब टैंक मूवमेंट की जाए, तो किसी भी तरह की निजी या सरकारी संपत्ति का नुकसान न हो। इसी अभियान के दौरान सड़क किनारे एक ढाबा, जो हमारे बेस कैंप के नजदीक था, उसमें एक दिन चाय पीने बैठे। वहाँ पर चाय पीते वक्त मैंने देखा कि एक छोटा बच्चा जो करीब 9-10 साल की उम्र का होगा, वहाँ जूठे कप-प्लेट उठा रहा था। ये

देखकर मैंने दुकानदार को उस बच्चे से काम करवाने के लिए मना किया। तब दुकानदार ने बताया कि ये इसी गाँव का लड़का है, गरीब घर से है, उसकी माँ यहाँ चाय और चपाती बनाने के साथ जूठे बर्तन साफ करती है। ये लड़का भी स्कूल के बाद यहाँ आ जाता था और थोड़ा बहुत काम करता रहता था। मैंने उस लड़के को पास बुलाया और पूछा कि वह स्कूल के बाद घर बैठ पढ़ाई करने के बजाए यहाँ क्यों आ जाता है। तब उसने बताया कि उसे संगीत का शौक है और यहाँ ढाबे पर सारा दिन गाने बजते रहते हैं जिसे सुनकर वह खुद भी गाने की कोशिश करता है। दुकानदार ने कहा कि यह बड़ा अच्छा गाता है और उसको गाने को कहा। तब उस लड़के ने गाना इतने अच्छे तरीके से गाया कि उसकी आवाज एवं संगीत के ज्ञान से ऐसे लग रहा था कि वह किसी बड़े संगीत घराने से गाने की शिक्षा ले रहा हो। पर हैरानी ये थी कि उसने गाना ढाबे पर बज रहे गीतों को सुनकर ही सीखा था। अगले कुछ दिन उसकी दिनचर्या पर नजर रखने के बाद मैंने उसको अपने कैंप में बुलाया और उसके लिए एक रेडियो तथा एक टेप रिकॉर्डर खरीद कर दिया और उसे बताया कि आइंदा स्कूल से छुट्टी के बाद अपने घर पर पढ़ाई करे व बचे समय में रेडियो से गाने सुने और अपने गाने टेप रिकॉर्डर में रिकॉर्ड कर गलतियाँ सुधारे।

मैंने गाँव के सरपंच तथा कुछ सेवानिवृत्त सैनिकों से इस बारे में बात की, तो उन्होंने उसकी मदद करने तथा गुरुद्वारा साहिब में संगीत-यंत्रों की शिक्षा देने का वादा किया। कुछ दिन पहले नेशनल टीवी पर संगीत के प्रोग्राम में पंजाब के एक गरीब घर के लड़के को इतना अच्छा करते देख मुझे पंद्रह साल पहले ढाबे पर मिले बच्चे की याद आई और उसके बारे में जानने के लिए उस गाँव में गया। वहाँ ढाबे से बड़ा होटल एवं समय के साथ हुई तरक्की से हर कुछ बदल चुका था। वहाँ जाकर अपनी पहचान बताकर उस लड़के के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि वह लड़का बहुत बड़ा सिंगर बन चुका है, सप्ताह के चार दिन शो करता है और लाखों में कमाता है। उनलोगों ने मुझे उसकी माँ से मिलवाया। वह औरत जो आज से करीब 15 साल पहले मुझे ढाबे में बर्तन साफ करते हुए मिली थी, आज एक अच्छी हवेली में रहने लगी थी। मुझे देखते ही उसने मुझे पहचान लिया और नम आँखों से बताया कि साहब आप ने उस वक्त मेरे बेटे पर भरोसा जताकर उसका आत्मविश्वास बढ़ाया था, आपके उस व्यवहार ने हमारी जिंदगी बदल दी। गाँव में तो हम पहले से ही रहते थे पर आपके कहने के बाद गाँव वालों ने उसकी बहुत

मदद की और प्रोत्साहित किया। आज वाहेगुरु की कृपा से हम अच्छी और कामयाब जिंदगी जी रहे हैं।

उनसे मिलकर मुझे यह पता चल गया कि नेशनल टी.वी में आने वाला सिंगर वह लड़का नहीं है, पर इस चीज पर भी विश्वास हो गया कि जिस लड़के की प्रतिभा का एहसास मुझे 15 साल पहले हुआ था, वह भी आज एक अच्छी जिंदगी जी रहा है और पंजाब का एक कामयाब गायक बन चुका है। इससे मैं हर माँ-बाप को एक मैसेज देना चाहता हूँ कि अगर आप अपने बच्चे में उसके बाल्यकाल के दौरान किसी विशेष चीज के प्रति अद्भुत रुचि देखें, जिसके साथ वह उठते-बैठते-सोते हर वक्त जीना चाहता हो, उसकी उस रुचि अनुसार प्रतिभा को पहचानकर निखारने में उसका सहयोग करें।

अध्याय-29

बच्चों से उनका बचपन न छीनें

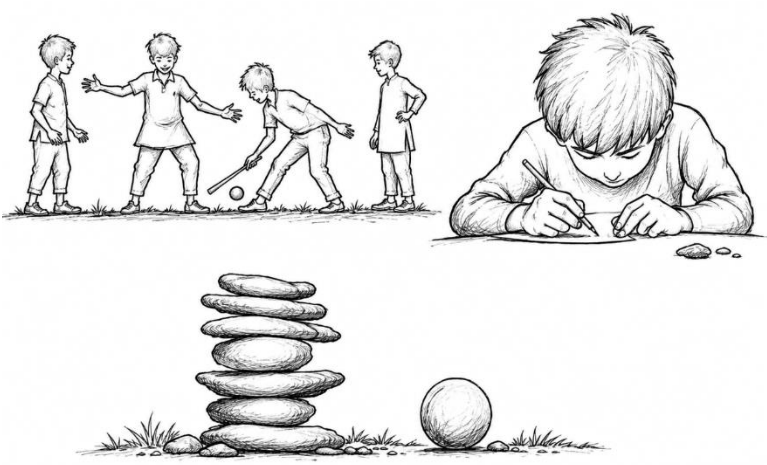

फरवरी-मार्च के महीने से उत्तर भारत में गर्मी के आगाज के अलावा जो दूसरी महत्त्वपूर्ण बात होती है, वह है बच्चों की परीक्षा। हर माँ-बाप चाहते हैं कि उनका बच्चा इन दो महीनों में अच्छी मेहनत कर अच्छे परिणाम के साथ अगली कक्षा में जाए। सेना में भी इन्हीं दो महीनों में ज्यादातर सैनिकों को वार्षिक चिकित्सा जाँच करवानी जरूरी होता है। कुछ वर्ष पूर्व इसी तरह की चिकित्सा जाँच के लिए मैं सैनिक अस्पताल पहुँचा। खून जाँच के बाद मैं प्रतीक्षालय में बैठा अगली जाँच के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहा था कि एक जवान दंपत्ति मेरे पास आया। फौजी शिष्टाचार छोड़ हाथ जोड़कर मेरे सामने खड़े होकर बोला – "साहब! हमारी मदद कीजिए, अब आप ही हमें बचा सकते हैं। लैब असिस्टेंट ने हमें बताया है कि आपका ब्लड-ग्रुप हमारे बच्चे से मिलता है। उसको खून की तत्काल जरूरत है और अस्पताल में उस ग्रुप का खून नहीं है। आप हमारे लिए भगवान का रूप बनकर आए हैं, कृपया करके एक यूनिट खून देकर हमारे बच्चे की जान बचा लें"। मैंने

यह सुनकर उनका ढाँढ़स बंधाया और पूरी जानकारी लेकर उनके बच्चे को खून दान किया। बाद में मसले की जानकारी जुटाने पर पता चला कि उनका सत्रह साल का लड़का जो कैंटोनमेंट के केंद्रीय विद्यालय में ही बाहरवीं के पेपर दे रहा था और पढ़ने में भी काफी अच्छा था, पेपर ठीक न होने की वजह से इतना ज्यादा दुखी हो गया कि घर की बालकनी से उसने छलाँग लगा दी। एक पेपर ठीक न होने मात्र से उस बच्चे ने अपनी जिंदगी समाप्त करने का निर्णय ले लिया।

इस वाकये ने मुझे अंदर से झकझोर दिया। विषय पर गहन अध्ययन कर कुछ बुद्धिजीवी लोगों, अध्यापकों व अभिभावकों से बात कर मैंने पाया कि आजकल के माता-पिता शिक्षा-व्यवस्था को समझने में गलती कर रहे हैं। विदेशों से मात्र ढाई साल के बच्चे को विद्यालय भेजने की प्रथा तो हम भारत में ले आए, पर यह समझ ही नहीं पाए कि विदेशों में सिंगल पेरेंट्स एवं एकल परिवार की प्रथा है जहाँ पर बच्चे को घर में देखने वाला कोई न होने की वजह से उसे ढाई वर्ष की उम्र में खेलकूद के लिए विद्यालय भेज दिया जाता है। वहाँ उसे खाना-पीना और खेलना ही सिखाया जाता है, पर भारत में ज़्यादातर लोग विद्यालय का मतलब सिर्फ़ किताबी शिक्षा ही समझते हैं। यहाँ तक कि प्ले-स्कूल के नाम से खोले गए संस्थान भी पढ़ाई करवाने लग गए हैं। उसको हमने 'नर्सरी', 'केजी' और न जाने क्या-क्या नाम देकर 2 साल के बच्चे को किताबों में इस तरह से व्यस्त कर दिया कि उसका बचपन छिन लिया। दूसरा, विदेशों में हर कक्षा के पाठ्यक्रम को चित्र और ज्यादा उदाहरणों के साथ समझाने के लिए हर विषय की दो से तीन किताबें होती हैं और उनको वहीं पर स्कूलों में अलमारी या डेस्क में रखते हैं, पर भारत में 8-9 साल के बच्चे 30 से 35 कॉपी और किताबें रोज अपने बैग में डालकर भारी बोझ उठाकर स्कूल जाते हैं। यह सब देख मुझे यह लगता है कि जिस उम्र में बच्चे को खेलना-कूदना और अपने शारीरिक विकास के लिए स्वतंत्र सोच की आवश्यकता होती है, उसमें हम बच्चे को सिर्फ और सिर्फ किताबी पढ़ाई में झोंक रहे हैं। यही कारण है कि खेलने के लिए भी कोचिंग की आवश्यकता हो रही है।

हम बच्चों को इस तरह से परवरिश दे रहे हैं कि वे बिना किसी गाइडेंस के कोई निर्णय खुद ले ही नहीं सकते। उनको यह लगता है कि अगर हमारे किसी एक विषय में नंबर नहीं आए, तो उनका सबकुछ खत्म हो गया। अगर

किसी अच्छे इंजीनियरिंग या मेडिकल कॉलेज में सेलेक्शन नहीं हुई तो जिंदगी समाप्त हो गई। बताना जरूरी है कि जिंदगी बहुत बड़ी है। मात्र एक पेपर या परीक्षा से सफलता या असफलता का फैसला नहीं किया जा सकता। मुझे लगता है कि हमारी सरकार, अध्यापकों, अभिभावकों व समाज के बुद्धिजीवियों को शिक्षा के प्रति विकसित हो रही धारणा को बदलने की आवश्यकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि किताबी पढ़ाई, शिक्षा और सफलता के लिए बहुत जरूरी है पर यह भी सच है कि बिना किताबी ज्ञान के भी इंसान शिक्षित और सफल हो सकता है। इसलिए बच्चों पर पढ़ाई का ज्यादा दबाव न बनाकर बचपन जीने की आजादी देनी चाहिए।

अध्याय-30

बच्चों की कमियों को स्वीकार करें मां-बाप

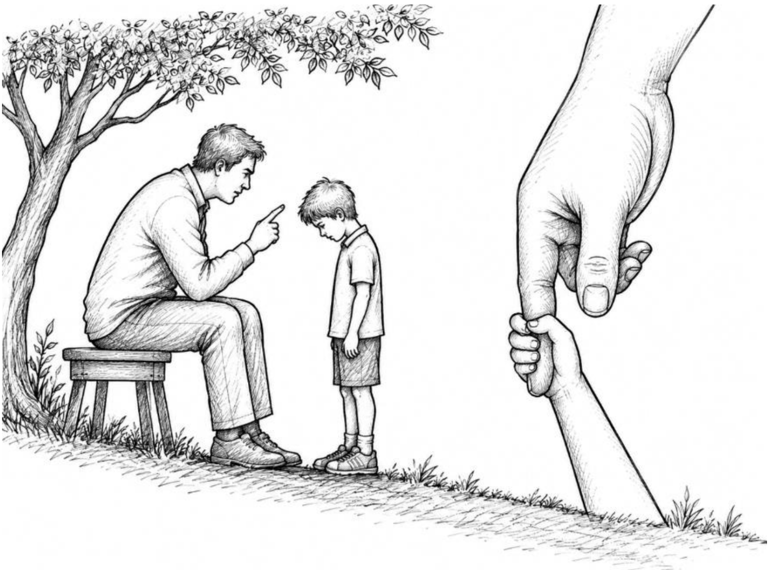

सेना का रहन-सहन जिंदगी जीने का तरीका है, जिसमें शारीरिक व्यायाम और खेलकूद भी बाकी कामों के अलावा दिनचर्या का एक जरूरी हिस्सा होते हैं। कंटोनमेंट में हर शाम खेलकूद का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी सैनिक अपनी इच्छा अनुसार मिलजुल कर कोई-न-कोई खेल खेलते हैं या शारीरिक व्यायाम करते हैं। इस समय यूनिट के अधिकारी, सूबेदार और सैनिक जो अपने परिवार के साथ कंटोनमेंट में रह रहे हैं उनके बच्चे भी उस समय खेलने के लिए मैदान में आ जाते हैं और इच्छा अनुसार अपनी मर्जी का खेल खेलते हैं। मुझे अच्छी तरह याद है कि हमारे एक कर्नल साहब

का लड़का, जो करीब 12 या 13 वर्ष की उम्र का था, अक्सर अपने पापा के साथ खेलने के लिए आता था। उसके पापा कर्नल साहब शारीरिक रूप से फिट और हर खेल में इतने अच्छे थे कि कंटोनमेंट में सभी उनकी फिटनेस और खेल की योग्यता के दीवाने थे और उसी हिसाब से लोग उनके बेटे से भी अच्छा खिलाड़ी होने की उम्मीद रखते थे। उनका लड़का जो लंबा और काफी हष्ट- पुष्ट दिखता था, खेल के मैदान में हम सब उस बच्चे को इसके विपरीत पाते थे। वह लड़का दिल से प्रैक्टिस और मेहनत करने के बावजूद भी अच्छी तरह खेल नहीं पाता था। खेलने की कोशिश करने के बावजूद भी उसमें वह चीज नहीं आती थी जिसकी सब लोग उससे अपेक्षा करते थे। इस सब से उसके पापा निराश होकर उससे नाराज होते और डाँटते थे। एक दिन शाम को उनके घर में एक पार्टी के दौरान जब हम उनके बगीचे में बैठे बातें कर रहे थे, तो कर्नल साहब ने थोड़ा निराश होकर अपने बेटे के बारे में बताया कि कैसे वह उसको सुबह 4:00 बजे उठाकर दौड़ाते हैं, स्कूल से आने के बाद जल्दी से होमवर्क करवाकर उसको खेलने ले जाते हैं, शाम को गिटार और संगीत की क्लास में भेजते हैं, पर इतनी सब सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के बावजूद भी न वह पढ़ाई में अच्छा है, न ही अच्छा खेल पाता है और न ही संगीत सीख पा रहा है। इसके साथ वाले बच्चे इतनी ज्यादा सुविधाएँ न होने के बावजूद भी इससे कहीं बेहतर खेलते हैं और बाकी चीजों में भी अच्छे हैं।

कर्नल साहब ने निराश होकर कहा कि मुझे तो शर्म आती है कि यह मेरा लड़का है। वह लड़का भी वहीं बैठा था, जो अपने आप में शर्म महसूस करते हुए उठकर अंदर चला गया। तब उसकी माँ ने कहा कि क्यों आप बेवजह बार-बार उसको उसकी कमियों के बारे में कोसते रहते हैं। वह अपनी तरफ से पूरी कोशिश करता है। आप कृपा करके यह क्यों नहीं मान लेते कि वह आपकी तरह सर्वगुण संपन्न नहीं है। आप उसे उसके हाल पर छोड़ दो, वह चाहे पढ़ाई, खेल- कूद और संगीत में अच्छा नहीं है पर वह बड़ा आज्ञाकारी है और हर काम को मेहनत से करता है।

कुछ दिन पूर्व यूनिट की एक रियूनियन में मेरी मुलाकात कर्नल साहब और उनके परिवार से दुबारा हुई। कर्नल साहब रिटायर होने के बाद क़रीब 70 साल की उम्र में भी बिल्कुल फिट और तंदुरुस्त दिख रहे थे। उनका बेटा भी उनके साथ था। पूछने पर पता चला कि वह आजकल शहर में रेस्टोरेंट्स

चला रहा है, उसके नाम की एक फूड चेन रजिस्टर्ड है और उस नाम से उसकी खाने की श्रृंखला देश के मुख्य शहरों में फैली हुई है। उसके इस हुनर के बारे में बात करने पर पता चला कि कुछ वर्ष पूर्व कर्नल साहब की पोस्टिंग ऐसी जगह हो गई थी जहाँ पर परिवार साथ नहीं रह सकता था। तब मेम साहब अपने बच्चे के साथ अलग रहने लगीं। वहाँ पर उन्होंने सहायक लेने से मना कर दिया और घर का सारा काम दोनों माँ-बेटे खुद करने लगे। इसी दौरान स्कूल के बाद बेटे ने माँ के साथ रसोई में हाथ बँटाना शुरु किया। धीरे-धीरे वह इसमें इतना ज्यादा सक्षम हो गया कि बारहवीं के बाद बेटे ने आगे की पढ़ाई होटल मैनेजमेंट और फूड प्रेपरेशन लाइन में ही की। पढ़ाई के बाद थोड़े दिन एक होटल में कुक का काम किया और बाद में अपनी रेसिपी तैयार कर उसे अपने नाम से पेटेंट करवा लिया। बाद में अपना खुद का एक रेस्टोरेंट खोला और कुछ ही वर्षों में उसकी श्रृंखला बनाकर अपने हुनर और काबिलियत से देश के प्रमुख शहरों में पहुँचा दिया। आज देश के जाने-माने रसोइयों में इसका नाम है। उनकी इन सब बातों से मुझे समझ आया कि हमें अपने बच्चों में जो कमियाँ हैं, उनको स्वीकार कर उनपर जबरदस्ती दबाव नहीं बनाना चाहिए। हम बच्चों पर अपने विचार थोपने के बजाय अगर उन्हें खुद सोचने का मौका देंगे, तो शायद वह कहीं ज्यादा अच्छा कर पाएँगे।